सायंकाल

१. पं० जिनेश्वरदासजी पृष्ठ ३०
२. पं० हंसराजजी ,, ३०
३. पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार (निबंध) ,, ३३
४. सभापति बा. कीर्तिप्रसादजी ,, ३३

तृतीय दिवस, २१-४-'२६,

सभापति—राय बहादुर साहू जुगमंदरदासजी

मध्यान्ह

मंगलाचरण पं० मुन्नालाल जैन विशारद पृष्ठ ३६
१. पं० प्रभाचंद्रजी न्यायतीर्थ ,, ३६
२. पं० जगन्नाथप्रसादजी ,, ३६
३. पं० मानीरामजी ,, ३९
४. पं० उपेन्द्रनाथ शास्त्री ,, ४०
५. पं० रामचंद्रजी आर्य पुरोहित ,, ४१
६. मौलाना सर्फराज़ हुसैन साहब क़ारी ,, ४२
७. पं० बाबूरामजी ,, ४३

रात्रि

१. श्री [illegible]चंद्रजी वसु ,, ४६
२. उत्कल भारती डाक्टर कुंतलकुमारी ,, ४७
३. बैरिस्टर श्री० चम्पतरायजी ,, ४८
४. प्रो० श्री० चतुरसेन शास्त्री ,, ५१
५. सभापति का भाषण ,, ५४

ॐ

वीर जयन्ती उत्सव संवत् २४५५

और

जैन मित्र मण्डल देहली के वार्षिकाधिवेशन का व्याख्यानों सहित विवरण।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी जैन मित्र मण्डल देहली ने अन्तिम तीर्थेश्वर श्री महावीर स्वामी का २५२७ वां जन्म-महोत्सव और मण्डल का १४ वां वार्षिक अधिवेशन परेड के मैदान में एक विशाल मण्डप के भीतर बड़े समारोह के साथ मनाया। जैन अजैन साधारण जनता, आगंतुकों और विद्वानो की उपस्थिति बहुत अच्छी रही, तीन दिन दिनरात अहिंसामय धर्म के उपदेशों और भगवान महावीर के आदर्श जीवन चरित्र पर आत्मिक आनन्द की वर्षा होती रही।

प्रथम दिवस।

१९-४-२९ को श्रीमान् विद्यावारिधि जैन दर्शन दिवाकर श्री० चम्पतराय जी बैरिस्टर देहली के अधिपतित्व में दिन के १२ बजे कार्यवाही का आरम्भ हुवा, पानीपत निवासी ला० अर्हद्दास के भजन हुए और ब्रह्मचारी जयन्तीप्रसादजी ने मंगलाचरण किया। इन दोनों महानुभावों ने भगवान महावीर के प्रशंसनीय सद्गुणों का स्मरण करते हुये विविध युक्तियों से सिद्ध किया कि वीर जयन्ती उत्सव मनाना मनुष्य मात्र का कर्तव्य और परमावश्यक धर्म कार्य है। तत्पश्चात् धर्मरत्न ब्र० पं० दीपचन्द्रजी वर्णी का महत्वपूर्ण व्याख्यान हुआ। संक्षिप्त निम्न प्रकार है।

बड़े हर्ष का समय है कि आज हम सब भगवान महावीर की जयन्ती मनाने को एकत्रित हुये हैं, जिनको मोक्ष गये २४५५ वर्ष बीत गये। यह जयन्ती उत्सव हमारे लिये धर्म और पुण्यकार्य है।

यदि हम अपने कर्तव्य को कुछ समय से भूल गये थे तो इस से महान् कार्य का गौरव नष्ट नहीं हो सकता। जब हमको धर्मरक्षा और सिद्धान्त प्रचार का ध्यान आया तो इस उत्सव को दश पंद्रह वर्ष से फिर मनाना आरम्भ कर दिया।

जिस महात्मा ने हमारे कष्ट निवारण के लिये जन्म लिया, और जगत् उपकार के लिये स्वयं जीवन भर कष्ट उठाये उनकी स्मृति को हृदयों में जागृत करना हमारा ऋण है, हमारा कर्तव्य है कि उनके चरित्र को आदर्श रूप सन्मुख रख कर अपना जीवन सुधार करें। जैसे प्रभु अपनी आत्मा को कर्ममल से पवित्र करके मोक्ष को प्राप्त हुये, इसी प्रकार आदर्श बनकर और उपदेश देकर संसारी जीवों का भी उद्धार किया, जब उनसे संसारी जीवों की पापात्मक क्रियायें न देखी गई तो अपने राजसी सुखों को त्याग कर दुर्द्धर तप के द्वारा आत्मिक शक्तियों का विकास किया। उस भारतवर्ष में जहां रक्त की धारा बहती थी और जीवित पशुओं के धूम से आकाश आच्छादित होरहा था, प्रभु के अहिंसामय धर्मोपदेश ने सुख और शान्ति की वायु फैलाई। भगवान पार्श्वनाथ से पीछे और वीर प्रभु से पूर्व २५० वर्ष के अन्तराल में अनेक मत उत्पन्न होगये थे मनुष्यों में तो मनुष्यत्व ही नहीं रहा था. आध्यात्मिक शक्तियों का तो कहना ही क्या।

मैं अपनी प्रारम्भिक अवस्था में जब उपदेश दिया करता था तो उसका जनता पर कोई विशेष प्रभाव नहीं होता था। मेरे कल्याणकारी उपदेश को भी लोग सारहीन समझते थे, एक दिन महावीर पुराण की स्वाध्याय करते मुझे बोध हुआ कि जो मनुष्य दूसरे का सुधार करना चाहता है उसे पहिले अपना सुधार करना आवश्यक है। मैं अपने स्वयं अनुभव से कहता हूँ कि यदि आप को धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता है तो व्यक्तियों की भक्ति नहीं, परन्तु जैन शास्त्रों का मनन कीजिये।

इसके बाद आपने त्यागियों के प्रति अपने अश्रद्धापूर्ण और शिक्षापूर्ण बिचार प्रगट किये। उनकी वर्तमान अवस्था बिल्कुल शोचनीय है। उन्हें धर्म की चिंता तो रहती नहीं सदा अपने सम्मान और अपने शरीर की चिंता रहती है। ऐसी हालत में उनसे धर्म की प्रभावना और धर्म की उन्नति की आशा कहां से की जा सक्ती है श्री वर्णी जी ने समाज के व्यक्तियों से चाहा कि वे इस प्रकार के केवल वेष धारी त्यागियों की पूजा से सावधान हों। उन पंडितों की ओर से भी जो ऐसे त्यागी साधुओं को और धर्म के नाम को आगे रखकर मन माना करने की कोशिश करते हैं जनता को चेतावनी दी।

अंतमें आपने कहा कि यदि उनका स्वेच्छित सम्मान नहीं हो तो वह वीर जयन्ती जैसे महानोत्सव को भी धर्मविरुद्ध कहने में नहीं चूकते। इन पंडितों की हृदय भूमि ऐसी ऊसर है जहां अमृत वर्षा से भी बीज अंकुरित नहीं हो सकता, आशा है कि गृहस्थ पंडित और त्यागी जैन धर्म रक्षा का भाव चित्तांकित करते हुए भविष्य में कोई ऐसा आचरण न करेंगे जिससे लोग उन पर और उनके धर्म पर उंगली उठा सकें।

इसके बाद पं० बृजवासीलाल (मेरठ) का निम्न व्याख्यान हुआ।

यह नियम है कि संसार में कोई कार्य बिना कारण के नहीं होता। फिर हम सब लोग यहां धन और समय खर्च करके आये हैं इसका क्या कारण है, यही कहेंगे कि भगवान महावीर का जन्मोत्सव मनाने के लिये, क्यों ? ताकि हमारे जीवन में उन्नति की ओर परिवर्तन होजाय। इसका अर्थ यह है कि यदि कुछ परिवर्तन नहीं हुआ तो कार्य निरर्थक है। इसलिये हम सब का कर्तव्य यह होना चाहिये कि हम सब इस अधिवेशन को सफल बनावें। महावीर प्रभु का जन्म किस के लिये हुआ, और उन्होंने क्या

किया ? संसार में जितने महा पुरुष होते हैं, वह किसी विशेष जाति या संघ के लिये नहीं होते किन्तु समस्त संसार के लिये हुआ करते हैं। भगवान महावीर ने भी इस लोक में अवतरित होकर संसार भर में इस आदर्श शिक्षा का प्रचार किया कि समस्त प्राणियों के प्रति प्रेम भाव प्रकट करो।

जिस समय भगवान का जन्म हुवा था उस समय मांसभक्षण सुरा पान, व्यभिचार आदि धर्म का अंग बन गये थे और इनसे विरक्तता नरकवास का कारण समझी जाती थी। अर्थात् लोग पाप क्रियाओं को धर्म और धर्म कार्यों को पाप समझते थे। आज कल के स्वार्थी पंडितों ने भी ऐसी ही समस्या उपस्थित करदी है। वह आन्दोलन कर रहे हैं कि वीर जयन्ती का उत्सव मनाना पाप है। क्यों नहीं ! जिनका जीवन उद्देश्य केवल पेट भरना और मान प्राप्त करना हो उनके विचार में और कोई शुभ कार्य पुण्यरूप कैसे हो सकता है।

यह तो कठिन है कि संसार के डुबोने वाले इन पण्डितों का अनुशासन करने के लिए महावीर जैसी कोई समर्थ्य शक्ति इस संसार में आये परन्तु यह संभव है कि उन्हीं के स्मरण और गुणानुवाद से मार्ग भ्रष्ट जीवों के कुछ हृदय शुद्ध होजांय और हम सब लोगों के आचार विचार धर्मानुकूल परिणत हो सकें। इसी अभिप्राय से भगवान का यह जन्मोत्सव मनाया जा रहा है, जो नितांत सारगर्भित और अर्थपरायण है। कोई वैद्य चिकित्सा करना तो जानता है परन्तु रोगी का दुख दूर करना नहीं चाहता उसकी वैद्यक विज्ञानता किस काम की ! इसी प्रकार धर्म के ठेकेदार पण्डित जो सिद्धांत के मर्मज्ञ कहे जाते हैं समाज को दुःखित अवस्था में ही देखना चाहते हैं, उसका आत्मोद्धार करना नहीं चाहते। फिर ऐसे क्षुद्र व्यक्तियों को समाज में परिगणित करने से क्या लाभ ? धर्म का लक्षण कर्मों का नष्ट करने वाला, आत्मसुख

देने वाला और संसार में शांति फैलाने वाला है। ऐसे ही उच्च धर्मका भगवान् महावीर ने उपदेश दिया था, जिससे समस्त संसारी जीवों को लौकिक और पारलौकिक सुख की प्राप्ति हुई। मिथ्यात्व में पड़े हुए हम अपने अनित्य सुखों को ही सुख समझ रहे हैं इसलिये आत्म सुख का यत्न नहीं करते जबतक कोई रोगी अपने रोग का स्वयं अनुभव नहीं करता, वैद्य औषधि तथा उपचार की परवाह नहीं करता।

बन्धुओ! सांसारिक जितने सुख हैं सभी विनाशीक हैं और उन सब का परिणाम दुःखरूप है, इसलिये यह सुख सुख नहीं। सुख कोई और ही वस्तु है जो बिना आत्मज्ञान के प्राप्त नहीं होती। कोई अनुभवी विज्ञानी हम पर दया करके हमें अपने मोह ग्रस्त जीवन को परिवर्तित होने की शिक्षा देते हैं तो हमें उनकी बातें सुनकर अचम्भा होता है, हमको अपनी अवस्था बदलने में भय लगता है, क्योंकि हमको अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान नहीं है हमने अपने शरीर को ही निजत्व समझ रक्खा है, और इसी के सुख दुख को अपने हर्ष विषाद का कारण मान रहे हैं। यही दासत्व है, कि हम इन्द्रियों के गुलाम बने हुये निजत्व को भूल बैठे हैं। यदि हम आत्म गुणों का चिन्तन करने लगें तो कर्म बन्धन से छूट जांय। कर्म बन्धनों के नष्ट होने पर ही अविनाशी सुख प्राप्त होता है। कषाय भावों के बढ़ने से आत्मा कर्म बन्धन में वेष्टित होती है। शरीर आत्मा से पृथक है इनके गुणभी भिन्न हैं इसलिये शारीरिक संस्कारोंमें आत्मज्ञानकी लब्धि नहीं होसकती। मैं यह नहीं कहता हूं कि हर कोई सन्यास धारण करले परन्तु यह अवश्य कहूंगा कि प्रत्येक प्राणी को निज स्वरूप अवश्य जान लेना चाहिये। इसके बिना शरीर से निजत्व का भाव दूर न होगा। भगवान महावीर का जन्मोत्सव मनाने का अभिप्राय यही है कि हम उनके जीवन को आदर्शरूप सामने रख कर उसका अनुसरण

करें। जिन लोगों का यह मत है कि जैनधर्म अव्यवहार्य है मैं समझता हूं कि वह शायद जैन धर्म की वर्णमाला से भी परिचित नहीं। इस धर्म का अहिंसाव्रत इतना सुगम है कि इसे हर कोई पाल सकता है। गृहस्थों को केवल संकल्पी हिंसा का त्याग करना आवश्यक है आरंभी, उद्यमी और विरोधी हिंसा का न तो कोई गृहस्थ पूर्ण परित्याग कर सकता है न उसके लिये इस तीन प्रकार की हिंसा के त्याग का उपदेश दिया गया है।

जैन धर्म स्वतन्त्रता का पाठ सिखाता है और कहता है कि कर्म पटल से आत्मा को रहित करके स्वयं परमात्मा हो जाओ। परन्तु दूसरे धर्म पारलौकिक दृष्टि से आत्मा की उन्नति ईश्वर के अनुग्रह पर निर्भर करते हैं और लौकिक अपेक्षा से राजा को ईश्वर का अंश मानते हैं। यही परतंत्रता और दासत्व है।

धर्मानुकूल चरित्र का पालन करना, सरल जीवन बनाना, धार्मिक सिद्धान्त की शिक्षा प्राप्त करना, बनाव शृंगार में समय और धन न खोना यही धर्म परायणता है। बंधुओ! यदि आप भगवान महावीर के नाम को अमर करना चाहते हो तो ऐसी प्रथाओं को बंद करदो जिससे देशका, समाजका और धर्मका पतन होता है।

इसके बाद पं० अर्हद्दासजी का भजन हुआ, और लाला अयोध्याप्रसाद गोयलीय का जैनसमाज के बाह्य क्रिया काण्ड और उसकी वर्तमान परिस्थिति के विषय में व्याख्यान हुवा, ला० देवीसहाय सर्राफ निवासी ने भी जैन धर्म के महत्व पर वक्तृता दी। तत्पश्चात एक भजन होकर सभा समाप्त हुई।

सायंकाल फिर कार्यआरंभ हुवा, वाणीभूषण पं० तुलसीरामजी बड़ौत निवासी ने मंगलाचरण किया और अर्थरूप व्याख्यान दिया कि—आस्तिक संसारमें यह बात छिपी नहीं है कि जो लोग ईश्वरवादी हैं, तथा परलोक की सत्ता को स्वीकार करते हैं वह छोटे से छोटे कार्य में भी प्रारंभ में अपने इष्ट देव का स्मरण किया करते हैं,

दार्शनिक दृष्टि से आस्तिक धर्म के रखने वाले हम जैनी भी अपने अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म महोत्सव की निर्विघ्न समाप्ति के लिये अपने इष्ट देव को प्रथम प्रणाम करते हैं और यह आकांक्षा करते हैं कि यह महान् कार्य निरापद सम्पन्न होजाय। जिन भगवान महावीर के उपलक्ष में यह जयन्ती मनाई जा रही है उनका चैत्र शुक्ल त्रियोदशी को उसी भांति उद्भव हुवा था जैसे पूर्व दिशा से सूर्य का प्रकाश होता है। उनके जन्म से पूर्व मृत लोक में आकर देवों ने रत्न वर्षा की थी और जन्म होने पर अनेक प्रकार उत्सव किया था। उस अतीत काल की स्मृति में हम लोग भी यदि उनका गुण गान करें तो अत्युक्ति नहीं है। जिन भगवान की यह जयन्ती मनाई जारही है उनके उदय काल से पूर्व भारत का वायु मण्डल दूसरी ओर वह रहा था। मूक पशुओं का होम वेदी पर बलिदान किया जाता था, मांस खाने को साधारणतः उचित ही नहीं किन्तु धार्मिक कार्य समझते थे और उच्च कोटि के आचार्यों के नाम से श्लोकों का उद्धरण देकर भारतवासियों को इस अधम वृति की ओर आकर्पित किया जाता था, बलि दिये हुये पशुओं के रक्त की नदियां बह निकलती थी, मेघ दूत काव्य में लिखा है कि एक राजा ने इतने पशुओं की धर्म वेदी पर बलि चढाई थी कि मृतक पशुओं की खाल से चूकर जो रक्त बहा उससे चर्मवती नदी वह निकली जो आज कल चम्बल कहलाती है। यह वह समय था कि जब ऐसी २ घृणित क्रियायें भी धर्म का अंग समझी जाती थी। भवभूति ने उत्तर राम चरित्र ग्रन्थ में लिखा है कि यदि कोई महमान किसी के घर आये तो उसे थोड़ासा कलेवा देना चाहिये, जिस में मांस भी जरूर हो। उसके लिये यदि संभव हो तो बैल को मार दो, नहीं तो बछिया का मांस तो उसे अवश्य खिलाना चाहिये। ऐसे दुर्व्यसनात्मक समय में भगवान महावीर ने अहिंसा का छत्र स्थापित किया और भारत वासियों को प्रेम भरी

आवाज़ से पुकारा कि आओ इस छत्र की छाया में तुम्हारे संदिग्ध हृदयों को शांति प्राप्त होगी। महात्मा तिलक ने भी एक समय अपने व्याख्यान में उदार हृदय से स्वीकार किया था कि समस्त साहित्यों पर जैन धर्म की अहिंसा की छाप बनी हुई है; भगवान महावीर का सबके लिये खुला हुवा उपदेश था कि जिस प्रकार तुमको इस संसार में जीवित रहने का अधिकार है वैसे ही दूसरे प्राणियों को भी है। उस समय का इतिहास इसका साक्षी है कि जब भगवान महावीर ने अहिंसा धर्म का डंका बजाया तो हवन मंदिरों की ईंट २ नष्ट होगई, इस लिये जिस महात्मा ने संसार के प्राणियों के साथ ऐसा उपकार किया उसकी जयंती जैनियों को ही नहीं बल्कि समस्त संसार को मनानी चाहिये। हर्ष है कि मित्र मंडल देहली ने कई वर्षों से अपने कृतज्ञता के भावों को प्रकट करने के अभिप्राय से इस कर्तव्य का पालन करना फिर से प्रारंभ कर दिया है और उसकी देखा देखी कितने ही शहरों, कस्बों और ग्रामों में वीर जयंती उत्सव ऐसे समारोह और उत्साह से मनाया जाने लगा है जैसे हमारे वैष्णव भाई राम नवमी, और कृष्णाष्टमी मनाते हैं।

समाज के उत्तरदायी सज्जनों ने मण्डल के कार्यकर्त्ताओं के उत्साह को नहीं बढ़ाया परन्तु उनके लिये यह खेद करनेका स्थान नहीं है। वह समय निकट आरहा है कि इस वीरजयन्ती उत्सवको भी दीपमालिका की भांति धार्मिक त्यौहार समझ कर समस्त संसार के लोग मनाया करेंगे, और मित्र मण्डल आदर्श रूप से उनके सन्मुख उपस्थित होगा।

तदनन्तर मैं भगवान महावीर से मंगल रूप प्रार्थना करता हूं कि यह महान कार्य निर्विघ्न समाप्त हो।

पुनः जैन प्रदीप के सम्पादक देवबन्द निवासी ला० ज्योतिप्रसाद जी का निम्न रूप व्याख्यान हुआ :—

भारतवर्ष में यह नियम रहा है कि जिन महान् पुरुषों ने भारत वासियों के साथ भलाई की या इनकी आत्माओं का कल्याण किया इन्होंने उनका जन्म जन्मान्तर उपकार माना है। इसका जीवित उदाहरण स्वरूप मर्यादापुरुषोत्तम राम कर्मयोगी कृष्ण तथा अहिंसा प्रचारक महावीर का जनता, रामनौमी, कृष्णाष्टमी तथा वीरजयन्ती मनाकर आजतक आभार मानती है। भगवान महावीर के समय तक हिंसा का कितना प्रचार थां और कुकृतियों में पड़कर भारतवासी कैसे अधोगत हो रहे थे यह किसी से छिपा नहीं। ऐसे दुस्समय में भगवान् महावीर ने जन्म लेकर जीवोंका कल्याण किया और उनको आत्मोन्नति का सच्चा मार्ग बताया। इस उपकृति से जिनके मस्तिष्क आभारी होकर नम्रीभूत होगये वह अपने सिरों को ऊँचा करने के लिये आज वीर प्रभु की जयंती मना रहे हैं। जो इसका विरोध करते हैं वह कृतघ्नी हैं और दूसरों को भी अपनी तरह कर्त्तव्य पालन से भ्रष्ट करते हैं। प्रश्न होता है कि महावीर स्वामी कौन थे, किस समय हुये, उनकी क्या शिक्षा थी, और उनका निज पर के लिये क्या उद्देश्य था ? संक्षेप मात्र यही कहा जाता है कि वह जैनियों के अंतिम धर्म-तीर्थंकर थे, उस समय भारत वसुंधरा को अपने पद कमलों से शोभित किया जब यहां का जल वायु हिंसात्मक था, उसको २५०० वर्ष से अधिक हुये। स्वयं अपने लिये उनका उद्देश्य आत्मोन्नति का था अतः उन्होंने मोक्ष प्राप्त कर लिया। पूर्वान्तर में उनका जीवात्मा सिंह के शरीर में था। उस सिंह ने एक मुनि पर आक्रमण किया, परन्तु मुनिकी योगवृति और शांत मुद्रा से प्रभावित होकर स्वयं शांत होगया। तत्पश्चात् शनैः २ उन्नति करते हुये अंत में तीर्थंकर होकर मोक्षावस्था को प्राप्त होगया। उन्हीं भगवान महावीर का शांतिदायक अहिंसामय धर्म मंदिरों के भीतर ही सीमित रहने या शास्त्र रूप में अल्मारियों में ही बंद रहने की चीज नहीं है, वीर के उपासकों को देखना

चाहिये कि आज भी वही हिंसा काल उपस्थित है पेटों का गड्ढा भरने के लिये आज भी सहस्रों पशु काटे जाते हैं, एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को नहीं किन्तु एक भाई दूसरे भाई को हानि और पीड़ा पहुंचाने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। और अहिंसा धर्म के ठेकेदार अपने धर्म का कुछ प्रचार नहीं करते। यदि किसी नगर निवासी के पास बन्दूक का लैसंस जानमाल की रक्षा के लिये है परन्तु नगर में जब उसके पड़ोसी के डाका पड़ता है तो वह बंदूक लेकर उसकी रक्षा के लिये नहीं आता, मैजिस्ट्रेट उसका लैसंस छीन लेता है और कहता है कि जब तुम इससे किसी की रक्षा नहीं करते तो तुम्हारे पास बन्दूक रहनेसे क्या लाभ। इसी प्रकार भगवान महावीर का प्रतिपादित धर्म संसारी दुःखित जीवों को शान्ति देने तथा रक्षा करने वाला है, जिसका लैसंसदार जैनी कहलाने वाला एक जनसमुदाय बना हुवा है, यदि वह इस समय पर जबकि प्राण रक्षा की परम आवश्यकता है अपने धर्म रूपी हथियार को काम में नहीं लावे तो फिर वह समुदाय इसका लैसंस रखने के योग्य किस तरह है?

यदि अहिंसा धर्म को हम लोग उदारता और सचाई के साथ जन साधारण के समक्ष वास्तविक रूप में रख देते तो संभव नहीं था कि इस पवित्र और अनेकांत सिद्धान्त पर कायरताका लांछन लगाने का किसी का साहस होता।

हम लोग नित्य प्रति मन्दिरों में जाकर देव पूजन करते हैं और अंत में शांति पाठ पढ़ते हैं और विनय करते हैं कि भगवन्! मुझे भी आप अपने सदृश बनालीजिये। यदि हमारी यह सची भावना है तो जिस तरह स्वयं भगवान ने सिंह के जीव से धीरे २ उन्नति की हमको भी करनी चाहिये। प्राथमिक कक्षा का कोई विद्यार्थी यदि प्रोफेसर होनेकी इच्छा रखता है तो धन्य है, परन्तु उसका कर्तव्य भी यह होना चाहिये कि प्रतिवर्ष एक कक्षा पास करताजाये

यहां तक कि एम० ए० पास हो जाय । फिर प्रोफेसर बन सकता है । यदि वह सारी उमर उसी कक्षा में जिसमें अब है फ़ेल होता रहे तो प्रोफेसर बननेकी उसकी भावना ही निस्सार होगी । हम आदर्श जीवन की मूर्ति के नित्य दर्शन करते हैं और भावना भी रखते हैं कि उन्नति करें परन्तु मरण पर्यंत इसी कक्षा में रहते हैं आगे को तनिक भी नहीं बढ़ते । समझ में नहीं आता कि फिर हमारी इस भावना में क्या सार है कि हम भी जिनेश्वर समतुल्य होजावें । हमारा यह मनोरथ कदापि सफल नहीं हो सकता ।

यदि हमें महावीर भगवान के शासन का अनुवर्तन करना अभिप्रेत है तो विषय वासना और कषाय भावों का परित्याग कर के आत्मोन्नति करनी चाहिये ।

तद्पश्चात् पं० हंसराजजी शास्त्री का पाण्डित्यपूर्ण व्याख्यान हुआ जिसमें उन्होंने कहा कि इस संसार में मतभेद तो सदा से रहा है और सदा ही रहेगा यह कहना कि अमुक धर्म प्राचीन है उसकी समीचीनता का द्योतक नहीं है । यह मानना पड़ेगा कि मूल एक धर्म ही होगा । फिर बहुत से होगये सिद्धान्तकारों में मतभेद रहा इससे पारस्परिक विरोध नहीं हुवा, वरन किसी सिद्धान्त के साथ कोई साम्प्रदायिक अवयव जोड़ देने से विरोध उत्पन्न हुवा । जैनी जैनधर्मको शांतिदायक बतलाते हैं, उपनिषदों के अनुसार धर्म समस्त संसार की प्रतिष्ठा है परन्तु धर्म के एक २ अंग को ही लोग सम्पूर्ण धर्म मान बैठे जिससे एकान्त मत फैल गये । आत्मिक धर्म जो संसार भर के लिये कल्याणकारी था, उसके साथ सिक्ख, सनातन, ईसाई, मुसलमान आदि शब्द लगा दिये गये जिससे आपस में साम्प्रदायिकता बढ़ गई । इस असमञ्जस में जैनी अपने शास्त्रों को लेकर अलग बैठे रहे । दूसरे लोगों से अपने धर्म के वास्तविक स्वरूप को छिपाने लगे, यह उनकी बुद्धि-मत्ता न थी । इनको सोचना चाहिये था कि दुराचारिणी स्त्री अपने

गर्भ को छिपाती है परन्तु सदाचारिणी कभी नहीं। जो सोना टकसाली और खरा है उसे कहीं लेजाइये, सांच को आंच नहीं, जैन सिद्धांत की नींव सचाई पर है। इसको कभी बाधा नहीं आ सकती है जैनियों को चाहिये कि इसका जितना हो सके प्रचार करें इससे धर्म का गौरव बढ़ेगा, और संसारी जीवों का कल्याण होगा। जैनधर्मावलम्बियों को जैन जाति कहना भूल है जाति का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं, रागद्वेष के जीत लेने वाले व्यक्ति को कोई शक्ति ऋद्धि सिद्धि प्राप्त करनी शेष नहीं रहती है। उसे जिन कहते हैं, उसी को ब्रह्मा मुरारी परमात्मा बुद्ध विष्णु शिव आदि नामों से भी सम्बोधन करते हैं उसका अनुगामी राम कृष्ण वीर कोई हो वह जैन है। यह किसी व्यक्ति विशेष का धर्म नहीं है, यह कहना नितान्त निस्सार है कि मनुष्यगणना में जैनी घट गये, जिसके भीतर जैनत्व है वही जैनी है, जिसकी आत्मा कलुषित नहीं जिसमें स्वार्थके कीड़े लगे हुए नहीं हैं वह किसी रूप और किसी शरीर में हो किसी जन समूह में परिगणित कीजाये वह जैन ही है। इसी प्रकार आर्य वह है जिसके कर्म श्रेष्ट हों सनातन वह है जिसमें स्वाभाविकता हो, वैदिक धर्म उसे कहते हैं जहां प्र[illegible] साथ की शिक्षा मिले।

पहिले समय में ऐसा मत प्रचलित था कि शरीर [illegible]व नहीं है परलोक कुछ नहीं शरीर ही सुख का साधन है, शा[illegible]की लांछन कोई सत्ता नहीं उसी समय कुछ विद्वानों और बुद्धिम[illegible]ने हैं और मत निर्धारित किया कि पौद्गलिक शरीर से भिन्न कोई [illegible] भी अवश्य है, जो संसार में काम कर रहा है। जैसा [illegible]! मुझे इस ज्ञान का द्योतक है कि मैं शरीर से भिन्न कोई चैतन्य स[illegible]ना इस भांति आस्तिक और नास्तिक का भेद हुवा, कुछ विद्वान कहते थे कि संसार का सब कार्य नियम बद्ध चलता है इसलिए इसका कोई सर्व व्यापक शक्ति न्यामक अवश्य है, दूसरे लोग कहते थे

कि नहीं, जड़ चैतन्य से ही प्रवाह रूप सृष्टि चल रही है, जो कार्य सदा एक ही नियम से चलता है वह अकृत्रिम और स्वाभाविक होता है। किसी का किया हुआ नहीं होता। इससे वह मतभेद हुवा जो वैदिक और जैन सिद्धान्तों में है, फिर इसी तरह पौराणिक और दार्शनिक मतों में विभिन्नता का प्रादुर्भाव हुआ। परन्तु यह सब विचार भेद था। साम्प्रदायिक विरोध नहीं था, पूजा उपासना के विषय में भी काफी मतभेद हुवा, निराकार और साकार दो भेद ईश्वर के माने गये। महाभारत के शांति पर्व के एक ऋषि इस प्रकार ईश्वर का निरूपण करते हैं कि जीवात्मा उसे कहते हैं जिस से प्रकृति के गुण मिले होते हैं। जब वह इन गुणोंसे प्रथक होजाता है तो वही परमात्मा होजाता है अर्थात् जो आत्मा अभी कर्म बन्धन में है वह जीवात्मा है और जो कर्म मल से रहित होजाता है वह परमात्मा है। जैन भी ईश्वर का ऐसा ही स्वरूप मानते हैं। सर्वज्ञ होने के बाद जब वह आत्मा अर्हत अवस्था में है वह साकार परमात्मा कहलाता है और सिद्धावस्था को प्राप्त होकर निराकार परमात्मा होजाता है। वैदिक धर्म भी इस को मानता है कि ईश्वर मूर्ति स्वरूप और अमूर्ति स्वरूप दो प्रकार है। कुछ विद्वानों का मत है कि यदि हृदय में प्रेम और भक्ति का अभाव है तो ईश्वर उपासना की क्रिया ही निरर्थक है। मैं कहता हूं नहीं, क्रिया करते रहना चाहिए इससे आत्मा में धार्मिक कर्तव्य की स्मृति बनी रहती है और भविष्य के लिये आत्मा में शुभ संस्कार उत्पन्न होते रहते हैं। एक जौहरी छह २ महीने बराबर दुकान खोलता है परन्तु एक पैसे का गाहक नहीं आता इस पर निराश होकर दूकान को बन्द नहीं कर देता, बल्कि इसका संस्कार लगाये रहता है और अन्त में एक ग्राहक आजाता है उससे हजारों रुपये का लाभ होजाता है। इसी प्रकार धार्मिक क्रियाओं का संस्कार लगा रहेगा तो आशा रहनी चाहिए कि कभी भावरूप

ग्राहक भी आजाये और कल्याण कर जाय, निरर्थक समझ कर क्रिया रूपी दुकान बन्द कर देवें तो कभी ग्राहक के आने की सम्भावना ही नहीं ।

इसके बाद ब्र० कुँवर दिग्विजयसिंहजी का प्रभावशाली व्याख्यान निम्न रूप हुआ, कि आज से २५२७ वर्ष हुए जब श्री महावीर का जन्म हुआ केवल यही बात नहीं कि उन्होंने अपने समयमें ही संसार का सुधार किया हो बल्कि उन्होंने उस समय जो उपदेश दिये उनसे हम आज भी लाभ उठाते हैं, इस लिये हम उनकी जयन्ती इस हेतु से ही नहीं मनाते कि वह एक सुधारक महा पुरुष थे बल्कि इस वजह से मनाते हैं कि उन्होंने हमारा और संतति का कल्याण किया यह जयन्ती कोई रूढ़ी प्रथा नहीं है, बल्कि भगवान का प्रतिवर्ष यशोगान करना हमारी कृतज्ञता है उनका उपदेश और हित चिंतन किसी विशेष समय या अमुक जन समूह के लिये न था बल्कि समस्त संसार के लिये प्राणियों के लिये था इसलिये उनका गुणानुवाद समस्त संसार को करना चाहिये ।

प्रभु कोई साधारण पुरुष न थे वह परमात्मा थे, जन्म से ही पूज्य व्यक्ति थे इस बात को इन्द्रों ने मृत लोक में आकर भक्ति भाव से जन्म कल्याणक मनाकर और विनीत भावों से उनकी पूजा करके प्रगट कर दिया था, कि भगवान महावीर समस्त संसार के परमात्मा थे, उसकी परीक्षा आज भी हर कोई कर सकता है अन्य परमात्माओं ने धर्म सिद्धांत कुछ खास २ व्यक्तियों के कान में कहे और उन मध्यस्थों के द्वारा संसार में धर्मका प्रचार हुआ, परन्तु महावीर स्वामी ने छिपकर अन्धेरे में जैनियों के कान में ही कोई बात नहीं कही किन्तु सूर्य के प्रकाश में खुले मैदान उनका एक जन समूह के समक्ष धर्मोपदेश होता था । प्रत्येक श्रोता को यह अवसर प्राप्त था कि अपना उनसे शंका समाधान कर सके ।

भगवान के तत्व निर्णयात्मक व्याख्यानों की आज भी जांच की जा सकती है।

वह जैसा सत्य और लाभकारी पहिले था वैसा ही आज सिद्ध होता है। इस बीसवीं शताब्दी में वही धर्म श्रेष्ट माना गया है, जिसका पालन करने से शांति, स्वतन्त्रता और उन्नति प्राप्त हो सके, अतः इस कसोटी पर कसने से भी महावीर प्रणीत धर्म ही टकसाली सोने की भांति ठीक बैठता है। बलवान निर्बलों पर अत्याचार करते हैं तथा विषय कषाय रूप कुत्सित भावों से गुण नष्ट होते हैं इस कारण से अशान्ति होती है।

यदि जैन धर्म के अहिंसात्मक सिद्धांत "तुम जीवो और दूसरों को जीने दो" का भूमण्डल में क्रियात्मक प्रचार होजाय तो इहलोक और परलोक में शांति ही शांति होजाय, कहीं किसी प्रकार का अन्याय नहो। समस्त आत्माओं को निज आत्म समान देखें, मेरे तेरे का भाव जाता रहे, राग द्वेष रूपी भाव नष्ट हो जाय अज्ञानांधकार दूर होजाय और जिन परिणामों से आत्मा को मोहवश आकुलता और अशांति हुआ करती है, वह सब नष्ट होजायें तो प्रत्येक आत्मा स्वयं शांति स्वरूप तथा आनन्द स्वरूप होजाय। यही उपदेश महावीर भगवान का है।

स्वतन्त्रता चाहे लौकिक हो या पारलौकिक दोनों का स्थान जैनधर्म में है, मोक्ष सब प्राणियों की सम्पत्ति है किसी के लिये कोई बाधा नहीं, सब के अधिकार समान हैं। मोह भाव ही सब आत्माओं में दासत्व का कारण बन रहे हैं यदि भगवद् प्रणीत उपदेश के अनुसार मोह कलुषता से आत्मा स्वच्छन्न होजाय तो फिर यह नितान्त स्वतन्त्र है जब भगवान का उपदेश यह है, कि प्रत्येक आत्मा कर्मों से रहित होकर परमात्मपद प्राप्त कर सकती है तो इससे अधिक उन्नति की सीमा भी क्या हो सकती है इससे सिद्ध है कि शान्ति, स्वतन्त्रता और उन्नति की अपेक्षा से जैन

सिद्धांत ही सार्वजनिक आत्मधर्म कहा जा सकता है।

भगवान महावीर से बढ़कर और किसी धर्म ने आज तक आत्मकल्याण का मार्ग नहीं बताया, ऐसे समस्त जगदोपकारी व्यक्ति विशेष का जन्म दिवस मनाना हमारा कर्तव्य है, कुछ विद्वानों का कथन है कि उनकी निर्वाण तिथि मनानी चाहिये। जन्म दिवस नहीं मनाना चाहिये, परन्तु यह उनकी संकीर्ण बुद्धि का फल है जन्म कल्याणक में यह विशेषता है कि अन्तर्मुहूर्त के लिये नारकियों को भी साता मिल जाती है और कल्याणकों के समय नहीं, इसलिये सार्वभौमिक शांति का कारण तीर्थंकर भगवान का जन्म कल्याणक ही होसकता है।

भगवान महावीर ने निर्वाण पद पाकर जगत् का कोई उपकार नहीं किया केवल जन्म लेकर ही धर्म तीर्थ चलाया। संसार के और धर्मावलम्बियों में भी अपने धर्म नेताओं की जयन्ती मनाये जाने का रिवाज है, और यह प्रथा युक्ति संगत प्रतीत होती है, इसलिये भगवान महावीर की जयन्ती मनाना हमारा धर्म है और अवश्य मनानी चाहिये।

प्रभु के गुणगान करते हुए उनके सदृश्य गुण प्राप्त करने का भी उद्योग करें, पारस्परिक रागद्वेष और साम्प्रदायिक झगड़े मिटा कर शांति महारानी का साम्राज्य स्थापित करें तब ही समझा जायगा कि महावीर जयन्ती मनानी सफल हुई, आशा है कि उपस्थित सज्जन मेरे शब्दों से कुछ शिक्षा ग्रहण करके भगवान के उपदेशों को अपने जीवन का उद्देश्य बनायेंगे और उसके प्रचार का भरसक प्रयत्न करेंगे।

इसके बाद लाला दौलतराम बजाज देहली के १२ वर्षीय सुपुत्र अभयकुमार ने हारमोनियम पर दो भजन गाये, और उनका भाव ऐसी योग्यता से वर्णन किया कि उस पर मुग्ध होकर सभापति महोदय ने उन्हें मेडिल दिये जाने की योजना की, तत्पश्चात

योग्यवर सभापतिजी ने अपना महत्वपूर्ण भाषण दिया और १२ वजे रात्रि को मनोहर भजनों के साथ सभा विसर्जन हुई।

द्वितीय दिवस।

२०-४-२९ को १२ वजे दिन के श्वेताम्बर समाज के मुख्य नेता और श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल के अधिष्टाता श्री० ब्रा० कीर्तिप्रसादजी बी०ए० एल०एल० बी० (रिटायर्ड) वकील की अध्यक्षता में पं० अर्हद्दासजी के भजन और पं० दीपचन्दजी वर्णी के मंगलाचरण के साथ कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

ब्र० कु० दिग्विजयसिंहजी ने निम्न व्याख्यान दिया।

संसार में जितने धर्म प्रचलित हैं वह किसी न किसी देवता अवतार, रसूल आदि के नाम से जाने जाते हैं परन्तु जैन धर्म किसी व्यक्ति विशेष के नाम से प्रसिद्ध नहीं है, जो कोई भी अपने आत्मिक शत्रुओं को जीत लेता है वह जिन कहलाता है, और उस जिन प्रणीत धर्म मार्ग को जैन धर्म कहते हैं।

प्रत्येक मनुष्य अपने शत्रुओं पर विजयी होना चाहता है परन्तु सदा के लिये विजय प्राप्त नहीं कर सकता। सिकन्दर, दारा, निपोलियन आदि बड़े २ प्रतापी राजा हुये, जिन्होंने पूर्ण विजयी होने के लिये वड़े २ प्रयत्न किये परन्तु अन्त परिणाम किसी का सुखमय नहीं हुवा, और न किसी की मनोकामना ही पूर्ण हुई जिससे मालूम होता है कि जिन्हें वह विजय करना चाहते थे वह वास्तव में उनके शत्रु न थे और जो उनके शत्रु थे उनके जीतने की ओर उनका ध्यान भी नहीं गया।

जब मनुष्य जन्म लेता है उसका कोई शत्रु नहीं होता, वह वड़ा होकर अपने राग द्वेष भावों से स्वयं अपने शत्रु उत्पन्न कर लेता है। इस कहावत के अनुसार कि "चोर को मारने से क्या लाभ चोर की मा को मारना चाहिये जिससे फिर चोर पैदा न हो"

राग द्वेप भावों के जीतने वाले को जिन कहते हैं, राग द्वेप भावों पर विजय प्राप्त करना ही सफल मनोरथ होने का कारण है। इस धर्मके पालन करने से निज आत्मा की शुद्धि और उससे शांति प्राप्त होती है इसलिये जिनधर्म को निज धर्म भी कह सकते हैं। यदि निजत्व शरीर में है तो इस अपेक्षा से ठीक है कि वह हमारे आत्मा के रहने का स्थान है परन्तु शारीरिक गुण आत्मिक गुण से नितान्त भिन्न है इस हेतु से शरीर में निजत्व का समावेश नहीं हो सकता।

भगवान महावीर ने "वस्तु स्वभावः धर्मः" धर्म का लक्षण कहा है इसके अनुसार जैसे अग्नि का स्वभाव उष्णता है वैसे ही आत्मा का स्वभाव ज्ञान है। रागद्वेप भावों के प्रभाव से आत्म-ज्ञान मिथ्यात्व में परिणत होजाता है और शरीर में जिसका ज्ञान गुण नहीं है मिथ्यात्वके कारण निजत्व का भाव ग्रहण करलेता है। अविनिश्वर शांति का बाधक है यदि कोई आत्मिक सुख प्राप्त करना चाहे तो उसे राग द्वेप भावोंका परित्याग करना होगा।

सर्व धर्मों में क्रोध मान माया लोभ के त्याग करने की शिक्षा दीगई है जिससे प्रत्यक्ष ज्ञात होता है कि कपाय भावों को कोई भी अच्छा नहीं समझता, वह आत्मा के विकार जो आत्म गुणों के विकास में बाधा डालते हैं इसलिये जितना २ हम इनसे दूर होते जांयगे उतने २ सुख शांति के पास आते जांयगे। इन वीत-राग भावों के उत्पन्न करने के लिये हमको ऐसे आदर्श की आव-श्यकता है जो राग द्वेप से रहित और शांतिमय हो, यदि हमको वीतरागता की शिक्षा प्राप्त करनी है तो ऐसे शख्स की खोज करनी चाहिये जो स्वयं वीतराग हो।

सांसारिक शिक्षा का भी यही नियम है; कि राजनीति का विद्यार्थी व्यायाम शाला में और योग साधन का इच्छुक पाठशाला में शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता, जैनियों के मन्दिरों में जो मूर्तियां

विराजमान हैं वह इस बात की द्योतक हैं कि जिन महान पुरुषों की यह प्रतिबिम्ब हैं वह वीतरागता के आदर्श बनकर सीमातीत आत्मशांति प्राप्त कर चुके हैं ।

भगवान महावीर का यही उपदेश है कि वीतरागता से ही प्रत्येक आत्मा का कल्याण हो सकता है । जिनदेव के अतिरिक्त सम्पूर्ण वीतरागता और कहीं दिखाई नहीं पड़ती जैनधर्म के गुरु वीतराग मार्ग पर चलते हैं । और उनके शास्त्रों में भी आद्योपांत वीतरागता ही भरी हुई मिलती है सभी धर्म वीतरागता का राग गाते हैं परन्तु उसका जैसा आदर्श और महत्व जैन धर्म में है वैसा दूसरी जगह नहीं मिलता । इसलिये जैनधर्म ही वह धर्म है जिससे हमको पूर्ण शान्ति प्राप्त हो सकती है, जिस धर्म से हमारी आत्मा का कल्याण हो वही हमारा धर्म है इसलिये इस संसार में जिन धर्म ही प्रत्येक आत्मा के लिये निज धर्म है ।

इसके बाद दयासागर पं० बाबूरामजी बजाज आगरा निवासी का निम्न प्रकार व्याख्यान हुआ ।

पिछले समय के इतिहासों को पढ़कर जब हम इस विषय पर विचार करते हैं कि विभिन्न जातियों और धर्मों का कैसे उत्थान और पतन हुआ तो सहज में ज्ञात होजाता है कि जब किसी जाति या धर्म के आचार विचार में मिथ्या रूढ़ियां घुस कर उनके रूपको विकृत और उनके गौरव को नष्ट कर देती हैं तो उनका पतन होने लगता है । और जब उस जाति या धर्म के नेता पतन के कारणोंको अन्वेषण करके उनको त्याग देते हैं तथा उन्नति के सामयक साधनों के सन्मुख होजाते हैं तो उनका उत्थान होजाता है । जो जातियां या किसी धर्म के अनुयायी आंखों पर पट्टी बांध कर निकृष्ट रीति रिवाजों को समयानुकूल नहीं बदलते वह अपने उस धर्म को जिसकी उनके पूर्वजों ने प्राण दे दे कर रक्षा की थी नष्ट कर देते हैं । जाति, देश और धर्म को उन्नतिशील गौरवान्वित

बनाना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है, जब हम जैन जाति और धर्म की ओर दृष्टिपात करते हैं और सोचते हैं कि जैनधर्म का सिद्धांत क्या है ? और हमारी भावनायें तथा हमारे आचार क्या हैं तो इनकी एक दूसरे से प्रतिकूलता ही हमको अपने धर्म और जाति के पतन का कारण निश्चय होजाता है, जैनधर्म में प्राणीमात्र से मैत्री और प्रेमभाव रखने का उपदेश है परन्तु दो भाई कुत्ते बिल्ली की तरह लड़ते दिखाई देते हैं। किसी जैनी भाई के हृदय में जाति और धर्म का प्रेम नहीं रहा, पूजा प्रज्ञाल के झगड़े न्यायालयों तक लेजाने पड़ते हैं तीर्थ यात्राओं पर सिर फोड़े जाते हैं ! हम सब मिल कर निर्पक्षता से समझौता नहीं कर सकते हमारी आत्मायें इतनी बलिष्ट नहीं हैं कि हम राजनीति के अधिकारी बन कर अपने निरपराध शत्रु को पीड़ा न पहुंचावें या अपराधी मित्र को कारागार की व्यवस्था देदें, हम हर समय उचितानुचित रीति से अपने मित्रों से सहानुभूति और शत्रुओं से विरोध भाव रखते हैं हमारे आत्माओं का इतना मलीन और निर्बल होजाना ही हमारी जाति और धर्म दोनों के नाश का कारण है । बाबू और पण्डित शब्दों से घृणा होती है । समाज में द्वेषभाव इतना बढ़ गया है तो फिर धर्म का उत्थान किस प्रकार हो सकता है ।

यह ठीक है कि सामाजिक प्रथाओं के विषय में बाबू और पण्डितों में मतभेद है परन्तु यह द्वेष का कारण नहीं, बड़े ऋषियों ने हजारों वर्ष तपस्या की और तत्व ज्ञान को विचार कर भिन्न भिन्न शास्त्र निर्माण किये जिनके सिद्धान्तों में पूर्व और पश्चिम का सा अन्तर है। एक ऋषि ने दूसरे के मत का खण्डन किया है परन्तु अश्लील शब्दों का प्रयोग नहीं किया बल्कि जो कुछ लिखा है यथार्थ का निर्णय करने की चेष्टा से नम्र भावों से लिखा है । चार्वाक को और ऋषियों ने महर्षि कह कर सम्बोधन किया है आत्मा और परमात्मा की सत्ता को अस्वीकार करनेवाले नास्तिकों

ने आस्तिक ऋषियों का भी अपमान नहीं किया, उनकी वृत्ति हमारी जैसी न थी।

वहिष्कार करने तथा मार पिटाई करने की जैनियों को टेव पड़गई है, परन्तु यह पता नहीं कि इन्होंने यह शिक्षा किस गुरु या शास्त्र से प्राप्त की है, धर्मकार्यों में ऐसी २ बातें उपस्थित करते हैं कि बहुत से साधर्मी भाई अपने धर्म से विमुख होकर अन्य धर्म स्वीकार कर लेते हैं सामाजिक समस्या भी इतनी विपम हो गई है कि प्रतिदिन सैकड़ों जैन स्त्री पुरुप जातिच्युत हो रहे हैं। दल बन्दी तथा ईर्षा भावों की वजह से समाचार पत्रों ने लोगों की वुद्धि इतनी भ्रष्ट करदी है कि उचित अनुचित का ज्ञान ही नहीं रहा।

प्यारे मित्रो! याद रक्खो जब तक हमारे भीतर सहनशीलता और कर्म परायणता न होगी तथा जाति और धर्म की उन्नति का भाव न होगा हम भगवान महावीर के जीवन और उपदेश से कोई लाभ नहीं उठा सकते।

तत्पश्चात् जैन परिपद विजनौर के मन्त्री श्रीमान बा० रतनलालजी B. A. L. L. B., का इस विपय पर सारगर्भित व्याख्यान हुआ कि भगवान महावीर का उपदेश जिस प्रकार ऊंच नीच की अपेक्षा रहित सब प्राणियों के लिये था इसी प्रकार हमको भी इसे सार्वजनिक बनाना चाहिये। और इसके प्रकाशन तथा प्रचार में भरसक प्रयत्न करना चाहिये। पुनः मण्डल पुस्तकालय और कोष के विवरण निम्न प्रकार प्रस्तुत और सर्व सम्मति से पास हुए। तत्पश्चात् सभा विसर्जन हुई।

जैन मित्रमण्डल का वार्षिक विवरण १९२८-२९

सभापति महोदय तथा समस्त बंधुवर्ग!

परम आनन्द का समय है कि आज हम स्त्री पुरुप एकत्रित

होकर अपने उस अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर का २५२७ वां जन्म दिवस मना रहे हैं, जो स्वयं संसार सागर से पार होगए और हमें जन्म मरण से रहित होने का उपाय बतागए। हमारा कर्तव्य है कि प्रतिवर्ष उनका जन्मोत्सव मनाकर उनका गुणानुवाद करें और उनके उपदेश से लाभ उठावें। उनकी शिक्षा का संसार भर में प्रचार करने के उद्देश्य से देहली में १९१५ से जैन मित्र मण्डल नाम की एक संस्था स्थापित है जो छोटे २ ट्रैक्टों के द्वारा धर्म प्रचार करती है जिससें उसे अबतक अच्छी सफलता प्राप्त हुई और भविष्य में भी आप सबकी कृपा रही तो इससे अधिक सफल मनोरथ होने की आशा है।

ट्रैक्ट प्राप्ति के साधन

जैन धर्म प्रचार के उत्सुक विद्वान् प्रायः विभिन्न विषयों पर ट्रैक्ट लिखकर भेजते हैं और ट्रैक्ट कमेटी के प्रस्ताव पर उनको प्रकाशित किया जाता है, इसके अतिरिक्त कुछ वर्षों से मण्डल ने निर्धारित विषयों पर भी ट्रैक्ट लिखाने की योजना की है जिन महानुभाव लेखकों के लेख सर्वोत्तम निश्चय किये जाते हैं उनको मण्डल की ओर से मान पत्र भी भेंट किये जाते हैं, अतः पिछले वर्षों की भांति गतवर्ष भी मण्डलने परमात्मा का वास्तविक स्वरूप, जैन धर्म और जाति विधान, भगवान महावीर और उनका उपदेश तथा अहिंसा धर्म पर कायरता का लांछन इस प्रकार ४ विषय दिये थे जिन पर बहुत से विद्वान लेखकों के लेख प्राप्त हुये, ट्रैक्ट कमेटी और मण्डल की कार्यकारिणी समिति के निश्चयानुसार प्रथम दो विषयों पर ला० भोलानाथ जैन दरख्शां बुलन्दशहर के उर्दू पद्य और तीसरे विषय पर उनका हिन्दी गद्य लेख तथा चतुर्थ विषय पर बा० शिवलाल जैन मुख्तार बुलन्दशहर का उर्दू गद्य लेख सर्वोत्तम निश्चित किया गया इसके अतिरिक्त प्रथम विषय पर मिस्टर नेमीनाथ अगरकर (इला-

हावाद) का अंग्रेजी लेख विशेष रूप से पसन्द किया गया, इन महानुभाव लेखकों को मान पत्र भेंट किये जाने का प्रस्ताव पास किया गया।

इस वर्ष भी अध्यात्म, पंच व्रत, मनुष्य कर्त्तव्य, तथा भगवान महावीर और उनका समय यह चार विषय निर्धारित किये गये जिन पर बहुत से विद्वानों के लेख प्राप्त हुये हैं परन्तु उनका निश्चय अभीतक नहीं हुवा है इसलिये आगामी वर्ष में उनका परिणाम प्रकाशित किया जायगा।

ट्रैक्ट प्रचार } मण्डल ने गतवर्ष के जयन्ती उत्सव तक ५४ ट्रैक्ट प्रकाशित किये जिनका व्यौरा गत वर्ष की रिपोट में विस्तृत रूपेण देदिया गया है, इस वर्ष निम्नांकित १२ ट्रैक्ट प्रकाशित किये गये हैं।

नं० ५५ जयन्ती की रिपोर्ट, नं० ५६ बा० शिवलाल जी का अहिंसा धर्म पर बुज़दिली का इलजाम, नं० ५७ दरखशां साहब का हक़ीक़ते माबूद लेख, नं०५८ उनका हयाते वीर, नं० ५९ उनका बारह भावनाओं का उर्दू अनुवाद सहरे काज़िब, नं० ६० मि०अग्रकर का अंग्रेजी लेख Real Nature of God, नं० ६१ दरखशाँ साहब कृत परमात्मा प्रकाश का उर्दू अनुवाद, नं० ६२ मिस्टर हरिसत्य भट्टाचार्य एम.ए.बी.एल. हावड़ा कृत नेमिनाथ का अनुवाद Lord Arishtanemi, नं०६३ लाला दीवानचन्द मैनेजर पंजाब-कशमीर बैंक ज़ेहलम का उर्दू लेख "जैनधर्म अज़ली है", ६४ बाईस परीषह का दरखशां साहब कृत उर्दू पद्य अनुवाद "आदाबे रियाजत" नं०६५ जैनधर्मभूषण धर्मदिवाकर ब्र०शीतलप्रसादजी द्वारा लिखित मुक्ति और उसका साधन नामक लेख।

इनके अतिरिक्त दरखशां साहब कृत सामायक पाठ का उर्दू पद्यानुवाद "ख़यालाते लतीफ़" पुनः प्रकाशित किया गया जो प्रथम वृत्ति का ट्रैक्ट नं० ४७ है।

गत वर्ष के निश्चित ट्रैक्टों में से दरखशां साहब का जैन धर्म और जाति विधान लेख को हम इस वर्ष कई कारणों से प्रकाशित नहीं करसके जिसकी क्षमा चाहते हैं आगामी वर्ष इसका प्रकाशन अवश्य होजायगा।

स्वयं मुद्रित कराये हुये ट्रैक्टों के अतिरिक्त वि० वा० श्री० चम्पतरायजी बैरिष्टर रचित पुस्तकों का भारत यूरुप और अन्य देशों में प्रचार किया गया, अन्य स्थानों के मंदिरों और पुस्तकालयों की इच्छानुसार यहां से ग्रन्थ भेजकर धर्म प्रचार किया।

प्रचार कार्य का प्रभाव — भारत, यूरुप, अमेरिका आदि देशों में मित्र मंडल के ३००० की संख्या में पत्र व्यवहार से विदित है ट्रैक्ट प्रचार भले प्रकार से होरहा है, प्रोफेसर रामस्वरूप कौसल ने हमारे ट्रैक्टों को मनन करके अपनी पुस्तक पयामे मुहब्बत में २५ पृष्ठों में भगवान महावीर के जीवन चरित्र पर एक प्रभावशाली लेख प्रकाशित किया है, राधा स्वामी मत के आचार्य महर्षि शिवव्रतलाल वर्मन ने भी जैन धर्म की शिक्षा से प्रभावित होकर जैन धर्म नामका एक ट्रैक्ट लिखा जो हाथों हाथ निबट गया और बराबर मांग आरही है, परन्तु मण्डल कोष की कमी के कारण उसे पुनः प्रकाशित नहीं कर सका।

व्याख्यानों द्वारा धर्म प्रचार — जैन धर्म से प्रेम रखने वाले विदेषी विद्वानों का आदर भाव करना, उनके शुभागमन पर उनको प्रत्येक प्रकार से सुगमता पहुंचानी, जैनधर्म पर उनको सम्मति प्रगट करने का अवसर देना, इत्यादि कार्यों को भी मण्डल धर्म प्रचार का अंग समझता है अतः एक जर्मन लेडी डाक्टर चारलेट क्रौज P.H.D. दीक्षित नाम सुभद्रादेवी, जिन्होंने ?॥ वर्षसे जैनधर्म धारण करलिया है और अपने पूज्य पिता के साथ देहली आई, स्टेशन

पर उनका मण्डल ने शुभागमन किया, साता पूर्वक ठैराया, मंदिरों के दर्शन कराये, वर्धमान पुस्तकालय दिखाया, पूजा होते समय मूर्ति पूजा का भाव समझाया, इससे श्रीमतीजी पर अच्छा प्रभाव पड़ा, उन्होंने उदार हृदय से कहा कि मैं ने अब तक श्वेताम्बर ग्रन्थों को पढ़ा है परन्तु अब दिगम्बर सिद्धान्त के शास्त्रोंको अवश्य पढ़ूंगी, मि० चम्पतरायजी और बा० अजितप्रसादजी वकील से बहुत देर तक धार्मिक विषयों पर वार्तालाप करके दिगम्बर सिद्धांत पर श्रीमतीजी ने अपना सन्तोष प्रगट किया।

डा० हैनरी ए० अटकिन्सन साहब प्रधान मन्त्री, सार्वधर्म सम्मेलन (अमेरिका) से देहली आये, सौभाग्य से उस दिन बा० अजितप्रसादजी भी आगए थे। अतः दोनों की दो घंटे तक वार्तालाप होती रही, अन्त में डाक्टर साहब ने जैनधर्म की प्रशंसा की और मि० जगमन्दरलाल जैनी की असमय मृत्यु पर शोक प्रकट किया, अमेरिका में होने वाली कानफरेन्स में बुलाने के लिये वि० वा० श्री० चम्पतरायजी और बा० अजितप्रसाद जी के नाम लिख लिये, हर्ष का स्थल है कि रायजी ने कानफरेन्स में सम्मिलित होने का वचन देदिया है और आशा है कि बैरिस्टर साहब भी अवश्य डाक्टर साहब की इच्छापूर्ति और जैन समाज को अनुग्रहीत करेंगे।

बामनोली और रुड़की के रथोत्सवों में मण्डल के मन्त्री ने सम्मिलित होकर वहां ट्रैक्टों का प्रचार किया और जैन धर्म के महत्व पर व्याख्यान दिये, और सभासद बनाये।

प्रतिनिधित्व-- जिस प्रकार मण्डल अपने वीर जयन्ती महोत्सव पर सार्वधर्म सम्मेलन की संयोजना कई वर्षों से किया करता है इसी प्रकार इस वर्ष गुरुकुल कांगड़ी में आर्यसमाज ने भी सम्मेलन किया जिसमें गुरुकुल के निमन्त्रण पर पं०फूलचन्दजी शास्त्री को जैनधर्मका प्रतिनिधि बनाकर भेजा।

जिन्होंने जैनधर्म की उपयोगिता पर महत्वप्रद और प्रभावशाली वक्तृता दी। भटिंडा सम्मेलन का भी मण्डल को निमन्त्रण मिला परन्तु उसमें प्रतिनिधि भेजने का कारणवश प्रबन्ध न हो सका।

आर्यसमाज देहली के वार्षिकाधिवेशन पर सम्मेलन हुआ जिसके निमन्त्रण पर जैन समाज की ओर से जैनधर्म प्रभाकर ब्र० कु० दिग्विजयसिंहजी पधारे, और इस विषय पर "कि विभिन्न मतों के होते हुए ऐक्य हो सकता है ? यदि नहीं तो क्यों ? एक सारगर्भित और रोचक व्याख्यान दिया। आर्यसमाज रायसीना के वार्षिकोत्सव पर जैन धर्म भूषण ब्र० शीतलप्रसादजी तथा जैन दर्शन दिवाकर श्री० चम्पतरायजी बैरिस्टर सम्मिलित हुये और उन्होंने इस विषय पर कि धर्म श्रोत क्या है प्रभावशाली व्याख्यान दिये।

इतिहास-- } किसी इतिहास का लेखक चाहे कोई भारतीय सज्जन हो या अंग्रेज, जैनधर्म जैनाचार्य और जैन राजाओं का वृत्तान्त लिखने में सभी भूल करते हैं स्वयं तो कोई अन्वेषण करते नहीं पिछली लिखी पुस्तकों के आधार पर ही कुछ का कुछ लिख मारते हैं यही कारण है कि किसी विषय में इतिहास में कभी कोई भूल हो जाती है तो उसका संशोधन कभी नहीं होता। डा० गौड़, डा० ईश्वरीप्रसाद और ला० लाजपतराय आदि से उनकी गलतियों को दूर करने की चेष्टा से मण्डल ने बहुत दिनों पत्र व्यवहार किया। और बड़ी कठिनाई से इन महानुभावों ने संशोधन का वचन भी दिया है। परन्तु यह परिणाम भी संतोषप्रद नहीं, अच्छा होता कि महासभा अपने निश्चय के अनुसार अपना इतिहास संकलित करा कर प्रकाशित कर देती परन्तु उसे और ही बखेड़ों से अवकाश नहीं श्री आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी के अध्यक्ष ला० गोपीचन्द एडवोकेट अम्बाला भी इस महान कार्य में सहयोग देने को उद्यत हैं। हर्ष का स्थल है कि

जो दि० जैन० समाज के एक सुपरिचित विद्वान् और इतिहासा-नुवेषी बा० कामताप्रसादजी ने इच्छित इतिहास का सम्पादन करना स्वीकार कर लिया है।

आक्षेपों का निराकरण-- आर्य चित्रावलि और बलिदान चित्रावलि में पं० तुलसीराम के विषय में कुछ जैनियों पर झूठे आक्षेप किये गये अतः फरीदकोट रियासत की अदालत से उस मुकदमे की नकलें मंगवाई गई और यह निश्चय करके कि महाशयजी के क़तल का जैनियों पर झूठा लांछन लगाया गया था वह बरी होगये। वास्तव में उनका कातिल कोई अन्य धर्मावलम्बी था जिसे सजा होगई दरख्शां साहब से उपरोक्त पुस्तकों के लेखों का मुंहतोड़ उत्तर लिखा कर अखबारों में प्रकाशित किया, और उनके सम्पादक तथा प्रकाशक महाशयों को भी दरख्शां साहब के उत्तर की ओर ध्यान दिलाया जिसका वह कोई प्रत्योत्तर नहीं दे सके आशा पड़ती है कि पुनरावृत्ति में वह लोग संशोधन कर देंगे।

झालावाड़ स्टेट में कुछ जैन मूर्तियों का अपमान किया जाना सुनकर रा० ब० ला० सुलतानसिंहजी के द्वारा महाराजा साहब के दरबार में प्रार्थनापत्र भेजे जिसका सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त हुआ।

स्याद्वाद केसरी पत्र ने वि० वा० श्री० चम्पतराय द्वारा संकलित जैन ला के विषय में झूठे दोषारोपण किये थे जिनका उत्तर भी दरख्शां साहब से लिखाकर प्रकाशित किया।

मेरठ अम्बाला आदि के शास्त्रार्थों के लिये जैन साहित्य और उद्धरण पुस्तकें भेजी गई।

शिक्षाविभाग-- बहुत दिनों से मण्डल विचार कर रहा है कि सरकारी स्कूल और कालिजों में जैन साहित्य की भी कुछ पुस्तकें कोर्स में स्वीकृत हो जावें। अतः देहली विश्व विद्यालय में इसकी कोशिश हो रही है। हर्ष का विषय है

कि महिला विद्यापीठ प्रयाग के कार्यकर्ताओं ने हमारी कुछ पुस्तकों को स्वीकार कर लिया है। जिनका निर्धारण प्रोफेसर घासीरामजी के परामर्श से कर दिया है। जैन कन्या पाठशाला देहली के लिये अध्यापिका बुलाई गई। निर्धन विद्यार्थियों के प्रार्थनापत्र छात्रवृत्ति के लिये प्रायः आते हैं। परन्तु कोप न होने के कारण मण्डल स्वयं तो ऐसी सहायता देने में असमर्थ है परन्तु तो भी दूसरे स्थानों से इसका थोड़ा बहुत प्रबन्ध करा देता है। इस वर्ष एलिचपुर के एक विद्यार्थी को पत्र व्यवहार करके गिरधारीलाल प्यारेलाल एज्युकेशन फण्ड के मन्त्री से आर्थिक सहायता दिलाई। मैट्रिक के इम्तिहान में अपने उद्योग से कई विद्यार्थियों को दाखिल कराया।

लोकमान्यता- Age of consent के विषय में जो सरकारी कमीशन जारी हुआ था उसकी चिट्ठी राय ब० ला० पारसदासजी से मिली जिसके उत्तर में एक विद्वत्ता पूर्ण हेतु सहित विनय पत्र कमेटी को भेजा गया। धर्मादे कमीशन के समक्ष साक्षी देने वाले विद्वानों की नामसूची भेजी। इन्दौर की जैन समाज के पूछने पर मृतक संस्कार की जीवनवार रोकने का प्रस्ताव पास करके भेजा। पावापुरी तीर्थ पर दिगम्बरों और श्वेताम्बरों में जो झगड़ा होरहा है उसके लिये कमीशन जारी हुआ तीर्थक्षेत्र कमेटी की इच्छानुसार उसको जैन मन्दिरों की मूर्तियों पर के लेख नकल करा कर भेजे। और उनके साता और सत्कार का प्रबन्ध किया।

अमेरिका में होने वाली सार्वधर्म सम्मेलन के लिये जैनसमाज के दो प्रतिनिधि भेजने के लिये मण्डल को आमंत्रण दिया गया। Hindu law amendment के विषय में सरकार की कमेटी ने जैनसमाजकी सम्मति मण्डल द्वारा मांगी, मण्डलने कमेटी से आया हुआ पत्र जैन नेताओं और जैन सभाओं के पास भेज दिया है।

मित्रमण्डल की प्रार्थना को देहली सूबा की गवर्नमेंट ने समस्त

जैन समाज की आवाज स्वीकार करके वीर जन्म दिनकी जैनियों के लिये छुट्टी स्वीकार करली है, मण्डल का अभी उद्योग जारी है कि इस महान पर्व की छुट्टी सार्वजनिक करदीं जाय।

इन सब घटनाओं से विदित होता है कि सरकार तथा जन साधारण में मण्डल की क्या मान्यता है। जिस प्रकार इस संस्था को जैन समाज की प्रतिनिधि समझा जाता है मण्डल भी उसी दृष्टि से धार्मिक और सामाजिक कार्यों में भरसक प्रयत्न करता है।

सदस्य संख्या — इस वर्ष सदस्य संख्या में ७० की वृद्धि हुई, हर्षका स्थल है कि एक यूरोपियन विद्वान भी इस संस्था के इस वर्ष मेम्बर हुए हैं और उन्होंने ५ शिलिंग का पोस्टल आर्डर भी सभासद शुल्क के रूप में भेज दिया है।

पुस्तकालय- — धर्म प्रचार के विचार से मण्डल ने इस वर्ष देहली में एक वर्धमान जैन पब्लिक नाम का पुस्तकालय खोला है जिसमें वाचनालय भी है उसका विवरण पृथक रूप से आगे दिया गया है।

धन्यवाद-- — जिन महानुभावों ने हमें धर्मप्रचार कार्य में लेखों द्वारा तथा आर्थिक या शारीरिक सहायता दी है उनके प्रति यह मण्डल हृदय से आभारी है, और आशा है कि वह सज्जन तथा अन्य महाशय भविष्य में भी इस बाल वयस्क संस्था की सर्व प्रकार की सहायता करते रहेंगे।

श्री वर्द्धमान पब्लिक लायब्रेरी के मंत्री ला० जुगलकिशोर की रिपोर्ट का संक्षिप्त व्योरा।

मित्रमण्डल ने जेठ शु० ५ को प्रातःकाल इसकी स्थापना की इसमें वर्तमान पुस्तकों की संख्या ११९२ है अर्थात् जैनधर्म सम्बंधी हिंदी पुस्तकें २८८ उर्दू ५४ अंग्रेजी ७२ अन्य विषयक हिंदी ५८५

उर्दू ११६ और अंग्रेजी ७८ हैं तथा पुराने साप्ताहिक मासिक पत्रों की लगभग ६० प्रतियां हैं। पाठकों को घर पर ले जाकर पढ़ने के लिये पुस्तकें दी जाती हैं जिनकी संख्या ७५० है। बहुत से सज्जनों को देशांतर में भी पुस्तकें भेजी गई हैं।

पुस्तकालय के वाचनालय में ३४ समाचारपत्र बराबर आते हैं जिन में हिंदी के १६ उर्दू के ७ अंगरेजी के ११ हैं। इनमें दैनिक ८ साप्ताहिक ७ पाक्षिक ४ मासिक १४ और चतुर्मासिक १ हैं। सभासदों की संख्या ७८ है जिसमें दो आजन्म सदस्य, ५ विशेष और शेष ७१ साधारण हैं। विद्याप्रेमी बहुत से सज्जनों ने लगभग ४०० उपयोगी पुस्तकें संस्था को दान की हैं। और बहुत से महानुभावों ने अल्मारी आदि फरनीचर भी प्रदान किया है, उन सब दातारों की नाम सूची पुस्तकालय में मौजूद है।

इस पुस्तकालय और वाचनालय में आने और इससे लाभ उठाने वालों की संख्या १२ हजार है इससे हमारे पूज्य वर्ग तथा भ्रातृगण विचार सकते हैं कि इस उपयोगी संस्था से हमारे समाज के युवकों का समय कैसे भविष्य सुधार में लग रहा है और आगे इससे क्या लाभ पहुंचेंगे। आशा है कि हमारे धनाढ्य दानी महानुभाव हमारे विचारों की संरक्षा करेंगे तथा हमारी इस जीवनचर्या को देखकर आनन्द मानेंगे जिससे हम नवयुवकों को प्रोत्साहन हो।

तत्पश्चात् कोषाध्यक्ष ने अपना हिसाब प्रस्तुत किया जिसको आडीटरों ने जांचलिया था। जो परिशिष्ट नं० ३ में दिया गया है।

सायंकाल ७ बजे से फिर बैठक हुई भजन और मंगलाचरण के पश्चात् पं० जिनेश्वरदासजी का संक्षिप्त व्याख्यान जैनधर्म के महत्व पर हुआ, फिर पं० हंसराजजी शास्त्री का निम्न प्रकार मनोहर व्याख्यान हुआ। महावीर, बुद्ध, ईसा, मुहम्मद, कणाद आदि अनेक महान् विद्वानों और तत्त्व वेत्ताओं ने तत्त्व

निर्णय करने की कोशिश की, अपने २ विचार प्रगट किये, मतभेद रहा, परन्तु उनमें वैमनस्य कभी नहीं हुआ न उन्होंने अन्य मतावलम्बियों के साथ अनैक्य भाव रखने का उपदेश दिया। परन्तु हम लोगों ने विषय कषाय में पड़कर पूर्वाचार्यों के सिद्धांत का आदर नहीं किया मतभेद की संपुष्टि के लिये दुराग्रह का भाव धारण किया जिसकी वजह से आपस में विरोध बढ़ गया। और द्वेष भाव के कारण एक का मुंह दूसरे के सन्मुख नहीं रहा जिस प्रकार ६ और तीन के अंक एक दूसरे के सामने मुंह करके बैठते हैं तो उनका मूल्य त्रिशठ होजाता है। परन्तु जब द्वेष भाव के कारण वह दोनों अंक एक दूसरे से मुंह फेर लेते हैं तो उनकी कीमत घट कर छत्तीस रह जाती है, ऐसा कोई समय न था जब यहां सिद्धांतकारों में मतभेद नथा, परन्तु द्वेष भाव कभी नहीं हुवा यही कारण है कि भारतीय सिद्धांतों को जानने के उत्सुक देशांतर वासी भी रहे और संसार भर में आत्मिक ज्ञान की अपेक्षा भी भारतवर्ष का मस्तिष्क ऊंचा ही रहा।

अब भारतवासियों में चाहे वह वैदिक धर्मानुयायी हो, जैन धर्मावलम्बी हो वैष्णव, बौद्ध, सनातनी, ईसाई, पारसी, मुसलमान. कुछ हो किसी के हृदय में धार्मिक भाव नहीं है, केवल वस्तुस्थिति के विचारों और सैद्धान्तिक नियमों को साम्प्रदायकता के रूप में उन्होंने परिणित कर दिया है, और धर्म के बहाने से पारस्परिक विरोध की वृद्धि करते हैं, परन्तु याद रहे इससे धर्म या जाति का कोई लाभ नहीं। ऐसा ही रहा तो पृथ्वी पृष्ट पर न कोई भारतीय जाति ही रहेगी और न उनके धर्म का अस्तित्व ही रहेगा।

अब तो वह समय है कि प्रत्येक धर्म के अवलम्बी अपने २ धर्म का खूब प्रचार करें अपने धर्म सिद्धान्तों को संसार के सामने रक्खें जिसके अन्दर सचाई होगी संसार की दृष्टि स्वयं उसका फैसला करेगी, प्रत्येक विद्वान इस बात की उपेक्षा करता है कि

भारतीय सिद्धान्तों को तुलनात्मक दृष्टि से देखने का इन्हें अवसर प्राप्त हो।

जैनियो! इस कहने से काम नहीं चलेगा कि हम जैनी हैं जैन धर्म हमारा है। जैनधर्म का प्रचार करो, और संसार को जैन सिद्धान्त पर आसक्त बनाओ, नहीं तो यह धर्म टिपारों में ही बन्द पड़ा रह कर स्वाहा हो जायगा। अपने को जैनी कहना भूल जाओ जैन कोई जाति नहीं है; अब अपने को भारतीय कहो, जब तक ऐसी भावना प्रत्येक धर्मावलम्बी की न होगी पारस्परिक विरोध दूर न होगा। जो कार्य तुम्हारे मनस्थ और इच्छा के विरुद्ध हों वह दूसरों के साथ करना पसन्द न करो, यही सच्ची अहिंसा है, इसी का उपदेश भगवान महावीर ने दिया था। आत्मा को ९ के अंक की भांति समरसी बना लेना चाहिये कि इस पर कितनी ही जरब लगे अपने स्वभाव को नहीं त्यागता इसी से लोक मण्डल को विजय कर सकोगे और जब ही सच्चे जैनी कहलाने के अधिकारी होगे।

भौंरा लकड़ी को काट कर उसमें छिद्र कर देता है लेकिन कमल के भीतर जब बन्द हो जाता है तो रात भर उसी में बन्द पड़ा रहता है उस कारागार से मुक्त होने के लिये कमल की पंखड़ी को नहीं काटता, क्यों? इसलिये कि वह कमल के साथ प्रेम रखता है। इसी प्रकार जब तुमको अपने देश धर्म और जाति में प्रेम और स्नेह होजायगा तो चाहे तुम पर कितनी ही आपत्ति आवें उन्हें हानि पहुंचाने का कभी भाव हृदय में नहीं आयगा।

इसके बाद समाज के सुप्रसिद्ध हितचिंतक पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार ने अपना निबन्ध पढ़ कर सुनाया जो बहुत रोचक तथा निश्चयात्मक लिखा था।

तत्पश्चात् उर्दू और हिन्दी भाषा के कवियों का सम्मेलन हुआ हिन्दी भाषा में दो समस्यायें; दिन की न रातकी, और जयन्ती

जिनराज की निश्चित की गई थीं इन पर जो सुप्रसिद्ध कवियों ने उल्लेखनीय कवितायें पढ़कर सुनाई थीं वह क्रमशः परिशिष्ट नं० १ और २ में दीगई हैं, तथा उर्दू भाषा के कवियों ने जो दीहुई तरह पर उल्लेखनीय गजलें और नज्में लिखी थीं वह परिशिष्ट (जमीमा) नं० ४ में दी हैं।

कुछ महानुभाव कवियों की असामयक, अशुद्ध तथा असंगत कविताओं को परिशिष्टों में स्थान नहीं दिया गया है जिसके लिये हम क्षमा चाहते हैं।

इसके बाद बा० कीर्तिप्रसाद जी सभापति का निम्न भाषण हुआ।

सभापतिजी का भाषण।

इसमें सन्देह नहीं कि जैसा समय वीर प्रभु के जन्म से पूर्व था वैसा ही अब भी वर्तमान है जैन जाति में संगठन नहीं है। इसलिये हम लोग प्रेम पूर्वक मिल कर कोई काम नहीं कर सकते, बड़े बूढ़ों पर आशा लगाए बैठे रहना नितान्त निरर्थक है, अब नवयुवकों में नवजीवन आना चाहिये। यदि इनमें सेवाभाव, और स्वार्थत्याग का सञ्चार हो जाय तो हमें विश्वास है कि जाति और धर्म का बेड़ा अवश्य पार हो जायगा।

मैं समझता हूं कि इसी प्रकार के उद्गारों को हृदय में धारण करके कुछ धर्म प्रेमियों ने मित्र मण्डल की स्थापना की, और इस संस्था ने अब तक जो कुछ कार्य किया है वह अवश्य सराहनीय है। परन्तु थोड़े से छोटे २ ट्रैक्टों का प्रचार कर देना ही पर्याप्त नहीं है, इससे कहीं अधिक धर्म प्रचार की आवश्यकता है।

अहमदाबाद में नवयुवक सप्ताह मनाया गया था। जिसमें जैन युवकों की बनाई हुई वस्तुओं की प्रदर्शनी भी हुई थी। मुझे उनके विचार बहुत उच्चकोटि के प्रतीत हुए क्योंकि हम लोगों की वाणिज्य शैली केवल दलाली के रूप में शेष रह गई है। शिल्पकारी

एक स्वतंत्र जीवननिर्वाह का व्यवसाय है इस हेतुसे हमारे नवयुवकों को शिल्पकला की ओर अपना ध्यान आकर्पित करना योग्य है।

जैन समाज में कोई दैनिक पत्र नहीं, देशी तथा विदेशी विद्या और विज्ञान प्राप्त करने के लिये कोई अपना महा विद्यालय या कालेज नहीं। कोई बृहद् पुस्तकालय नहीं, प्राचीन शास्त्रों का भण्डार नहीं, मुझे कहनेमें लज्जा आती है कि जर्मनी में जैनशास्त्रों का इतना बड़ा भण्डार है कि उसके सूचीपत्र का मूल्य ३०) है।

हमारी सामाजिक स्थिति भी प्रतिदिन अधोगत है पारसी कौम लगभग एक लाख की संख्या में है परन्तु देश में तथा राज्य में उनका मान है जैनी बारह लाख हैं, परन्तु इन्हें कोई कहीं पूछता तक नहीं, कहा जाता है कि देश की तीन चौथाई सम्पत्ति जैनियों के हाथ में है। परन्तु मुझे तो इनमें किसी प्रकार का चमत्कार दिखाई नहीं देता। इन्हें कहीं किसी भांति का सम्मान या गौरव प्राप्त नहीं।

मेरी अल्प बुद्धि के अनुसार इनकी अवनति इस कारण है कि इनमें संगठन शक्ति नहीं, आपस में द्वेष और विरोध भाव रहता है। इस जाति की तीनों सम्प्रदाय कलह प्रिय होगई हैं, क्रिया काण्ड के झगड़ों में पड़कर अपनी परिस्थिति को नष्ट कर रहे हैं। पूजा पर झगड़े, तीर्थों पर झगड़े, विवाह शादियों में झगड़े, रीति रिवाजों में झगड़े, लौकिक अधिवेशनों में झगड़े। क्या २ बताऊं इनके धार्मिक और सामाजिक समस्त कार्यों में झगड़े ही झगड़े हैं।

हम सबको पारस्परिक प्रेम रखने को, तीनों सम्प्रदायों को एक रूप होकर लौकिक और पारलौकिक उन्नति में तन मन धन से लग जाना चाहिये, तब ही हमारा कल्याण होगा।

इसके बाद ला० नेमचन्द के मनोहर भजन हुये और महावीर भगवान के जैकारों के साथ सभा समाप्त हुई।

तृतीय दिवस।

२१-४-२९ को प्रातःकाल मित्रमण्डल के सदस्यों की वार्षिक जनरल मीटिंग हुई। जिसमें आगामी वर्ष के लिये मण्डल के कार्यकर्ता और ट्रैक्ट कमेटी के सदस्यों का निर्वाचन हुआ और उनके अतिरिक्त बैलट द्वारा साधारण सदस्यों का चुनाव होकर निम्न प्रकार ३१ सदस्यों की एक कार्यकारिणी समिति बनाई गई।

चुनाव।

१ सभापति–विद्यावारिधि बैरिस्टर चम्पतरायजी
२ सीनियर उपसभापति–बाबू महावीरप्रसादजी एडवोकेट
३ उपसभापति–बाबू भोलानाथ मुख्तार दरख्शां (मंत्री ट्रैक्ट कमेटी)
४ मन्त्री—बाबू उमरावसिंहजी अकाउन्टैन्ट
५ संयुक्त मंत्री—पन्नालाल जैन अग्रवाल
६ सहायक मंत्री-बाबू विशनचन्द ड्राफ्टसमेन
७ खजांची—ला० रणवीरसिंहजी टोपीवाले
८ खजांची—चौधरी बल्देवसिंहजी सराफ
९ हिसाब निरीक्षक–लाला बनारसीदासजी
१० हिसाब निरीक्षक–ला०जानकीदास जैन बी. एस. सी.
११ सभासद ट्रैक्ट कमेटी हिंदी–पं० महावीर प्रसादजी देहली
१२ सभासद ट्रैक्ट कमेटी हिंदी–पं०ब्रजवासीलालजी मेरठ
१३ सभासद ट्रैक्ट कमेटी उर्दू–ला० नाहरसिंहजी सरसावा
१४ सभासद ट्रैक्ट कमेटी उर्दू—बाबू चन्दूलालजी जैन अख्तर बी.ए.एल. एल. बी.
१५ सभासद ट्रैक्ट कमेटी अंग्रेजी–प्रो०घासीरामजी जैन एम.एस. सी. लश्कर गवालियर
१६ सभासद ट्रैक्ट कमेटी अंग्रेजी—बा० ऋषभदासजी जैन बी.ए. वकील मेरठ

१७ सभासद—लाला जुगलकिशोरजी कागजी मंत्री पुस्तकालय
१८ ,, लाला तिलोकचन्दजी
१९ ,, लाला मोहकमलालजी
२० ,, चौधरी नियादरमल जी
२१ ,, लाला सत्यनारायण जी गुड़वाले
२२ ,, लाला महावीरप्रसादजी बिजली वाले
२३ ,, लाला दलीपसिंह जी कागजी
२४ ,, लाला अतरसैनजी
२५ ,, बाबू आदीश्वरलालजी
२६ ,, लाला रतनलालजी झझरिये
२७ ,, लाला जोतीलालजी मंसूरी वाले
२८ ,, लाला बिरखमलजी
२९ ,, लाला दौलतरामजी कपड़े वाले
३० ,, लाला मीरीमलजी सादेकार
३१ ,, बाबू पृथ्वीसिंह जी

मध्यान्ह में १२ बजे से राय बहादुर साहू जगमन्दरदासजी रईस, आनरेरी मजिस्ट्रेट, चेयरमैन डिस्ट्रिक्ट बोर्ड नजीबाबाद के सभापतित्व में कार्यवाही आरम्भ हुई।

पं० मुन्नालाल जैन विशारद ने मंगलाचरण किया। पं० अर्हद्दासजी ने भजन गाया, फिर पं० प्रभाचन्द्रजी न्यायतीर्थ का व्याख्यान हुआ जिसमें उन्होंने कहा कि वीर जयन्ती उत्सव जब ही सफल कहा जा सकता है कि हम सब इसके उपलक्ष में पारस्परिक विरोध भावों को अपने हृदयों से निकालदें, और भगवान महावीर के प्रतिपादित धर्म के प्रचार की प्रतिज्ञा करलें। इनके बाद वैदिक धर्म के विद्वान पंडित जगदम्बाप्रसादजी लखनऊ निवासी का प्रभावशाली निम्न व्याख्यान हुआ।

कुछ समय पूर्व भारतवर्ष में तत्व विचार का प्रवाह बहुत

जोरों पर था बड़े २ विद्वान आत्मिक तथा पारलौकिक विचारों में संलग्न रहते थे। जैनधर्म के तत्व साधारण मनुष्यों के लिये जितने पहिले विचारणीय थे उतने ही अबभी गूढ़ मालूम होते हैं। भारतीय और विदेशीय विद्वानों का विचार जैनधर्म के इन तत्वों पर विशेष रूप से आकर्षित हो रहा है कि ईश्वर सत्ता रूप से है या नहीं ? यदि है तो उसका स्वरूप क्या है, तीर्थंकर ईश्वर हो सकता है या नहीं।

जैनधर्म और वैदिक धर्म में जिसका मैं अनुयायी हूं इन्हीं विषयों पर मतभेद है हम सबको इन विषयों पर मनन पूर्वक विचार करना चाहिये। सत्यासत्य का निर्णय करना उचित है, यदि हो सके तो सहिष्णुता के साथ पारस्परिक मतभेद मिटा देना चाहिये। एकको दूसरे पर दोषारोपण तथा अश्लील शब्दों की वर्षा न करनी चाहिये, मैं यह नहीं चाहता कि हम सब लोग आग्रहवादी होजांय बल्कि युक्तियों और प्रमाणों से यदि ईश्वरकी सत्ता सिद्ध होती है तो हम सब को उसे मान लेना चाहिये, यदि ईश्वर की सत्ता कल्पित सिद्ध हो तो किसी को उसे नहीं मानना चाहिये। ऐसे उदार भावों से धार्मिक वैमनस्य दूर हो सकता है, अहिंसा धर्म का पालन करना किसी धर्म के विरुद्ध नहीं हम सब को प्रयत्न करके पशुपीड़ा के कारणों को बन्द कर देना चाहिये। तथा इन्द्रिय वासनाओं पर विजय प्राप्त करनी चाहिये। अपनी वाक्य और कर्मशक्तियों का इस भांति उपयोग करना उचित है कि उससे अपनी आत्मा का कल्याण और देश का उद्धार हो सके। हिंसा चाहे संकल्पी हो तथा अन्य प्रकार की उससे बचने की प्रत्येक समय कोशिश करना आवश्यक है।

विरोधी हिंसा से उसी समय काम लेना चाहिये जहां देश रक्षा तथा आत्म रक्षा का प्रश्न उपस्थित हो।

जुआ चोरी जारी आदि पाप क्रियाओं में किसी प्रकार से

परामर्श न करना चाहिये ढाई हजार वर्ष पूर्व भगवान महावीर के जन्म समय अहिंसाधर्म के प्रचार की जैसी आवश्यकता थी स्वात्म और स्वदेश की रक्षा के लिये अहिंसा का सिंहनाद बजाने की वैसी ही अब भी जरूरत है। अहिंसा के सिद्धान्त का घोर प्रचार करना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है, जैनी या अन्य किसी सम्प्रदाय का यह अभिमान करना कि अहिंसा सिद्धान्त हमारा है या अहिंसात्मक क्रियायों की मात्रा हममें विशेष है उनकी कीर्ति को नहीं बढ़ाता, यह धर्म तो प्राणी मात्र का है, प्रत्येक मनुष्यको इसका पालन करना चाहिये।

तीर्थंकर शब्द का अर्थ मैं यह समझता हूं कि वह व्यक्ति विशेष तीर्थंकर कहलाए जिन्होंने अध्यात्मिक नउका में बैठ कर संसार समुद्र को पार किया और दूसरे लोगों को भी स्वानुभवित मुक्ति मार्ग पर चलने का उपदेश किया, अनात्मत्व को आत्मत्व से पृथक करना और आत्म शक्तियों का विकसित करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है, इक प्रकार की शिक्षा देने वाले साहित्य का हम सब को अनुशीलन करना चाहिये इसीसे वीर प्रभु की जयंती सफल कही जा सकती है, विषय वासनाओं को जीतने वाले और जड़त्व को आत्मा से प्रथक करने वाले व्यक्ति विशेष को जिन कहते हैं और ऐसे व्यक्ति विशेष के उपदेशों तथा चरित्र का आदर करने वाले भक्त को जैनी कहते हैं, यदि इन शब्दों का यही समुचित अर्थ है और इनसे कोई विशेष साम्प्रदायिक भाव ग्रहण नहीं किया जाताहै तो मुझे भी अपनेको जैनी कहनेमें कोई संकोच नहीं।

इससे मेरा तात्पर्य यह है कि जिन प्रणीत धर्म को साम्प्रदायकता का रूप देकर थोड़े से मनुष्यों में ही सीमित न रखना चाहिये बल्कि उदार भावों के साथ इसका प्रचार करके इसे सार्वजनिक बना देना चाहिये। इस जयन्ती उत्सव के मनानेका यही मन्तव्यहै।

इनके बाद पंडित जुगलकिशोरजी ने अपना शेष निबन्ध पढ़ा

फिर महावीर विद्यालय के एक विद्यार्थी विमलचरण ने अपने धार्मिक भाव प्रगट किये, तत्पश्चात् सार्वधर्म सम्मेलन हुआ, सनातन धर्म की ओरसे पंडित ज्ञानीरामजी तथा डा० उपेन्द्रनाथ शास्त्री, इस्लाम की ओर से मौ० सरफराज हुसैन क़ारी, आर्य समाज की ओर से पं० रामचन्द्रजी, जैन समाज की ओर से दयासागर पं० बाबूरामजी ने आत्मोन्नति विषय का अपने २ धर्म के अनुसार निम्न भांति से प्रतिपादन किया।

१—पं० ज्ञानीरामजी ने कहा कि संसारमें जितने प्राणी हैं वह सब सुख की इच्छा करते हैं और दुख से द्वेष रखते हैं। इस सुख दुःख के कारण हमारे आचार और विचार हैं परन्तु विना विचार के आचार नहीं होता हमको सोचना यह है कि हमारी आत्मा ही वास्तव में सुखरूप और शांति स्वरूप है या सुख शांति कोई वाह्य पदार्थ है जिसको आत्मा प्राप्त करना चाहता है, शास्त्रों के मनन करने से ज्ञात होता है कि आत्मा स्वयं ही आनन्द स्वरूप है, महर्षि गौतम कहते हैं कि दुःख का मूल्य जन्म है, जन्म का मूल्य कर्म है क्योंकि स्वकृत कर्मों का फल भोगने के लिये जन्म होता है देव शरीर पुण्य से, नरक गति पाप से, तथा मनुष्य और तिर्यंच योनि पुण्य पाप दोनों प्रकार के कर्मों का फल है।

कर्मका मूल्य प्रवृत्ति और प्रवृतिका मूल्य अविद्या तथा अज्ञान है। अज्ञानी जीवोंको ही रागद्वेष होते हैं बालक जबतक यह अनुभव करता है कि मैं अकेला हूं तो भय नहीं मानता। परन्तु जब दुई की कल्पना करता है तो डरने लगता है। इसी भांति आत्मा जब निज स्वरूप में ही तल्लीन होता है तो उसे जीवन मरण आदि का कोई भय नहीं होता, परन्तु जब आत्मा शरीर में निजत्व की कल्पना करता है तो इस दुई से राग द्वेष भाव उत्पन्न हो जाते हैं राग द्वेष मिट जाने से आत्मा में ज्ञान का प्रकाश होजाता है, ज्ञान होने से कर्म नहीं होता, कर्म न होने से जन्म न होगा और जब

जन्म ही नहीं होगा तो दुःख सुख भी नहीं हो सकता।

सांख्यशास्त्र भी इसका समर्थक है, जो कहता है कि दुःख अविचार से होता है जिस प्रकार सूर्य पर अन्धकार नहीं छासकता वैसे ही आत्मा जो ज्ञान स्वरूप है अज्ञान से आच्छादित नहीं हो सकता है, परन्तु हम अपने स्वरूप को नहीं विचारते इसी कारण आत्मोन्नति नहीं कर सकते। आत्मोन्नति का सच्चा मार्ग आत्म गुणों का चिंतन तथा राग द्वेष भावों का परित्याग है।

२—प्रोफेसर उपेन्द्रनाथजी शास्त्री एक बंगाली विद्वान ने कहा कि आत्मोन्नति पर विचार करनेसे पूर्व हमें यह देखनाहै कि आत्मा क्या पदार्थ है, कोई स्थूल शरीर को ही आत्मा मानता है परन्तु शास्त्रों में कहा है कि यह मनुष्य की भूल है जब शरीर में चेतन नहीं होता तो वह मृतक माना जाता है। इन्द्रियों से चेतन का अनुभव नहीं होता परन्तु जब चेतन शरीर में नहीं होता तो इंद्रियां कुछ काम नहीं करतीं इससे ज्ञात होता है कि आत्मा शरीर और इन्द्रियों से भिन्न कोई सूक्ष्म पदार्थ है, सांख्यशास्त्र कहता है कि आत्मा कर्ता भोक्ता और सदा स्थिर रहने वाला सूक्ष्म पदार्थ है आत्मा का स्वभाव दुःख नहीं है वह नित्य मुक्त परमानन्द स्वरूप है। मनुष्य जो शुभाशुभ कर्म करता है उसी से सुख दुख रूप परिणाम होते हैं वह सब अज्ञानवश होता है, अज्ञान दूर होजाय तो आत्मा का ज्ञानमय स्वरूप विकसित हो जाता है।

दुर्बल आत्मा निज स्वभाव को प्राप्त नहीं हो सकती बलिष्ट आत्मा ही ज्ञान प्राप्त कर सकती है, भय को जीत लेने वाला आत्मा ही बलवान है, मनोरंजक स्त्री, गुणवान पुत्र तथा अन्य सांसारिक सम्पत्ति से स्थिर शांति प्राप्त नहीं होती, संसार की अच्छी इच्छित वस्तुओं से आनन्द तो होता है परन्तु उनके नष्ट होने का भय लगा रहता है इसलिये वह दुःखरूपी ही हैं, विषय जन्य सुखों के त्यागने पर ही आत्मिक सुख की प्राप्ति हो सकती है।

३—पं० रामचन्द्रजी आर्य समाजी ने कहा, कि प्रथम हमको इस विषय में विचार करना है कि आत्मा और उन्नति दो भिन्न२ पदार्थ हैं या एक, यदि दो हैं तो आत्मा क्या वस्तु है और किस वस्तु से उन्नत होता है, आत्मा दो प्रकार की है जीवात्मा और परमात्मा, अब प्रश्न यह है कि उन्नति परमात्मा की करनी है कि जीवात्मा की, मेरे विचार से परमात्मा की कोई उन्नति नहीं हो सकती। इसलिये जीवात्मा की उन्नति ही हमारा लक्ष्य है, जीव नित्य है सबसे पृथक पदार्थ है वह ज्ञानस्वरूप और प्रयत्नशील है अतः इसकी उन्नति ज्ञान और प्रयत्न से ही हो सकती है, प्रश्न होता है कि इसकी उन्नति होती क्यों नहीं ? मालूम होता है कि इसके भीतर किसी प्रकार की दुर्बलता है, इसकी ज्ञानशक्ति पर कोई आवरण है, जब इसे संसार भर के पदार्थों का ज्ञान होजायगा तो मन्दिर में दीपक के उजाले की भांति इसमें पूर्ण प्रकाश हो जायगा।

इस आत्म प्रकाश के लिये ज्ञान कहां से आयगा मेरे विचार से आत्मा अपने ज्ञान से ही ज्योतिर्मान नहीं हो सकता, जैसे मैं आप अपने कन्धे पर नहीं जा सकता, इसी प्रकार आत्मा केवल अपने ही ज्ञान से विज्ञ नहीं हो सकता। अतः आत्मा को परमात्मा या ऋषभदेव का ज्ञान होना चाहिये। सब से पहिले मिथ्या ज्ञान को दूर करो इससे काम क्रोध लोभ मोह आदि दोष मिट जांयगे। दोष नष्ट होजाने पर कर्म प्रवृत्ति जाती रहेगी, कर्म का नाश होने पर जन्म न होगा जन्म न होने से दुख भी न होगा।

योगिराज कृष्ण भगवान ने भी गीता में कहा है कि ज्ञान की अग्नि से जब कर्म भस्म हो जाते हैं तो जन्म धारण करना नहीं पड़ता।

हमको आत्मा का ज्ञान नहीं, शरीर और आत्मा का भेद रूप ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान है ऐसे शुद्ध आहार से जिसके प्राप्त करने में

हिंसा न हुई हो या उससे किसी दुःख तथा अनिष्ट न हुआ हो बुद्धि शुद्ध होती है, शुद्ध बुद्धि से धर्म अधर्म का विचार होता है इस विचार से सत् ज्ञान की प्राप्ति होती है, और शुद्ध ज्ञान से जीव मुक्त हो जाता है।

दुर्वासनायें आत्मा के मल हैं मल से रहित होकर निर्मल आत्मा को अपने लिये कुछ करना नहीं, हां! वह दूसरों का उद्धार कर सकता है। चाहे कोई जैनी हो या ब्रह्मी। आत्मज्ञानी वह है जो दूसरों को भी ज्ञान का दान देता है, योग साधन से मन वशी होजाता है इसी तप के द्वारा उन्नति हो सकती है।

मौ० सरफराज हुसेन क़ारी:—

आत्मा के विषय में कुरान शरीफ़ में लिखा है कि रूह खुदा का हुक्म है और खुदा ने मनुष्यों को रूह का ज्ञान बहुत कम दिया है इसलिये इसलाम का दावा नहीं है कि किसी मनुष्य को आत्मा का आद्योपान्त ज्ञान हो सकता है। इस्लामी मजहब की बुनियाद जैन बौद्ध सनातनी धर्मों की भांति वैज्ञानिक सिद्धान्त पर नहीं है वह एक चारित्रात्मिक धर्म है आध्यात्मिक नहीं, किन्तु आत्मा की मुक्ति (निजात) मानता है। और सब का पैदा करने वाला खुदा को मानता है। ऐसे सृष्टि करता ईश्वर की आवभगत जैन धर्म में नहीं है। मनुष्य में बुद्धि तथा भले बुरे की दृष्टि होने से ही यह संसार में सर्वोत्तम गिना जाता है। मान माया रागद्वेष ईर्षा इच्छा आदि ऐसे भाव हैं जो इसे बुरे कर्मों की ओर लेजाते हैं। दूसरी प्रकार के भाव यह हैं कि हम औरों की वृद्धि को देख कर हर्षित हों, आप लोग इन भावनाओं को पूर्वकर्म जन्य मानते हैं परन्तु हम यह मानते हैं कि अल्लाह तआला हमारी परीक्षा करता है और देखता है कि उसके बन्दों में नेकी करने का भाव किसमें अधिक है।

हम यह नहीं बता सकते कि आत्मा क्या है परन्तु यह कह

सकते हैं कि यह एक विशुद्ध तत्व है, आध्यात्मिक विषय का अनुवेषक हममें एक सूफी फिरका है जिसने मान्सिक भावों का निग्रह करके आत्मशक्तियों को खोजा है अनुभव से मालूम होता है कि यदि मनुष्य शुद्ध चित्त से मेरा और मुझको का ध्यान करता है तो उसे आत्मिक अतिशय दिखाई देने लगते हैं, सूफियों को मालूम हुआ है कि मन को मारने से उनके भीतर एक अद्भुत प्रकाश हो जाता है, उनकी दृष्टि में पाप क्रियायों से भय करना और पुण्य क्रियायों की ओर झुकना ही अध्यात्म है।

जैनधर्म ने इसके जांचने का यह कांटा दिया है कि जिसको यह अभिमान हो कि मैं अध्यात्मी हूं या वह आत्मज्ञान का इच्छुक है तो यह देखो कि वह अहिंसाकी किस श्रेणी पर पहुंच चुका है। यदि उसके अन्दर से अहिंसा की शीतल वायु वहती है तो समझ लो कि वह अवश्य आत्मज्ञानी है।

अहिंसा धर्म कुछ जैनियों की ही सम्पत्ति नहीं है उन्हें यह दूसरों के पास भी पहुंचानी चाहिये अहिंसा का आदर न करने वालों को म्लेच्छ आदि शब्दों से सम्बोधन करके विरोधी न वनावें वल्कि रोगी जिस युक्ति से कड़वी औषधिका घूंट पीसके पिलाने का प्रयत्न करना चाहिये। इस हिंसाप्रिय जनताके सम्मुख अहिंसा सिद्धान्त को इस रूप से रक्खें जिससे उसकी गरदन झुक जाय।

अव सोते रहने का समय नहीं है अहिंसाधर्म के प्रचार का प्रयत्न करना चाहिये। इस सुकृति से अपनी आत्मा की उन्नति होगी और दूसरों की आत्मायें भी उन्नतशील होसकेंगी।

दयासागर पं० वावूरामजी,

ज्ञान आत्मा का स्वाभाविक गुण है वैभाविक नहीं। अर्थात् ज्ञान का प्रकाश आत्मा में कहीं वाहर से नहीं आता है कर्मावरण के हट जाने से उसकी ज्ञान ज्योति स्वतः प्रकाशमान होजाती है। जैसे मेघ पटल के विलय होजाने पर सूर्य का स्वतः प्रकाश हो

जाता है। आत्मिकज्ञान की कोई सीमा नहीं पूर्ण प्रकाश होने पर आत्मा सर्वज्ञ होजाता है। आत्मा की उन्नति और ज्ञान की उन्नति एक ही बात है रत्नत्रय मोक्ष का सच्चा मार्ग है। जब हमारे विचार और आचार (प्रवृति) आत्मिक गुण प्राप्त करने की ओर होजाते हैं आत्मा तब ही उन्नति करता है। आत्मतत्व की सत्ता तथा उसके ज्ञानगुण की प्रतीत होना सम्यक् दर्शन है। वहिरात्म बुद्धि को छोड़ कर अंतरात्म में प्रवृत्त होना परमात्म पद पाने का सुगम पंथ है। सांसारिक विकारों से आत्मा का छूट जाना आत्मिक शांति का उपाय है, योगाभ्यास से मान्सिक विकार दूर नहीं हो जाते, हां! जब तक प्राणायाम अवस्था रहती है आत्मा को शरीर का तथा संसार का कुछ ध्यान नहीं रहता। परन्तु जब वह अवस्था समाप्त होती है तो इन्द्रियों की विषय वासनायें पुनः जागृत हो जाती हैं। जैसे सर्प ठंड से सुकड़ा पड़ा रहता है और किसी को नहीं काटता परन्तु गरमी पाकर फिर अपना विषैला रूप ग्रहण कर लेता है, प्राणायाम आदि साधनों से इन्द्रियों के भोग विलास और रागद्वेष भावों में आत्मा की प्रवृत्ति नष्ट नहीं होती परन्तु ज्ञान होने से ही यह विकार मिट सकते हैं, आत्मवस्तु का अस्तित्व यहां निर्विवाद है, तो भी यदि किसी को संशय हो कि आत्मा सत्ता रूप से है या नहीं तो इसका संक्षेप उत्तर यही है कि प्रश्न का उपस्थित करने वाला ही स्वयं आत्मा है। जैसे मकड़ी जाला पूर कर आप उसमें फंस जाती है निकलने का मार्ग नहीं पाती और उसी में मरजाती है। वैसे ही आत्मा संसार के मोह जाल में स्वयं फंस रहा है, निजत्व को भूलकर परपदार्थों में ममत्व भाव ग्रहण कर लिया है यह अपने ज्ञान ध्यान से स्वयं ही इससे निकल सकेगा। इस कहने का कोई अर्थ नहीं कि परमात्मा ने हमें इस संसार चक्र में फंसाया है वही मुक्त करेगा। रागद्वेष भावों के मिट जाने से कर्म बन्ध नहीं होगा, फिर शुभ और अशुभ दोनों

अवस्थायें दूर होकर सिद्धावस्था प्राप्त होजायगी। इस आत्मा ने निज स्वरूप और मुक्ति मार्ग को नहीं समझा इसलिये दुःख पाता है। मैं कौन हूं, मेरा कर्तव्य क्या है, उन्नति किस प्रकार और कहां तक हो सकती है, इन बातों का सच्चा ज्ञान सच्चा श्रद्धान और सच्चा आचरण ही आत्मोन्नति का अन्तिम लक्ष्य है।

इसके बाद बाहर के आये हुए विद्वानों, सभापति और मण्डल के सदस्यों का फोटोग्रूप लिया गया। और सभा समाप्त हुई।

शामको सात बजे पं० दीपचन्द्रजी वर्णी के मंगलाचरण और पं० अर्हद्दास के भजनों के साथ कार्यवाही प्रारम्भ हुई। बैरिस्टर चम्पतरायजी ने बाहर से आये हुए पत्र और सन्देशे सुनाये।

श्री० अक्षयचन्द्र बसु एडवोकेट देहली का एक संक्षिप्त परन्तु महत्वशाली व्याख्यान हुआ जिसमें उन्होंने जैनधर्म प्रणीत अहिंसा और तपश्चरण की भूरि २ प्रशंसा की, इसके बाद उत्कल भारत-भूषणा श्रीमती डा० कुंतलकुमारी एम०ए० ने अपना लिखित अंग्रेजी निबन्ध पढ़ा जिसका अनुवाद श्री० चम्पतरायजी ने करके सुनाया।

"बड़े हर्षके साथ मैं आप लोगों को महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर बधाई देती हूं मैं एक अजैन हूं परन्तु मुझे इसधर्म से जिसमें अहिंसा का सिद्धान्त इतना उच्चकोटि का है कि प्रत्येक जीव के प्रति प्रेमभाव का उपदेश है जिसकेसम्पूर्ण सिद्धान्त प्रत्येक आत्मा को परमात्मा हो जाने के लिये घोषणा दे रहे हैं। जहां यह लिखा है कि वही जीव आदर्श को प्राप्त कर सकता है जो प्रेम और परोपकार का मार्ग ग्रहण करता है। प्रत्येक विषय पूर्ण खोज और सत्यासत्य को निर्णय करके प्रतिपादित किया गया है।

वह कौनसी आपत्ति है जो आज समस्त संसार को पीड़ित कर रही है। और वह कौनसी व्याधि है जिससे जनता नष्ट हो रही है, वह घृणाभाव है, आज हम दूसरों को अच्छी तरह खाता पीता नहीं देख सकते। यही समस्त दुर्भावनाओं का मूल है।

ईश्वर की प्रसन्नता और धर्म कार्य की सम्पन्नता के लिये जीव हिंसा निस्संकोच की जाती है सत्य सूर्यकी भांति प्रकाशमान वस्तु है उसके जताने के लिये किसी नये प्रमाण की आवश्यकता है, सत्य एक नित्य वस्तु है, यह किसी विशेष जन समुदाय की सम्पत्ति नहीं है। किन्तु प्रत्येक जीवात्मा के लिये है। आज अहिंसा अपने वास्तविक रूप में व्यवहृत नहीं है इसलिये विद्यमान अहिंसा सत्य नहीं है जिसको धर्म समझ कर लोग अभिमान करते हैं। संसार ने उस सत्य अहिंसा के सिद्धान्त को नहीं समझा है जो सारे संसार को परम पद पाने का साधन है प्रत्येक मनुष्य परमात्मा की खोज में है परन्तु यह नहीं जानते कि जिस परमात्मा को वह बाहर खोजते हैं वह उनके अंदर ही विद्यमान है। और वह परमात्मपद प्रेम और अहिंसा के सिद्धान्त पर चलने से ही प्राप्त हो सकता है, सत्य यह है कि संसार में यदि कभी शान्ति और भ्रातृप्रेम का साम्राज्य होगा तो अहिंसा धर्म के प्रचार तथा व्यवहार से ही होगा।

आज कल पाश्चात्य देशों में घृणा और क्रोध की दावानल दहक रही है, स्वयं धनाढ्य होने के लिये अन्य लोगों का धन हरण करते हैं वह समझते हैं और व्याख्या करते हैं कि केवल योग्य पुरुष ही संसार में जीवित रहने के अधिकारी हैं। परन्तु नहीं. उन्हें ध्यान रखना चाहिये कि अहिंसा, प्रेम और परोपकार से ही कल्याण हो सकता है जैसा कि भारत के बड़े २ सिद्धान्त वेत्ताओं ने बताया है। इसीलिये सभ्यता बिना अहिंसा के, नितांत निरर्थक है।

मैं अपने जैन भाइयों से समर्थ शब्दों में कहना चाहती हूं कि वह अपने अहिंसात्मिक सिद्धांत का खूब प्रचार करें, जनेवा की कानफ्रेंस से नहीं बल्कि अहिंसा धर्म के घोर प्रचार से संसार में शान्ति का राज्य स्थापित हो सकेगा। सेनागण की वृद्धि, जहा-

जों की बाहुल्यता से सार्वजनिक समस्यायें नहीं सुलझेंगी किन्तु अहिंसा धर्म ही ऐसा हथियार है जो सारे झगड़ों की जड़ को काट कर फेंक देगा। यह सिद्धान्त भ्रातृ प्रेम उत्पन्न करके मनुष्य समाज में एक नवजीवन का संचार कर देगा, यह जैन धर्म के लिये कोई गौरव की बात नहीं है कि वह छिपी हुई निधि की भांति थोड़े से मनुष्यों के हाथ में रहे जैसा कि दृष्टिगोचर है।

आज हम अपने पूर्वज जैन सम्राटों के कीर्तिशाली शासन को भूल गये। हमने यह भी विस्मृत कर दिया कि पहिले समय में समस्त भारतवर्ष इस पवित्र जैन धर्म का अनुयायी था, यद्यपि पूर्ण इतिहास लिखा नहीं मिलता तो भी उड़ीसा देशवासी अपने बड़े जैन सम्राट महाराजा खारवेल और महारानी दानी का अभिमान करते हैं जिन्होंने प्रेम और शान्ति की छाप समस्त भारतवासियों के हृदयों पर लगादी। उनके समय में धर्म प्रचार हेतु दूर देशान्तर में उपदेशक भेजे गये, मैं भी उड़ीसा देश की रहने वाली हूं इसलिये इन धर्मनिष्ट व्यक्तियों पर मुझे भी अभिमान है, यही नहीं किंतु उड़ीसा और कलिंग देश के राजाओं की प्रेमभरी कथायें अब भी राग रूप में गाई जाती हैं, जिस जैन समाज में ऐसे २ प्रतापी शासक हुए हैं हम उसे डरपोक और कायर कैसे कह सकते हैं। क्या प्रेम और शान्ति के अनुयायियों को पाशविक शक्तियों का अनुसरण करने वालों की अपेक्षा कायर और तुच्छ समझना चाहिये? कदापि नहीं।

जब तक संसार में अहिंसा और दया का प्रचार न होगा वह पाप और दुःख से मुक्त नहीं हो सकता, जैन भाइयों का यह सर्व प्रथम कर्तव्य है कि वह दूर २ तक धर्म का प्रचार करें जिससे मनुष्य समाज झगड़े और रक्तपात से मुक्त रहे"।

अतः प्रेम और अहिंसा की मूर्ति श्री महावीर स्वामी के गुण गान करती हुई अपना व्याख्यान समाप्त करती हूं।

इसके बाद विद्यावारिधि जैनदर्शन दिवाकर श्री० चम्पतरायजी जैन बैरिष्टर ने वैदिक, पौराणिक और जैनधर्म पर विद्वत्तापूर्ण निम्नाङ्कित तुलनात्मक व्याख्यान दिया।

"हर्ष का स्थल है कि गतवर्षों की भांति आज भी दिनमें २घंटे आत्मोन्नति विषय पर सार्वधर्म सम्मेलन हुवा, इससे इतना लाभ अवश्य है कि विषय धारणा तथा विचारशक्ति की परस्पर उत्तेजना हो जाती है। क़ारी साहब ने अहिंसा धर्म की ऐसे समर्थ शब्दों में प्रशंसा की कि मैं भी नहीं कर सकता, सनातन धर्मी और आर्य समाजी प्रतिनिधियों ने भी अविरोध रूप से निश्चित विषय पर व्याख्यान दिये जिनका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा, परन्तु एक त्रुटि रहगई कि आपस में सबका संगम न हुवा।

मेरे विचार से जब तक हम लोग विरोधात्मक समस्याओं का रहस्य न समझ लेंगे संगम नहीं हो सकता। धार्मिक शिक्षा दो प्रकार से दीगई है एक तात्विक दूसरी क्रियात्मक, चारित्र सम्बन्धी शिक्षा में कोई विशेष भेद नहीं, झूठ चोरी व्यभिचार आदि आचरणों को समस्त धर्मों में पापक्रिया और त्याज्य बताया है, तात्विक सिद्धान्तों में विरोध अवश्य है मेरे विचार से इसका मुख्य कारण देवी देवताओं का समाज है।

धर्म एक विज्ञान है विज्ञान विरुद्ध बातों को कोई नहीं मान सकता, गणेशजी का स्थूल शरीर, हस्ती का मस्तक, एक दांत टूटा हुआ, लड्डू हाथ में और चूहे की सवारी, क्या कोई समझ सकता है कि इस प्रकार का कोई व्यक्ति हो सकता है, क्या हिन्दू इतने विज्ञान विहीन थे कि ऐसे अद्भुत देवता को सहज ही पूजने लग जाते। इस लिये मानना पड़ेगा कि इसमें कोई रहस्य अवश्य है। मेरे विचार में यह ज्ञान का अलंकृत शरीर है, जिसको प्रत्येक कार्य के आरम्भ में निमंत्रित किया जाता है, हस्ति मस्तिष्क बुद्धिमत्ता का द्योतक है, एक दन्त का अभिप्राय: यह है कि उस ज्ञान में दुई

का भाव-संशय आदि नहीं एकरूप है, वह तर्क वितर्क आदि पर सवार अर्थात् किसी तर्क से बाध्य नहीं उसकी प्राप्ति में लड्डू अर्थात आनन्द की लब्धि होसके। इस अलंकार को साधारण मनुष्यों ने नहीं समझा इसी से हिन्दू और जैनियों में विरोध रहा। बहुत करके अलंकार को देवता समझते रहे।

इसी प्रकार शिवजी का स्वरूप है, जो अर्ध पुरुप और अर्ध स्त्री के रूप में हमारे समक्ष आता है। साथ ही उसके यह कथा सुनाई जाती है कि पुष्कर में ब्रह्माजी ने यज्ञ किया, सावित्री नहीं आई, इन्द्र गायत्री को पकड़ लाये जो घोपण की पुत्री थी। ब्रह्मा ने उससे विवाह कर लिया सावित्री आई तो यह घटना देख कर अप्रसन्न हुई। शिवजी को, जो यज्ञ प्रोहित थे उसने श्राप दिया, कि तेरा लिंग नष्ट होजाय। परन्तु ब्रह्माजी के अनुरोध पर यह भी कह दिया उसकी पूजा होती रहेगी।

इसका अर्थ स्पष्ट है शिवजी वैराग्य को यज्ञ तप को, ब्रह्मा आत्मा, सावित्री केवल ज्ञानको, गायत्री वुद्धि को और इन्द्र अमुक्त आत्माको कहा है, वैराग्य के साथ आनन्द का सम्बन्ध है, वैराग्य से आनन्दकी प्राप्ति होती है। पारवती आनन्द का रूपक है इसलिये शिवलिंग अर्थात वैराग्य के लिंग अर्थात दिगम्बरी स्वरूप की पूजा है। दूसरी दृष्टि से वैराग्य और आनन्द आत्मा ही में रहते हैं इस लिये शिवजी की अर्द्धांगनी पारवती हुई। इस कथानक की अलंकृत भापा का यही समीचीन अर्थ हो सकता है।

परन्तु हिन्दुओं ने इसे भी एक अद्भुत रूप देवता मान लिया है। राजा करण को लिखा है कि वह कवच पहने हुए माँके पेट से पैदा हुये। तथा सिखण्डी पुरुप के वेप में स्त्री था। यह भी अलंकृत भापा है। जिसका सामान्य अर्थ यह है कि करण duty का रूपक है और सिखण्डी पुरुप होते हुए भी स्त्री की भांति कायर था अर्थात वह शेखी का रूपक है। इससे ज्ञात होता है कि आर्यों

का वास्तविक अर्थों में जो धर्म था वह जैन धर्म है और अलंकृत भाषा में वर्णित धर्म को वैसे ही समीचीन मानने वाला हिन्दू धर्म हुआ। यही दोनों में विरोध है जब तक अलंकृत भाषा का तत्व ज्ञान न होगा वह विरोध दूर नहीं हो सकता। ऐसे ही अलंकृत भाषा में कथायें अन्य धर्मों में भी मिलती हैं। जैसे कि एक यमन (यहूदी) अपनी स्त्री पुत्र और एक बछिया छोड़ कर मर गया। बछिया मैदानों में खुली चरती फिरती थी माँ ने बेटे से कहा कि इस बछिया को तीन अशर्फियों में बेच आओ, लड़का बाजार में गया उसके पास एक देव मनुष्य योनि में आया, बछिया का मूल्य पूछा, लड़के ने तीन अशर्फी मांगी तो उसने कहा कि हम तो छै अशर्फी में लेंगे, लड़के ने नहीं दी और अपनी माँ से जाकर सब वृतांत कहा फिर उस फरिश्ते ने १२ अशर्फियाँ मोल लगाई मां ने कहा बेटा! वह मनुष्य नहीं कोई देव है जो बछिया की कीमत १२ अशर्फी लगाता है, उससे यह पूछना कि बछिया के भाग्य में क्या है।

कुछ दिन पीछे एक यमन को उसके निकट सम्बन्धी ने मार डाला मृतक के मित्रों ने हज़रत मूसा से अपने घातक की शिकायत की अतिशय दिखाने के लिये एक विशेष चिन्हयुक्त बछिया मांगी अतः लोग अशर्फियों से बराबर तोल कर उस लड़के से बछिया ले आये। क्योंकि वह विशेष चिन्ह उसी बछिया में थे। बछिया को बलि देकर उसके अवयव का मृतक से स्पर्श कराया गया जिससे वह मृतक पुनः जीवित हो गया। इस अलंकृत भाषा का अर्थ यह है कि परमात्म पद से भ्रष्ट होकर आत्मा अनाथ होगया विषय वासना बछिया थी। गृहस्थ के तीन प्रकार के सुख विषय वासना की कीमत है। परन्तु इनका बलिदान करना विशेष उपयोगी है। अन्तरात्मा यमन अपने निकट सम्बन्धी बहिरात्मा से मारा जाता है, परन्तु जब वासनाओं को नष्ट कर दिया जाता है

तो अन्तरात्मा मरा हुआ पुनः जीवित होजाता है। यदि इस रहस्य को इस कथा के पढ़ने वाले समझलें तो आर्यधर्म तथा यमन धर्म में कोई भेद न रहे, इसी प्रकार की वहुतसी कथायें पुराणों में अंजील कुरान, जवूर आदि में मिलती हैं। जो स्पष्टतः विज्ञान के विरुद्ध दिखाई देती हैं। आज कल के विद्वान उन पर विश्वास नहीं करते, परन्तु यदि वह उनकी अलंकृत भाषा के समझने का कष्ट उठावें तो उनकी वास्तविकता समझ में आजावे। और उपस्थित विरोध दूर होकर वास्तविक धर्म का मर्म ज्ञात होजाय हम लोगों को शीघ्र ही ऐसी बुद्धि प्राप्त होजाय यही मेरी भावना है।

इसके पश्चात प्रोफेसर चतुरसेन जी शास्त्री देहली का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। उन्होंने कहा कि इस संसार में मनुष्य के जीवन को जो दुर्गुण नष्ट कर देते हैं आज उनकी समालोचना करनी है। राजनीति के योरोप तथा एशिया निवासी विद्वानों की अनुमति है कि भविष्य में एक बहुत बड़ा संग्राम होने वाला है जो संग्राम हमने अवतक इतिहास पृष्टों पर देखे हैं यह उन सब से अद्भुत होगा, यह संघर्षण राजा का राजा से न होगा किन्तु प्रजा का अपने जीवन रक्षा के निमित्त सत्ता से होगा। मैं जैन समाज से पूछता हूं कि उस संग्राम में विजय पाने के लिये जैन समाज क्या वल रखता है। प्रजा से जन धन राजा अपनी रक्षा के लिये लेता है परन्तु राज्य व्यवस्था कोई जादू की पुड़िया नहीं है कि वल हीन प्रजा की रक्षा कर सकेगी।

जैन समाज को अहिंसा धर्म का वड़ा गौरव है इसलिये मैं उन्हीं से पूछता हूं कि उन्होंने अहिंसा तत्व के सत्व को क्या समझा है। मैं कहता हूं कि अहिंसा धर्म की अधिकारी वीर जाति ही हो सकती है। जो वीर और वलवान नहीं वह अहिंसक नहीं हो सकता। मैं वैद्य हूं मान्सिक विकारों को खूव समझता हूं अपने अनुभव से कहता हूं कि जिसकी मान्सिक शक्तियां निर्वल होगई हैं

वह अधिक क्रोध करता है और जिसके भीतर वीरता है वह क्षमा भाव रखता है। इसके अनुसार जैन समाज अहिंसा पालन करने की कितनी योग्यता रखता है। वीरता के प्रतिकूल दूसरी शक्ति क्रूरता है, परन्तु इनमें भेद यह है कि वीरता में दया और क्षमाके भाव होते हैं क्रूरता में नहीं।

जैन इतिहास के देखने वाले जानते हैं, कि जैनियों में कई राजा और सम्राट हुये जिन्होंने भारतवर्ष का राज किया। विदेशों में जाकर रणभूमि में रक्त बहाये और राज्यशासन प्राप्त किया। परंतु अहिंसा तत्व से दूर नहीं हुए। उस समय अहिंसा की आकृति कुछ और थी। महात्मा गांधी ने समयानुकूल अहिंसा का नवीन अर्थ लिया। वह पुरुष क्षत्री था जिसका प्रतिपादित अहिंसा धर्म हजारों वर्ष से अब तक विद्यमान है। आज कितने क्षत्री हैं जो अहिंसा के गहन तत्व को समझने और समुचित रूप से पालते हों।

वीर प्रभु की महान आत्मा क्षत्री थी अब यह वीर पुरुषों का धर्म वैश्य जाति की गोद में खेल रहा है जिससे वैश्य जाति और अहिंसा धर्म दोनों अपमानित हो रहे हैं। लोग सामाजिक कार्यों में हिंसात्मक क्रियाओं को करते हैं और कहते हैं कि धर्म धर्म की जगह है और समाज समाज के स्थान पर है मैं यह नहीं मानता कि दुकान पर चाहे जितना कोई पाप कमाए और मन्दिर में ही पुण्य कार्य किये जावें। सच्चा जैनी वही हो सकता है जो दुकान और मन्दिर दोनों स्थानों पर एकसे पवित्र भाव रखता है धर्म की रक्षा हमारे व्यक्तित्व से सम्बन्ध रखती है किसी स्थान विशेष में नहीं।

यदि अहिंसा तत्व जैनियों के ही समझने के लिये होता तो मुझ जैसे वैदिक धर्मानुयायी को इस विषय पर बोलने का साहस न होता।

यह सर्व मान्य मत है कि यदि भारत की विजय हो सकती है तो अहिंसा धर्म के प्रताप से ही होसकती है। अहिंसा धर्म जैनियों का सिद्धान्त। है, धन्य हैं वह लोग जिनके पास वह वस्तु है जिस पर भारत का उत्थान निर्भर है परन्तु इसका वह उपयोग क्या करते हैं यह भी विचारणीय समस्या है।

मूल्यवान विदेशी वस्त्र पहिनते हैं, परन्तु वदन पर झुर्रियाँ पड़ी हुई हैं। युवा अवस्था को उन्होंने गलियोंमें वरवाद किया है। विधवा और अनाथों का समूह पशुओं की भांति दिन विता रहा है। आगामी संतति खराव होरही है यह तो समाज की सामान्य अवस्था है। विशेष परिस्थित यह है कि लोग रोजगार धन्दों में निपुण हैं मोटरों में उड़े फिरते हैं रुपया कमाते हैं मन्दिरों में नाम मात्र को चलेगये तो खैर नहीं तो इसकी भी उन्हें जरूरत नहीं, खानपान तथा कृत्याकृत्य का भी कोई विचार नहीं। यदि जैनियों से कोई पूछे कि वह क्या उन्नति कर रहे हैं तो मेरी समझ में नहीं आता कि वह क्या उत्तर देंगे; उन्हें जान लेना चाहिये कि धर्म उनके प्राणों के साथ है। चाहे वे घरमें हों या मंदिर में। उन्हें संगठन करके वैयक्तिक शक्तिको दृढ़ करना चाहिये, अहिंसात्मिक भावों से आत्माओंको अलंकृत करना चाहिये। प्रजा पर राजा की और राजा पर प्रजा की शक्ति शासन करती है। सामाजिक शक्तियों में समयानुकूल परिवर्तन करने में हर्ज नहीं। यदि हम अपने धर्म को नष्ट करदेंगे तो वह हमें नष्टकर देगा और यदि हम धर्म की रक्षा करेंगे तो हमारी रक्षा होगी।

आध्यात्मिक वस्तुओं पर विचार करना पारलौकिक धर्म है; और स्त्री वच्चों की शिक्षा, रक्षा के साधन जीवननिर्वाह कार्य यहलौकिक है लेकिन धर्म और समाज को एक वनाने की आवश्यक्ता है। इसी से सामाजिक वल प्राप्त होगा। चार पांच लाख की संख्या वाला आर्य समाज का उदाहरण हमारे सामने है, कि वह धर्म और समाज को एक मानते हुए २२ करोड़ ईसाई मुसलमानों को हवा समझते हैं

मनी भावना है कि आत्मरक्षा की शक्ति प्रत्येक समाज में आजाय। हमारे बच्चों और स्त्रियों की ओर कोई न देख सके। बौद्ध धर्म आकाश तक उठा परन्तु इसका अस्तित्व भारतवर्ष से नष्ट होगया जैन धर्म कई वार उठा और दवा दिया गया परन्तु इसका अस्तित्व अवतक विद्यमान है। क्यों? जैनियों ने राज्यमदसे प्रजाको पीड़ा पहुंचाने की चेष्टा कभी नहीं की, इसी मार्ग पर उनके आचार्यों, महा पुरुषों तथा सम्राटोंने सहिष्णुता के साथ अहिंसा धर्म का पालन किया। इसलिये वह प्रत्येक आत्मामें उसी प्रकार रमा रहा जैसे शरीर के भीतर रक्त। अहिंसा धर्म का धारण करना प्रत्येक भारत वासी का कर्तव्य है, क्योंकि आत्मा और देश की रक्षा के निमित्त वह एक मात्र हथियार है।

इसके बाद प्रोफेसर होमी के भजन हुये, पुनः ला० भोलानाथ दरखशां को २ बा० शिवलालजी को १ और मि० नेमीनाथ शांतिनाथ अगरकर को १ उत्तमोत्तम ट्रैक्ट लिखने के उपलक्ष में मान पत्र दिये गये, फिर सभापतिजी का भाषण हुवा, जिसमें उन्होंने कहा कि मैं पहले भी इस विषयपर विचार कर रहा था परन्तु कुछ निश्चय नहीं कर सका था आज मित्र मण्डल के कार्य और वीर जन्मोत्सव की कार्यवाही को देखकर मैंने इस जटिल प्रश्न का निश्चय कर लिया है कि अब समय आगया है कि धर्म प्रभावना का रूप बदल दिया जाय। विदेशी विद्वान् जैन सिद्धान्त का अन्वेषण करने आते हैं, उसके धर्मतत्वों से ज्ञात होना चाहते हैं, भारतवासियों को भी जैन साहित्य जानने की उत्सुकता है, परन्तु भारतवर्ष में हमारी ऐसी कोई संस्था न थी जो इस त्रुटि को पूरा कर सके, जैनमित्र मंडल इस कमी को मिटाने के लिये स्थापित हुआ, और इसने अपने कर्तव्य पालन तथा उद्देश्य पूर्ति का बहुत कुछ प्रयत्न किया है. इसका योरोप और अमेरिका के २५० विद्वानों से पत्र व्यवहार हुआ है. स्वदेश और विदेशों में यह

घोषित कर दिया है कि जैन धर्म पृथ्वी पृष्ट पर अपना अस्तित्व रखता है।

अपरिचित होने के कारण जो झूंटे लांछन इस पवित्र धर्म पर जो लोग लगाते थे उनका लगभग निराकरण हो चुका है, परन्तु खेद है कि जैन समाज ने इस परम उपयोगी संस्था को अभी समुचित रूप से नहीं अपनाया मेरे विचारसे जैनधर्म की सच्ची प्रभावना का साधन जैन मित्र मण्डल है, समाज को विवाहोत्सवों तथा अन्य दान देने के समय मण्डल को न भूलना चाहिये, देशी और विदेशी विद्वान हम से सहयोग करने को उद्यत हैं हमारा कर्तव्य है कि उदार चित्त होकर उन्हें धर्म धारण करने का सुभीता देना चाहिये।

भारतवर्ष की राजधानी देहली इस प्रचार कार्य के लिये अत्यंत समुचित स्थान है, धर्म प्रचार के लिये वर्तमान समय वहुत ही अनुकूल है, ट्रैक्टों के द्वारा प्रचार करने के अतिरिक्त उपदेशकों द्वारा भी देश विदेशों में प्रचार करना उपयुक्त है, अपना जीवन साधारण बनाओ, और सजावट शृंगार का खर्च घटाओं, विवाहादि संस्कारों में हाथ रोक कर खर्च करो, मेले ठेले पूजा आदि में द्रव्य कम लगाओ, दिखावटी रथ घोड़ों, खेलतमाशों में रुपया न लुटाओ वल्कि जो दीप्तमान प्रकाश (ज्ञान भण्डार) तुम्हारे हाथ में है उसे दूसरों के पास जो अंधकारों में पड़े हैं अवश्य पहुंचाना चाहिये, यही सच्ची प्रभावना है।

खेद के साथ कहना पड़ता है कि हम लोगों में एक दल ऐसा है कि स्वयं तो कुछ करने के योग्य नहीं परन्तु जब दूसरे लोग धर्म प्रभावना का कोई कार्य करते हैं तो वह अपनी कूटनीतियों से उस धर्म प्रचार में रोड़ा अटकाते हैं जिससे कार्यकर्ताओं को सफलता प्राप्त करने के लिये दुगुणी शक्ति लगानी पड़ती है।

जैन गज़ट में यह पढ़कर कि वीर जयन्ती मनाना पाप है, मुझे विस्मय हुआ और मैंने उसके अक्षर २ पर विचार किया परन्तु मुझे तो वह लेख ईर्षा भावों से भरा हुवा निस्सार ही प्रतीत हुआ, जिसका उत्तर ट्रेक्ट रूप से शीघ्र प्रकाशित होगा। मैं समस्त उपस्थित जनता से अनुरोध रूप से कहूंगा कि ऐसे विष फैलाने वाले लेख कभी पढ़ने और सुनने नहीं चाहियें। मित्रमण्डल द्वारा जो धर्म प्रभावना हुई है उससे प्रभावित होकर एक तुच्छ मात्रा (१००) को इस समय भेट करता हूं और भविष्य में भी इस संस्था की जो सेवा बनेगी उसे धर्म समझ कर करता रहूंगा।

इसके बाद संस्कृत महावीराष्टक और दरख़शां कृत निम्न प्रार्थना पढ़कर सभा १ बजे रात्रि को वीरस्वामी की जैकारों के साथ समाप्त हुई। मण्डल के मन्त्री ने आगंतुकों तथा अन्य योग्यजनों को धन्यवाद दिये।

है आज दिवस शुभ, धन्य घड़ी, महावीर प्रभु अवतारे हैं,
त्रिशला ने कोख सफल मानी, सिद्धार्थ हर्ष सरशारे हैं।
पुर परिजन मन आनन्द भये, नभगूंजत जय २ कारे हैं ॥१॥
घर २ में मंगल गान भये, दर २ नौबत नक्कारे हैं।
कुण्डलपुर कीरति आज जगी, महावीर चरण शिरधारे हैं ॥२॥
इम सुर नर मुनि खग कहत भये, प्रभु सर्जीवन उनहारे हैं।
भव व्याध मिटावन हारे हैं, भवजीवन के रखवारे हैं ॥३॥
महावीर जयन्ती उत्सव में, सब भाई मित्र पधारे हैं।
पण्डितजन मन उपदेश दिये, भवजन के कष्ट निवारे हैं ॥४॥
मन भ्रातृ प्रेम में पूरित है, घट सन्मत दर्श निहारे हैं।
इक पंथ दरख़शां कारज दो, सो धनधन भाग हमारे हैं ॥५॥

॥ इतिः शुभम ॥

परिशिष्ट

क्रम-सूची

पृष्ठ

१—स्तुति—लक्ष्मीप्रशादजैन ५७

'जयन्ती जिनराजकी'

पं० महावीरप्रशादजीजैन ५८

श्री०भगवन्तगण पति गोयलीय जैन ५९

पं० गंगाविष्णु पाण्डेय ५९

ला० कन्हैयालाल जैन कस्तला ५९

पं० विभूति पाण्डेय ६०

ला० स्वरूपचन्दजैन सरोज ६०

ला० राधेलाल अग्रवाल ६१

श्री० बटुलाल बटु ६२

विद्यार्थी रामकुमारजैन ६३

श्री० लक्ष्मीचन्द्रजैन ६३

श्री० कल्याणकुमारजैन शशि ६४

ला० दलीपसिंह कागजी ६५

२—"दिन की न रात की"

श्री० भगवन्त गणपतिगोयलीय जैन ६५

पं० गंगाविष्णु पाण्डेय विष्णु ६६

स्तुति—

हुआ दिव्य सारा भुविमण्डल था नूतन परिवर्तन आज।
चहुंदिश में अद्भुत अतुल्य था सुरमणीयता का सम्राज ॥
था भुविमनहारी नवीनता का सकल दिगन्त में राज।
जाती थी जिस ओर दृष्टि आनन्द उल्लासी रही विराज ॥

(२)

इसी चैत्रकी शुक्ल त्रयोदशि गाते उषा पक्षिगण गान।
विरह मुदित सरवारिज मुखपर छाईथी अद्भुत मुसकान॥
ऊगा वीर बालरवि जगको किया सुउज्वल दीप्ति प्रदान।
हुई शांतिप्रद सकल लोकको जिसकी तमहर ज्योतिमहान॥

(३)

शीतल सुरभि पवन बहताथा अखिलविश्वमें सुखद सुमंद।
गगनमार्ग से रत्नवृष्टि करतेथे सुर खग गण सानन्द ॥
षटऋतु केले रुचिर पुष्पफल आये अभिनन्दक सुरवृन्द।
प्रमुदित होकर गुण गाते थे सारे जगमें मुनि वृन्द ॥

(४)

छाया हर्ष अपार विश्व में लिया महावीर अवतार।
देकर सद् उपदेश लोक को किया अंहिसा धर्म प्रचार ॥
दिया प्रेम आदेश लोक में पापों का करके संहार।
फहराई जिन धर्म पताका हुआ दूर सब अत्याचार ॥

(५)

हे त्रिशलानन्दन करुणाकर है तुम ही पर जग की आस।
तुमही बन्धु मित्र हो जग के तुमही पर जग का विश्वास॥
रहे जिनेश भक्ति तेरी नित तेरे वचनामृत की प्यास।
हे शिव 'लक्ष्मी' पति इस अंत स्थल में तेरा रहे निवास॥

लक्ष्मीप्रसाद जैन

कुण्डल नगर पती, सिद्धारथ राय धन्य ।
त्रिशला देवीजी माता, वीर महाराज की ॥
देव देवी नर गण, सब ही प्रमोद धार ।
प्रशंसा करत महा, वीर जग ताज की ॥
वर्द्धमान महावीर, वीर अतिवीर प्रभु ।
सनमती नाम करो, भगती जगराज की ॥
क्रोध मान माया लोभ, चित्त से निकाल डालो ।
सर्व मिल मनावो, जयन्ती जिनराज की ॥

भगवान की वानी ।

जन्म मर्ण रोग हरे, वाल वृद्ध दशा टरे ।
राग द्वेष नष्ट करे, शिक्षा जिनराज की ॥
कर्म की गुलामी से ये, छुटावै सुतंत्र करे ।
वीतराग भाव धरे, मूर्ति महाराज की ॥
जैन वैश्य आर्य एक, सत्य में करो विवेक ।
फूट को हटादो कहे, वानी जिनराज की ॥
प्रेम मिल सब करो, वीर बनो वैर हरो ।
मित्र मंडल करो, जयन्ती जिनराज की ॥

* सवैया *

पराधीन कोई नहीं, सब ही स्वतंत्र जीव ।
करे उपदेश यही, छवी महाराज की ॥
ध्यान जिनराज का सा, सबही लगावो वीर ।
शांती मुद्रा किये पावे, पदवी स्वै राज की ॥
चैत्र शुक्ला त्रियोदशी, सबको बताने आई ।
वीर प्रभु जन्म लियो, धन्य घड़ी आज की ॥
इन्द्रादिक करे भक्त, इन्द्रप्रस्थ नाम सत्य ।
भारत में सुख देवे, जयंती जिनराज की ॥

महावीरप्रशाद ।

जयन्ती जिनराज की ।

बहते चौधारें आंसू आंखों से विवेकियों की,
देख टेकियों की टेक, मूढ़ता समाज की !
कहां सारा विश्व जैन धरमी था एक दिन,
कहां कुछ लाख जैन-संख्या है आज की !
नित्य घटते हैं बावीस जैन, मरते हैं—
या कि भेंट होते हैं भीपण रिवाज की !
डेढ़ सौ बरस पीछे श्रावक मिलेंगे कहां ?
सुर ही मनायेंगे जयन्ती जिनराज की !

—भगवन्त गणपति गोयलीय ।

(जयन्ती जिनराज की)

चारों ओर तोरण लगे हैं औ सजे हैं द्वार,
देती दिखलाई है निराली छवि आज की ।
मंडप सजा हुआ है, होरहा है गग्न वाद्य,
बैठे 'विष्णु' विज्ञवर, धूम काम काज की ॥
दे रहे हैं भाषण सुवक्ता उपदेशप्रद,
मंडप में भीड़ भाड़ है सभी समाज की ।
जैन मित्र मंडल, बड़ा दरीबा देहली का
प्रेम से मना रहा जयन्ती जिनराज की ॥

—गंगाविष्णु पाण्डेय विद्याभूषण "विष्णु"

"जयन्ती जिनराज की"

दया के निधान त्याग-प्रतिमा समान भग-
वान वीर ने तजी विभूति सुखसाज की ।
अहिंसा-प्रचार किया, जगत उद्धार लिया
पाया विश्व सारा त्याग माया निज ताज की ।

इसी के महान गुण-गौरव बखान हेतु
शक्तियाँ लगी हैं आज उमड़ समाज की।
मधु स्मृति-दायक जागृति-परिचायक है
उन्नति-विधायक "जयन्ती जिनराज की"॥
कन्हैयालाल जैन 'कस्तला'।

जयन्ती जिनराज की।

आज कैसी छाई शुभ्र सुखमा नगर बीच,
चहूं ओर बगर रही शोभा सुख साज की।
विद्युत प्रकाश छाये जिनको उजास देखि,
फीकी पड़ जात जोत जासों दिन राजकी।
बड़े बड़े वीर धीर साहसी सुजान बैठे,
बैठी है समाज एक ओर कविराज की।
देवन समाज लिये मानो देवराज आये,
आज यहां देखन 'जयन्ती जिनराज' की।
पं० विभूति पाण्डेय

जयन्ती जिनराज की।

त्रिसला ने नंद जायो विश्वमें अनन्द छायो,
वृन्दारक वृन्द गायो धन्य घड़ी आज की।
नगर निवासिन की निरख सुरम्यताई,
सकुचानी सुखमा सुरेश के समाज की॥
दौरे दिव्य दर्शन को भव्य जन भक्ति भरे,
सुध बिसराय सब निज निज काज की।
धारें हैं बसन्ती चीर लेके वैजयन्ती वीर,
बोलति हैं जयति जयन्ती जिनराज की॥
ध्यानियों का ध्येय यही ज्ञानियों का ज्ञेय यही,
अमित्रों का श्रेय यही शोभा सुरराज की।

शूरों की है शान यही स्वर्ग का विमान यही,
सुकृत की खान जान मानव समाज की ॥
हिंसा की विराधना आराधना उदासियों की,
साधना सुफल सिद्ध अर्थ अधिराज की ॥
विश्व की विभूति वैजयन्ती है विरागियों की,
धर्म की जयन्ती है जयन्ती जिनराज की ॥

स्वरूपचन्द्र जैन 'सरोज'

"जयन्ती जिनराज की"

वाणी सुखसानी सरसानी सत्य शील मांहि,
महिमा अपार पार सींवाँ सुरराज की ।
जीव हित चित्त की जलान को सुधा में पगी,
जो है अहिंसा छवि प्रतिभा दिनराज की ॥
शान्ति के सरोवर में बोरथो संसार सकल,
झाँकी दिखलाई तप ब्रह्म सुख साज की ।
त्रिशला के अंक के मयंक की अपूर्व प्रभाः,
स्मरण दिलाती है जयन्ती जिनराज की ॥ १ ॥

सुःख सरसावन को चित्त हरषावन को,
सुधा वरषावन को उत्पति स्वराज की ।
शान्ति उपजावन को ज्ञान उर छावन को,
ऐक्यता बढ़ावन को समता समाज की ॥
अज्ञात नशावन कों लावन विचार धार,
पावन उपदेश ज्यों हाँक मृगराज की ।
हिंसा मिटावन फैलावन महिं आत्म तत्व,
आई मन भाई है जयन्ती जिनराज की ॥ २ ॥

द्वैत भाव टारन को शत्रु पट मारन को,
पतित उबारन को उपमा जहाज की।
प्रेम विस्तारन को रिपु ताप जारन को,
धारन विवेक मात्र भापा हिय राज की॥
विनय उचारन को ध्यान उर धारन को,
आतमा पुकारती है सकल समाज की।
जौन पथ धारे हैं पधारे पूर्व 'दिव्य' तेज,
हमें सिखलाती सो जयन्ती जिनराज की॥ ३॥

हिंसा को अखण्ड राज छायो वन विश्व देख,
आवैं वीर केशरी जै बोलौं सरताज की।
दिव्य उपदेश की दहाड़ सों भगावैं पाप,
लवा से लुकावैं ज्यों झपेट वर बाज की॥
शान्ति की सुगंध पुण्य पुष्प सों उड़ावैं आप,
बंधन छुड़ावैं काट पाश यमराज की।
एही आश धारे प्रति साल प्यारे आप ही के,
स्वागत के हेत है जयन्ती जिनराज की॥ ४॥

राधेलाल अग्रवाल

"जयन्ती जिनराज की"

नाशन को हिंसा सर्व, आये महावीर धीर,
धर्म के प्रचार माहिं, इच्छा नहीं ताज की।
कटती हैं गौव्वें अहा! देश में अहिंसाव्रती,
लग्न क्यों विसारी मित्र, ऐसे शुभ काज की॥
कर्म के विधान वाले, कर्म को दिखाओ विश्व,
कर्म के विहीन वृथा, माया सुख साज की।
भाखैं "वटु" बन्धुवीरो, जैन धर्मधारी सुनो,
कोरी न मनाओ या, जयन्ती जिनराज की॥ १॥

दुखित विचारी वंश, विधवा विलाप मारैं,
होते व्यभचार भ्रूण हत्या ओट लाज की।
बाल वृद्ध व्याह से, निराली दशा नारिन की,
यवन कुजाती जातीं, मारी फिरैं गाज की॥
गणिका छबीली बनैं, तीर्थन में जाय देखो,
लिखती हैं सभी यही, पत्रिकायें आज की॥
भाषैं "वटु" विश्वनाथ, प्रार्थना विनीत मेरी,
जैनिन जगावै या जयन्ती जिनराज की॥ २॥

वटूलाल (वटु)

"जयन्ती जिनराज की"

पाप, शाप ताप हारि, भव्य जीव मोदकारि,
चिन्ह अवतार प्रभु वीर सिर ताज की।
घोर तम नाशिनी, सुमारग प्रकाशिनी,
अहिंसा रस वासनी, सुजैन समाज की॥
मंडित मंडित मही मंडली महान्,
और जैन मित्र मंडल की साधक सुकाज की।
क्षमावारि वर्षिणी, अहिंसा मत पर्शनी,
और "राम" मन कर्षिणी जयन्ती जिनराज की॥१॥

विद्यार्थी रामकुमार जैन

जयन्ती जिनराज की

(१)

धधक उठी है द्वेष, दम्भ दुष्टता की आग,
झुलस गई है कान्ति-कोमल समाज की।
अस्त व्यस्त हुए तार-तार प्रेम-वीणा के हैं,
धूम यहां धड़ाके से मची फूट राज की॥

हिंसा अरु अहिंसा का भेद-भाव मेट चुके,
भूल के परार्थ पड़ी चिंता निज-काज की।
भुला दिया वीर का उदार विश्व-प्रेम पाठ,
आये हो मनाने औ "जयन्ती जिनराज की" ???

(२)

सकल कला में जो प्रवीण थे, धनी थे और,
हेकड़ी बड़ी थी जिन्हें कभी राज-ताज की।
तरस रहे हैं नाथ ! भारत के पूत वही,
हाय ! आज एक एक कणिका को नाज की ॥

वीर ! महावीर ! पुनः करुणा हो ऐसी कुछ,
धाक जमे देश के पुराने साज-बाज की।
भारत के भाग जगें, दुःख शोक दूर भगें,
फिर मने शान से "जयन्ती जिनराज की"।

लक्ष्मीचन्द्र जैन
बी. ए. आनर्स विद्यार्थी।

जयन्ती जिनराज की।

जान के असार संसार दुख निहार सब,
ममता विसार क्षण माँहि सर्व साज की।
दीक्षा ली जाय शीघ्र लोक शिक्षा के हेतु,
रक्षा करने को जैन धर्म के जहाज की
सद् उपदेश द्वारा भेद भाव दूर कर,
सरिता बहाई विश्व माँहि साम्य राज की।
है यह उन्हीं के जन्म दिन का सुपर्व आज
सब ही मनाइये "जयन्ती जिनराज की"

—कल्याण कुमार जैन शशि

जयन्ती जिनराज की

आंधी मत मतान्तरों की चल रही थी जिस समय,
पतित दशा थी वहु मानव समाज की।
यज्ञों में होते थे हजारों मूँक पशु वली,
इसी को समझें थे नर वात धर्म काजकी।
ऐसे ही समय माहिं जन्मे श्री वीर प्रभु,
देखी दशा विश्वकी तो छोड़ी सुधि राजकी।
याही से मना रहे हैं आज हम सर्व मिल,
खत्र ही मगन है जयन्ती जिनराज की ॥१॥

वाल ही ते ब्रह्मचारी क्रोध लोभ मोह हारी,
माया तृष्णा विदारी छोड़ी आस सुखसाज की।
दया मय उपदेश दियो पाप सव क्षय कियो,
यज्ञ से वचाए पशु रक्षा की समाज की।
पुनः शेष कर्म टार वर लीनी शिव नारि,
अनन्तज्ञान दर्शन धार पदवी पाई सिद्धराज की।
उन्हीं के गुन गाने को या वोही पद पाने को,
मना रहे हैं हम भी सव जयन्ती जिनराज की॥२॥

दलीपसिंह जैन कागजी।

दिन की न रात की।

जीवन में नौ जीवन भरता है जन्म दिन,
करता है पागल न सुध रहती गात की।
ऐसा जी होता है वढ़ता ही चला जाऊं,
देख रेख वीर! तेरे चरण-निपात की।
मरूं निकलंक सा, या फिर अकलंक वनूं,
एक भी न रहने दूं पातकी न घातकी।

भूख प्यास की कि शीत ग्रीष्म की कि पावस की,
फिकर नहीं है ! दिन की न रात की ।

भगवन्त गणपती गोयलीय ।

दिन की न रात की

ज्ञानी जीतते हैं कर्म शत्रुओंको कर्म से ही,
ज्ञानी को कहीं न मार सकता है घातकी ।
ज्ञानी का सभी से योग होता रहता है,
और ज्ञानी को न होती प्रीति भ्रातृ मातृ तात की ।
ज्ञानी एकसा सभी को देखते हैं 'विष्णु कवि',
ज्ञानी को न चिन्ता होती है किसी भी बात की ।
ज्ञानी ज्ञान में ही नित्य सोते और जागते हैं,
ज्ञानियों को होती फिक्र दिन की न रात की ।

—गंगाविष्णु पाण्डेय विद्याभूषण "विष्णु"

दिन की न रात की

वीरन में वीर अरु धीरन में धीर बड़े,
साहसी अपार हैं प्रतिष्ठा जाके बात की ।
राजन के राजे सुकुमार वर्धमान जी,
लीन्हों औतार भार दूर करन जात की ।
दया संचार कियो जैन मत प्रचार कियो,
भारत की आरत मिटायो सब घात की ।
मग्न हुए एक ज्ञान धर्म के प्रचारन में,
रही सुधि नाहिं कहुं दिन की न रात की ।

पं० विभूती पाण्डेय विद्यार्थी

दिन की न रात की

चांदनी समेट चारु-चन्द्र चले अस्ताचल,
प्रकट हुई न अभी लालिमा प्रभात की।
दिव्य ज्योति से दिशायें सहसा दमक उठीं,
पोर-पोर विकसित हुई फूल-पात की ॥
तीन लोक-नेता, कर्म-जेता वीर जन्यो जिन,
धन्य वह कोख पूज्य त्रिशला-सी मात की।
आली ! आज कैसी विश्व-माली ने बनाली सब—
शोभा ही निराली है न "दिनकी, न रात की"॥

लक्ष्मीचन्द्र जैन बी.ए.(आनर्स) विद्यार्थी

दिन की न रात की

आये महावीर सूर्य की भी ज्योति फीकी पड़ी,
छटा हुई अनुपम आज के प्रभात की।
कोट रवि तेज को निचोड़ कर अर्क किया,
उस से हुई है सृष्टि महावीर गात की ॥
चन्द्र को निचोड़ तोड़ फोड़ कर नख बने,
ऐसी ऐसी अजब कथा है हर बात की।
हुआ वीर जन्म जग मोद में मगन हुआ,
चिन्ता न किसी को रही "दिन की न रात की" ॥

साहित्यरत्न—दरबारीलाल न्यायतीर्थ

दिन की न रात की

ज्ञान का प्रकाश किया, जाति धर्म देश अरु,
आपना कल्याण किया, सुध नहिं गात की।
ऐसे वीर धर्म धीर, नेता, ज्ञाता, कर्म-चीर,
लोग कहें महावीर पक्ष अनेकांत की ॥

बाल ब्रह्मचारी भये, जग को अनित्य जान,
तप तपे ज्योति भई सोने कैसी धात की।
लोक का सितारा एक, महावीर स्वामी तुही,
हित-बात कहते देखी "दिन की न रात की"

सिद्धसेन जैन गोयलीय

दिन की न रात की

पावन परम प्रभु प्रगटे पुहुम पर,
प्रमुदित भये सब पुन्यवान पातकी।
पतनी पुरंदर की पहुंची प्रसूत गृह,
विनती करत कर जोर जिन मात की॥
मोद भरी मन में उठाय शिशु गोद लीन्यो,
छवि स्वाति बुंद की भई है चारु चातकी।
सुध रही बात की न वस्त्र की न गात की,
न संध्या की न प्रात की न दिन की न रात की॥१॥

विश्व की विभूति सब तुच्छ जान दीनी त्याग,
मुक्ति स्वाति बुंद की है चित वृत्ति चातकी।
ठान लीनी घोर तप कर्म की मन माहिं,
जान लीनी जुक्ति क्रोध आदि के निपात की।
बैठे पद्मासन हुतासन से तेजवान,
चिन्ता रही शीत की न आतप न वात की।
सुध तात मात की न वस्त्र की न गात की,
न संध्या की न प्रात की न दिन की न रात की॥२॥

ला० सरूपचन्द्र जैन सरोज

दिन की न रात की

एरी आलि बताती सही रजनी निराली क्यों,
काहे दिशाओं ने सारी धारी अवदात की।
गगन अमल भयो, कांच सम महीतल,
और बिन निशि काहे, लखात प्रभात की ॥
चंद्रिका है फैली, पर, शोभाहीन चंद्र हुवा,
वृष्टि होवे झम झम, सुधा-संपात की।
उगी दिव्य जोत कौन, लजायो दिनेस जाने,
जान न परत मित्र दिन की न रात की ॥१॥

मंद मंद वायु बहे, सुरभि से लिप्त होय,
शीतल प्रवाह जाको, नाशे पीर गात की।
फूले फल ऋतु षट, ताप दूर हुए सब,
वैर पाप छोड़ छाड़, एक हुए पातकी ॥
गाय सिंह-शिशु और, सिंहनी गाय-शिशु को,
मुदित पिलावे दूध, नाशे भाव घातकी।
अहिंसा-कवच धारे, वीर-सूर्य पधारे ह्यां,
जान न परत मित्र दिन की न रात की ॥२॥

त्रिशला के पुत्र भयो, जग में आनंद हुयो,
रोग, शोक, ताप आदि, नाशे उतपात की।
दीन-बंधु दीनानाथ, जग में पधारे आज,
देव कहें मिलि सब, जै हो जग तात की ॥
दीन, मूक, जीवनिका, भाग्य-भानु उदै हुवा,
चहुं ओर वीचि उठी, शुद्ध प्रेम-बात की।
अहिंसा कवच धारे, वीर सूर्य पधारे ह्यां,
जान न परत मित्र दिन की न रात की ॥३॥

रामदास जैन

दिन की न रात की

दुर्लभ नर जन्म पाय, व्यर्थ न गँवाय भ्रात !
ममता वश धाये धाय, बनो मती पातकी ॥
सद्गुरु की शरण धार, सप्त तत्त्व को विचार,
श्रद्धा कर पर-विभिन्न, शुद्ध आत्म-जाति की ॥
बनकर विज्ञानी, 'मणि' ! राग, द्वेष, मोह त्याग
प्रज्वलित कर ध्यान अग्नि, घातो अरि घातकी॥
होगा तब शीघ्र वह, अनन्त ज्ञान रवि प्रकाश,
कल्पना हू नहीं जहां, दिन की न रात की ॥

पं० मुन्नालालजी जैन विशारद 'मणि'

दिन की न रात की

चारों ओर घोर अंधकार का न छोर जब,
छारही थी घटा घन घोर बरसात की ।
आसमान मध्य मंडरा रहे थे पाप मेघ,
बिजली चमक रही थी घात रक्त पात की ॥
ऐसा घोर अंध अज्ञान का समय था जब,
नैया पड़ी थी मंझधार मध्य ज्ञान की ।
नगणि को धीर वीर लाये ऐसे ज्यास मे,
सुध भी रही थी उन्हें "दिन की न रात की" ॥

कल्याणकुमार जैन "शशि"

दिन की न रात की

करते थे चारों ओर पाप ताप रम्य राज,
हरते थे नित्य निर्बलों के प्राण 'पातकी' !
होमते थे यज्ञ मांहि मूक पशुवों को मार,
वाहिनी बहा रहे थे रक्त धार 'घातकी' !

निरख अन्याय ऐसा वीर भगवान तव,
ममता विस्मार पर हेतु निज 'गात' की !
दीन हीन हेतु लवलीन वे हुये थे ऐसे,
सुधि भी रही थी उन्हें "दिन की न रात की" !
—कल्याणकुमार जैन 'शशि'

"दिन की न रात की"

दिनन परम पवित्र दिन मानों याहि,
नीरन में नीर जैसे गंग नीर कातिकी ।
लीन्हों अवतार महावीर तीरथंकर जू ,
महिमा महान भई त्रिशला सुमात की ॥
मोद के विनोद में भुलानों मन मोद हूको,
धर्म लहरानों थहरानों पाप पात की ।
सिद्ध औ संतन को सुधि न रही आनंद में,
गेह की न देहकी न दिन की न रात की ॥
पं० छाजूरामजी 'छवेश'

दिन की न रात की

घोर पाप ताप अभिशाप बढ़ा भूतल में,
अत्याचार हिंसा फैली देश हुआ पातकी ।
तम झंझा बही, मलया निल न रही, मही-
दग्ध हुई, पंखुरियां जली जल जात की ॥
जब अंधकार का प्रसार चहुं ओर हुआ,
घोर चोट चलीं जब घात प्रतिघात की ।
भूमि-भार हरने को वीर अवतार हुआ,
ज्योति एक प्रगटी जो 'दिन की न रात की' ॥१॥
जगत में पाप-अंधकार मयी रात पड़ी,
बात बढ़ी बलिदान हत्या हिंसा घात की ।

भव्य-भाव भूले, अघ-कर्म्म फले फूले, झूले
काम क्रोध मोह के हिंडोल चढ़ पातकी ॥
तेज पुञ्ज वीर-अवतार हुआ तभी यहां,
सूचना थी मानों पाप-निशा के प्रभात की ।
रवि-प्रभा मात की, मयङ्क-छवि घात की थी—
ज्योति करामात की जो 'दिन की न रात की'॥२॥

कन्हैयालाल जैन कस्तला

दिन की न रात की

आत्म पद लागी चाह, त्याग दीन्हो राज पाट,
मोह की न रेखा रही, तात की न मात की ।
जाके वनखंड बस, भूषण उतारे सर्व,
समता न शेष रही, अपने ही गात की ॥
करते थे हिंसा महा, यज्ञ के विधान लोग,
तोड़न ठानी प्रथा, जीवन के घात की ।
भाखें "वट्टु" महावीर, धर्म के प्रचार मग्न,
सुधबुध होती उन्हें, दिन की न रात की ॥ १ ॥

आज नहि होती दया, जीवन का नाश देखे,
चाहना रही है शेष, मीठे मीठे भात की ।
षोडश संस्कार छूटे, विद्या का अभाव खल,
केवल रही है हा ! सजावट स्वगात की ॥
इन्द्रिन के जीतबे की, गाथा क्या सुनावें तुम्हें,
नारिन को देखिके लगावें दृष्टि पातकी ।
भाखें "वट्टु" मित्र प्यारे, स्वार्थ में रमाने बड़े,
धर्म में न बीते घड़ी, दिन की न रात की ॥ २ ॥

वट्टूलाल (वट्टू)

चिट्ठा जैन मित्रमंडल १ अप्रैल सन् १९२७ से ३१ मार्च सन् १९२८ तक

आय

१०६॥) श्री रोकड़ा बाकी
६९९॥=) आमदनी फीस
३२३॥=) आमदनी दान
३९२≡)। सहायता व बिक्री ट्रैक्ट
६८९) चन्दा जयंती
३८) चन्दा रिपोर्ट जयन्ती
५) आमदनी चंदा जयन्ती वीर निर्वाण सम्वत २४५२
॥≡)। आमदनी व्याज

२२५४=)॥

व्यय

७२०॥)॥ खर्च श्रीमहावीरजयन्ती व वार्षिकोत्सव १२वाँ
११०)॥ रिपोर्टजयन्ती व मंडलखर्च
५४१)॥ ट्रैक्ट प्रकाशनार्थ खर्च
२४॥≡) स्वागत खर्च डाक्टर हैलमोथ वोन ग्लासेनप्प पी.एच.डी.बर्लिन(जर्मनी)
१२-)॥ स्वागत खर्च डाक्टर डवलू शुब्रिंग पी. एच. डी. हम्बर्ग (जरमनी)
७०) वेतन चपरासी
१७६=) पोस्टेज व तार
४५=)॥ स्टेशनरी
२७।=)॥ छपाई
२३)। पुस्तकें
२८।=) फरनीचर
५=)॥। टाइप पर
११।=)॥। किराया तांगा
३॥-)॥। खरीज खर्च

१७९९॥=)॥।
४००≡)। पीपल बैंक में जमा
५४)॥ श्रीरोकड़ा बाकी

२२५४=)॥

आय

१०६॥) श्रीरोकड़ा बाक़ी

६६६॥ ≈) अमादनी फीस

३॥) लाला अतरसैन देहली

१॥) ला० अजितप्रसाद सदर बाजार

६॥) ला० अनूपसिंह कूंचा सेठ

१) ला० अमोलकचंदजी नई सड़क

३।) ला० अतरचन्द चार्टर्डबैंक दिल्ली

६) ला० अमृतलालजी गोहाना

२) ला० अजितप्रसादजी वकीलपुरा

४) बाबू उमरावसिंहजी मंत्री

२) ला० उमरावसिंहजी शर्मा

२) मुनीम उमरावसिंहजी देहली

२॥) ला० उगरसैन न्यू देहली

३) ला० उमरावसिंह टोपी वाले

१॥) ला० उदयचन्द सर्राफ देहली

१) ला० उलफतराय डाकखाने वाले

३) ला० उत्तमचंदजी लीडर हाँसी

३) बाबू ऋषभदासजी वकील मेरठ

६) ला० कँवरसैनजी देहली

४॥) ला० कशमीरीलालजी मुनीम

२) ला० कुँजलाल ओसवाल देहली

३) ला० किशनचंद कपड़ेवाले

१) ला० कपूरचंद सु. चौ. मिट्ठनलाल

॥) ला० कैलाशचन्द कलकत्ता

१॥) ला० कन्हैयालालजी घंटेवाले

३) ला० कपूरचन्द टोपीवाले

व्यय

७२०॥)॥ श्री महावीर जयन्ती व वार्षिकोत्सव १२वाँ

१०) भगतजी दर्जी को
- ६) खारवे पर "जैनमित्र मंडल देहली स्थापित १९१५" का बोर्ड सिलाई
- १) चपरास दो सिलाई
- ३) मोटोज़ के पीछे गाढ़ा व खारवा सिलाई

---

१०)

४०॥) रोशनी खर्च
- ८।) हंडे ६ (१२ बजे तक)
- ४) हंडे २ (सुबह तक)
- २८॥) बिजली खर्च हुई

४०॥)

८) बैजेज़ बनवाई मेम्बरोंकेलिए
- ३॥) गाढ़ा थान एक
- ।-)॥ रंगाई
- २।=)॥ सिलाई
- १॥) छपाई

---

८)

१८) किराया जमीन परेडग्राउंड

१०) सुल्लीमल तबले वाले को

१।।।) ला० किशोरीलाल सिरसा
३) बाबू कामताप्रसादजैन अलीगंज
१) ला० किरोड़ीमलजी तिजारा
४।) ला० गूजरमल सदर बाज़ार
२।=) मुन्शी गुलशनराय हिसार
३) बा०गिरधरलाल डाकखाने वाले
३) मु० गेंदनलालजीगुलमुरादाबाद
५) ला० घमंडीलालजी गोयला
६।।) ला० चम्पालालजी घी वाले
४) बाबू चन्दूलालजी अख्तर बी.ए.
२।।) ला० छुट्टनलालजी फ़्लीडर
२।।) ला०छज्जूमलजी सब्जी मंडी
३) पंडित छुंगामलजी मेरठ
३) ला० जौहरीमलजी सर्राफ़
५) ला० जिनेसरदासजी फ़्लीडर
१।।) ला० जैनीलालजी टोपी वाले
२) ला० जानकीप्रसादजी देहली
४।) ला० जानकीदासजी बी.एस.सी
२।) ला० जोतीप्रसादजी आटे वाले
४।) ला०जोतीप्रसादजी नैशनलबैंक
३) ला० जगदीशप्रसादजी
२) ला० जोगीराम उपखंजाची
२।।) ला० जोतीलालजी गलीअनार
२) ला० जग्गीमलजी पानवाले
३) ला० जोतीप्रसादजी दलाल
४) ला० जुगलकिशोरजी कागज़ी
१।) ला० जौहरीमलजी घी वाले

८१।।) मार्गव्यय विद्वानों का
११।–) ला० प्रभुरामजी
३५) प्रो० पी.वी. अधिकारी एम. ए.
४) पं० तुलसीरामजी काव्यतीर्थ
१०) ब्र० प्रेमसागरजी
११≡) टिकिट बनारस का ब्र० शीतलप्रशाद जी को
१०) पं० हंसराजजी शास्त्री (पधार नहीं सके लेना है)

८१।।)

६५।=)।। प्रचार खर्च
३।।) छपाई निमन्त्रणपत्र ५००
४) कागज़ बैंक पेपर निमन्त्रण पत्र का
३) छपाई १०००हैंडबिल "जैनियों याद रक्खो"
।।।)।। कागज हैंडबिल
५।।) इन्वीटेशन कार्ड २५०
४) छपाईइन्वीटेशनकार्ड
६।।) लिखाई हिन्दी उर्दू पोस्टर

३) ला० जम्बूप्रसादजी नानौता
३) ला० जमनादासजी सुराना
३) ला० जोतीपरशादजी सोनीपत
३) ला० जुगमन्दरदासजी सिवहारा
३) ला० मुन्नूलालजी ए. एस. एस. साँची (भोपाल)
३) ला० डिप्टीमलजी जैन बी.ए.
३) ला० तिलोकचन्दजी देहली
१।।) ला० दीवानचन्दजी गोटे वाले
२।) ला० देवसैनजी पंसारी
३) ला० दलीपसिंहजी कागजी
।।) ला० दीपचन्दजी गली अनार
१।।।) ला० देवीसहायजी रोशनाईवाले
३) ला० दौलतरामजी कपड़े वाले
२) ला० धनपालसिंहजी गली पहाड़
१) ला० नंदकिशोरजी गुलियां
१३) बाबू नत्थनलालजी धर्मपुरा
३) न्यादरमलजी सर्राफ देहली
३) ला० निहालचन्दजी कटड़ा मशरू
१) ला० नानकचंदजी मालीवाड़ा
३) ला० नत्थूमलजी रईस बरनावा
२।) ला० नाहरसिंहजी सरनावा
४।।) बाबू न्यामतसिंहजी हिसार
१) ला० नेमीचन्दजी मेरठ
३) ला० नवलकिशोर रईस कानपुर
१) ला० निधानसिंह [illegible]
५।।) बाबू प्रेमचंद पंजाब नेशनल बैंक

३।।।=) कागज पोस्टर
५) छपाई पोस्टर दोनों
४।।-) कागज प्रोग्राम
२।) छपाई प्रोग्राम प्रथम दिवस
२।) छपाई प्रोग्राम द्वितीय दिवस
२।) छपाई प्रोग्राम तृतीय दिवस
२।।।) छपाई कागज प्रोग्राम अंग्रेजी तृतीय दिवस
४) कागज मानपत्र का
२।≡) लिफाफे
१।।।) लिखाई छपाई उर्दू सरक्यूलर
३) छपाई अंग्रेजी सरक्यूलर
२) छपाई हिंदी सरक्यूलर

६५।=)।।

१२।।≡) तार निम्नप्रकार गये
।।।≡) पं देवकीनन्दनजी को
१।।।-) पं० बाबूराम व बैरिस्टर चम्पतराय जी को
१=) मास्टर उग्रसैन जी को

४) ला० प्यारेलाल गन्दा नाला
३) पन्नालाल स्टेशनर देहली
२) ला० प्यारेलाल कशमीरी गेट
२।।) ला० फिरोजीलाल सर्राफ
१।) ला० फतेहचन्द ड्राफ्टस्मैन
१) ला० फूलचंद गली पीपलवाली
३) ला० फेरूसिंहजी आगरा
७) ला० बिशनचन्दजी सहायकमंत्री
४) ला० बनारसीदास प्रेसवाले
२।) ला० बनारसीदासजी आडीटर
८) ला० बिरखूमलजी धर्मपुरा
३) ला० बिशम्भरदासजी खजांची
२) ला० बाबूरामजी छत्ता शाहजी
३।) ला० बलदेवसिंहजी चौधरी
२।) ला० बिशम्भरनाथजी मुनीम
१।) ला० बिशम्भरदासजी चाह रहट
२।।।) ला० बनारसीदासजीनहरवाले
६) ला० बाबूमलजी जौहरी
।।) ला० बांकेलालजी कशमीरीगेट
।) ला० बद्रीदासजी खजांची
६) ला० बनारसीदासजी सूतवाले
५) बाबू बिशम्भरसहायजी

सब्जी मंडी

।।) ला० बाबूरामजी सु० लाडलीदास
२।।।) ला० बनवारीलाल नाईवाड़ा
।) बाबूरामजी सुपुत्र बहालसिंह
९) ला० बाबूरामजी सहारनपुर

१) ब० शीतलप्रशादजी ने
इटावे दिलाया
१०।।।−) पत्रोंको जयन्तीसमाचार

१५।।≡)
७५।।।≡)। भोजन आदि पर
९।।।) मटकने २४००
।।−) प्याले १५०
।) गोल एक
।।) मटके ६
१०।) घी
९) वेतन रामेश्वर ब्राह्मण
४।। रोज का
९) कहार ४ ३ दिवस तक
८) कहार दो ४ दिवस तक
२।।=) चावल ६।। सेर
१।) ।। दाल अड़ड़ उड़द
६) आटा ।।।) ६ सेर
१−)। मसाला बसन्तराय
१≡) ।। मसाला देवसैन
२−) । दही रबड़ी
३≡) दूध
१।।।=) चटाई तीन
१=)।। गाढ़ा
।।=) साबुन तेल
१।।−)।। लकड़ी
=) झाड़ू

२) ला० बिहारीलालजी अर्जीनवीस
३) ला० बैनीलालजी मुख्तार बुलन्दशहर
३॥) बाबू बलवीरचन्द वकील मुजफ्फरनगर
३) ला० बनारसीदासजी बड़ागांव
१॥) ला० विशम्भरदासजी पानीपत
३) दयासागर पं० बाबूरामजी आगरा
१२) चौधरी बैजनाथजी क्वेटा
२) ला० भैरोमलजी मालीवाड़ा
४॥) ला० भगवानदासजी सिरसा
३) ला० भूषणलाल रामपुर
२) बाबू भगवानदासजी एम.ए.
६॥) ला० महावीरप्रशादजी पंजाब नैशनल बैंक देहली
३) ला० मीरीमलजी सादेकार
२) पंडित महावीरप्रसादजी
७) ला० मानकचंदजी खण्डेलवाल
१) ला० मक्खनलाल जैसवाल जैन
२॥) ला० मोहकमलालजी देहली
४) बाबू महताबसिंह बी.ए. देहली
६॥) ला० महावीरप्रसादजी बिजलीवाले देहली।
२२) ला० महावीरप्रसादजी ठेकेदार
३) बाबू महावीरप्रसादजी एडवोकेट
२) ला० मुन्नालालजी चार्टर्ड बैंक
२) ला० महावीरसहायजी बरतनवाले

१॥=)॥। बूरा
।) मिट्टी
३।=)। सब्जी
)॥। पानीवाला
।–) खुराक चपरासी

७५॥।=)।

२८॥।–) मोटोज़ बनवाई
२०।) लिखाई मोटोज़
१–) गाढ़ा ४। गज
२॥=) लट्ठा गज ७
१॥) गाढ़ा ५॥=
३) गाढ़ा १६ गज
४।) आईल क्लोथ २गज
२=) किरमिच
१–) फीता
॥=) छल्ले
॥।) सुतली वास्ते झंडी
॥।=) रिंग
॥=) बोटर्स वास्ते 'महावीर जन्म दिवस है'

२८॥।–)

४६)॥ खर्च मैडिल दो पर
२२) एक मैडिल प्रो० हीरालाल का
१८) मैडिल

३) बाबू महताबरायजी प्लीडर
३) ला० मूलचन्दजी गली पहाड़
१) बाबू मदनलाल जी प्लीडर देहली
२।) ला०मानसिंहजी ठेकेदार देहली
१।) मुनशी मित्रसैन जी देहली
१) पंडित मुसद्दीलालजी गलीपीपल
३) ला० मोतीलाल चावड़ी बाजार
२॥।) ला० महावीर प्रशाद सुपुत्र ला० मोलकरामजी
१॥) बाबू महावीर प्रशाद जी सु० होशियारसिंहजी
८) महावीर जैन ब्रादरहुड न्यू देहली
३) ला० मंगतराय जी मुख्तार बुलन्दशहर
३) मुनशी मोतीलालजी रांका ब्यावर
५॥) ला०मंगतरायजी सिकन्दराबाद
३) जिनवाणीभक्त ला० मुसद्दीलाल जी अमृतसर
६) ला० मंगलसैन जी सोनीपत
३) ला० मनोहरलालजी मुरादाबाद
३) ला० मुरारीलाल जी बिनौली
५१) रायबहादुर ला० मोतीसागर एडवोकेट लाहौर
११) ला० मुलचन्द जी गली पीपल
११) ला० मक्खनलालजी क्लाथमार्केट
३) ला० मिट्ठनलाल जी मुक्तसर
३) ला० रतनलालजी बिजली वाले

४) खुदवाई
२४)॥ मैडिल दरख्शां साहब का
१९)॥ मैडिल
५) खुदवाई

४६)॥

२०२=) पंडाल खर्च
१२०)किरायाशामियाना
५६॥।=) मजदूरी
१९) बीमा कराई
६।) किराया कुरसी

२०२=)

१०८)। मुत्तफर्रिक व्यय
३।) हार १ गोटे का
३) रस्सी ६०
२३॥=) मजदूरी चौकियां व कुरसी आदि
२०।-)। किराया तांगा
१।-)। सुतली
१।-) प्लेट फार्म
॥।-)॥ गुलदस्ते
१॥-)। पिन वरिंग
९≡)॥। वर्दी चपरासी
२१।≡) पोस्टेज

२) ला० रतनलाल कपड़ेवाले नईसड़क
॥) ला० रतनलाल सुपुत्र सरदारीमल
२॥) ला० रतनलाल सु० मित्रसैन
५॥) ला० रामचन्द्र कोसी वाले
१०॥) हकीम रणजीतसिंहजी
३) ला० रतनलाल जी भकरिये
३॥) बाबू रघुनन्दनलालजी
३) बाबू राजकृष्ण जी कोयले वाले
१॥) ला० रणवीर सिंह जी टोपी वाले
३) ला० रणजीतसिंह जी
लायब्रेरीयन
१) बाबू रामचन्द्रजी पी. डी.
५) ला० रलारामजी बी.ए. जज
।) ला० रामरिछपाल कटड़ा नवाब
१) ला० रूपकिशोर अजमेरीगेट
२) बाबू रतनलालजी प्लीडर पानीपत
३) चौधरी रूपचन्द्जी भटिंडा
२) ला० रामस्वरूपजी एटा
२) ला० राजेंलालजी सिकन्द्राबाद
५) ला० लक्ष्मनदास जी मैदा वाले
५॥) ला० लालचन्द्जी सुपुत्र
मुनशी ज्ञानचन्द जी
२) डाक्टर लक्ष्मीचन्द्जी देहली
२) बाबू लालचन्द्जी एडवोकेट रोहतक
१) बाबू लक्ष्मरामजी हिसार
१) पंडित विजयचन्द्जी देहली
२) पंडित व्रजवासीलाल जी मेरठ

।॥~) मरम्मत बोट महा-
वीर जन्म दिवस
१३) वेतन व इनाम
आदमियों को
९॥)। खरीज

१०८।)।

७२०॥)॥

११८)॥ रिपोर्ट जयंती व
मंडल खर्च
४६) जैन प्रचारक उर्दू ४७५
कापीयों के लाला नाहरसिंह
को दिये जिसमें रिपोर्ट छपी
३४।)॥ अंग्रेजी में रिपोर्ट ट्रैक्ट
नम्बर ५३
२४) छपाई व कागज ३२
पृष्ठ दर ॥।) जो अंग्रेजी
जैन गजट में भी छपे
३३) छपाई व कागज २४
पेज दर ११) फार्म
५) कवर पेपर
२) छपाई कवर
७) बाईडिंग
१॥।≈) कुलीखर्च मदरास
२।~) पैकिंग खर्च
१२॥।≈) किराया रेल

५) ला० सरदारीमलजी गन्दानाला
३) ला० सरदारसिंहजी जौहरी
१) ला० सूरजलाल जी वैदवाड़ा
३॥) ला० सरदारीमल सुपुत्र ला. वनारसीदासजी धर्मपुरा
३) ला०सोहनलालजी पहाड़ी धीरज
६) ला० सरदारीमलजी सु० ला० लच्छुमल जी कागजी
१) वावू सुमेरचन्द जी खंजाची चार्टर्ड वैंक देहली
२॥) ला० सम्मनलाल जी खारी वावड़ी
३।) ला० शियोदयालजी हेडमास्टर
१) ला० शुगनचन्द जी कूंचा सुखानंद
॥) ला० शिवलालजी पहाड़ी धीरज
२) ला० शंकरलालजी सुपुत्र मुरारीलालजी देहली
६) वावू शम्भूदयालजी रेलवे वाले
।) ला० शिवदयालजी न्यूदेहली
३।) वावू सुमेरचन्दजी अकाउन्टैन्ट पटियाला
३) ला० शिवलाल शेखसराय बुलन्दशहर
१) ला० सुमेरचन्द (जगाधरी वाले)
१)ला० हजारीलाल वनवारीलाल चिराग दिल्ली

॥-)॥ वीमा कराई

८९।≡)॥असल लागत
२५≡) देनेरहे आगामी वर्ष हिसाव में नाम

६४।)॥

११०।)॥

५८१।)॥ ट्रैक्टों पर व्यय

९१≡)। सुवहसादिक उर्दू लेखक पं० जिनेश्वरप्रसाद माईल ट्रैक्ट नम्बर ४५ प्रति २ हजार
१२) लिखाई ३ कापी
१) लिखाई टाईटल
२७=) कागज सफेद
४॥)। कवर पेपर
६) वाइंडिंग
३०) छपाई
॥-) मजदूरी व अम्वाला पारसल कराई

९१≡)।

३६॥≡) हकीकत दुनियां उर्दू (नज्म में) लेखक ला० भोलानाथ मुख्तार दरख्शा ट्रैक्ट नं० ४६ २००० प्रति

८) ला० हरकचन्दजी कटड़ा शहनशाही देहली
४।) ला० हजारीलालजी कागजी
३) ला० होशियारसिंहजी गली अनार
५) प्रोफेसर हीरालालजी अमरावती
३) ला० हीरालालजी बागपत
३) ला० हुलाशचन्दजी नकुड़
४।) मुनशी ज्ञानचन्दजी कूचां बुलाकी बेगम
३।) ला० ज्ञानचन्दजी गली पहाड़

६९९।।=)

३२२।। ≈) आमदनी दान

२) ला० किशनलालजी मौजा खेड़ा
५) ला० हीरालाल स्वरूपचन्द मेरठ छावनी
२।=) ला० हुकमचन्द अमृतलाल गोहाने वालों ने (पुत्री के विवाह में)
१०) साहू चन्डीप्रशाद जैन रईस धामपुर वालों ने (सुन्दरलाल के विवाह में)
११) ला० न्यादरमल शौकीचन्द पानीपत वालों ने (पुत्री की शादी में)
५) ला० दियादयालमल जयन्ती प्रशाद रोहतक वालों ने (पुत्र के विवाह में)
१) ला० जौहरीमल मनोहरीलाल देहली वालों ने (पुत्री के विवाह में)

४) लिखाई कापी एक
१) लिखाई टाइटल
१०) कागज सफेद २ रिम
४।।।=)।। कवर पेपर
४) बाइंडिंग
१३) छपाई
)।। मजदूरी

३६।।।≡)

८२।।।=)।। लार्ड महावीर एण्ड सम अदर्स टीचर अंग्रेजी लेखक बाबू कामताप्रशाद ५०० प्रति ट्रैक्ट नं ४७

१३-) कागज सफेद
२।≡) कवर पेपर
३५।।) छपाई
५) बाइंडिंग
१।।) पैकिंग
१४=) किराया रेल
≡)।। बीमाकराई मदरास

७१।।।-)।। असल लागत
११-) लेने रहे अगले वर्ष के हिसाब में जमा किये गये हैं

८२।।।=)।।

७०) रायबहादुर बाबू नांदमलजी जैन गवर्मेंट पैन्शनर व फस्ट क्लास मजिस्ट्रेट अजमेर
१०॥)भादवा शुदी१४को रसीदों द्वारा
१) ला० पीतमदास
१) ला०गिरधारीलाल दूधवाले
१) ला० पन्नालाल
१) ला०दौलमराम बनारसीदास
१) ला० वसन्तराय हलवाई
१) ला० रतनलाल सुपुत्र भौदूंमल जौहरी
१) ला० वसन्तराय पंसारी
१) ला० शम्भुनाथ कागजी
१) बा० महावीर प्रशाद बिजली वाले
१) चौधरी वैजनाथ न्यू देहली
॥) ला० प्यारेलाल चने वाले

१०॥)

२) प्रोफेसर इन्द्रसैनजी एम०ए हिन्दूकालिज देहलीने टैक्ट प्रचारार्थ
५) लाला गिरनारीलाल जैन टेहरी जिला मैनपुरी
५) दिगम्बर जैन पंचान् बड़ौत
३) दिगम्बर जैन पंचान् रिवाड़ी
३) लाला गोपीचन्द जी हांसी
५) दिगम्बर जैन पंचान् नीमच छा०

३८॥।-)॥ जैनधर्म ही भूमंडल का सार्वजनिक धर्मसिद्धान्त हो सक्ता है लेखक बाबू माईदयाल जैन बी.ए. प्रति २००० नम्बर ४८
१२≡) कागज सफेद
२४) छपाई
२) वाइंडिंग
॥=) कागज कटाई
)॥ मजदूरी

३८॥।-)॥
टाईटल का कागज मंडल के स्टाक से खर्च हुआ

५१॥।=)॥ भगवान महावीर और उनका वाज उर्दू लेखक बा० शिवलाल मुख्तार प्रति २००० नम्बर ४९
८॥) लिखाई
२३।) कागज सफेद
१६) छपाई
४) वाइडिंग
=)॥ मजदूरी

५१॥।=)॥
४६≡) रिपोर्ट मण्डल हिन्दीमें १००० ट्रैक्ट नंबर ५०

२) महाराजसिंह लक्ष्मी भवन कासगंज
१०) लाला जानकी दासजी जौहरी
१) ला० जम्बूप्रशादजी पी० डब्लू० डी० देहली
५) पंडित जुगलकिशोर मुख्तार सरसावा (वीरसेवक आश्रमके प्रवेश की खुशीमें)
२१) रायसहाव लाला रणवीरसिंह हांसी वालों ने (पुत्र चन्द्रबल के विवाह में)
५) ला० लाजपतराय चेतनदास गोहाने वालों ने (पिता के स्वर्गवास होने में)
२) ला० हुंडीलाल वाबूलाल पटवारी अहारन जिला आगरा ने विवाहोत्सव में)
४) ला० कुन्दनलाल रामकुंवार मुजफ्फरपुर पोइस वालों ने (पुत्र के विवाहमें)
७) ला० ऋषभदास जी कंवरसैन ने (अजितप्रशाद के विवाह में)
५) ला० नरायनदासजी जग्गीमल जी जैन जौहरी ने (चिरंजीव नेमचन्द के विवाह में)
७) ला० बधूमल बावूरामजी टोपी वालों ने(पुत्रके विवाहमें)

४३=) कागज सफेद
३॥।≡) कागज टाइटल
॥) मजदूरी
८०) छपाई संजीवन प्रेस

१२७॥-) असल लागत
८१।=) देने रहे अगले वर्ष के हिसावमें लिखेगये है

४६≡)

२) ख्यालातलतीफ उर्दू (नज्म दरख्शां) ट्रैक्ट न० ५१ प्रति १०००
१॥) लिखाई
४) छपाई
४।) कागज

९॥।) असल लागत
७॥।) देने रहे अगले वर्षके हिसाव में लिखे

२)

११९॥।≡) जैनधर्म उर्दू लेखक महर्षी शिवव्रतलालजी प्रति १००० ट्रैक्ट नम्बर ५
४४) लिखाई कापी
१) लिखाई टाईटल
॥) बेल बनाई
७४।) कागज १२ रिम
७॥≡) कवर पेपर

१०१) ला० प्यारेलाल कन्हैयालाल अग्रवाल लोहिये कानपुर वालों (पद्मराज के विवाह में)
५) ला० रामजीदास दीवानचन्द फरुखनगर वालों ने विवाह में

३२२॥=)

३९२≡)।आमदनी व बिक्री ट्रैक्ट

५०) तोताराम शिब्बामल अम्बाला छावनी वालोंने "सुबह सादिक" के प्रकाशनार्थ
७०) ला० मक्खनलाल जी ठेकेदार गन्दा नाला देहली ने "भगवान महावीर के प्रकाशनार्थ"
२०) ला० रतनलाल मुसद्दीलाल देहली ने "हकीकत दुनियां के प्रकाशनार्थ"
१०) ला० बनारसीदास फकीरचन्द बहादरगढ़ वालों ने
१६०) चौधरी बलदेवसिंहजैन सर्राफ दरीबा कलां देहली ने "जैन धर्म प्रकाशनार्थ"
२०१)॥ बिक्री खरीज
६१॥=)॥ ट्रैक्ट बाहर भेजे गए

३९२≡)।

४८) छपाई
११) बाइंडिंग
≡) मजदूरी

१८६॥=) असल लागत
६६॥≡) अगले वर्ष के हिसाब में लिखे हैं

११९॥≡)

७०।-)॥ लार्ड पार्श्व अंग्रेजी लेखक मिस्टर हरिसत्य भट्टाचार्य ट्रैक्ट न० ५४ प्रति ५००
१६॥≡) काग़ज
२॥≡) कवर पेपर
३८॥) छपाई
५) बाइंडिंग
१।-) मज़दूरी कुली मदरास व देहली
१॥) पेकिंग
।-)॥ बीमा कराई मदरास
९॥-) किराया रेल व बिल्टी छुड़ाई

७५।-)॥
५) आगामीवर्षके हिसाब में नाम लिखेगये हैं
७०।-)॥

६८६) चंदा जयन्ती
२५) बाबू आदीश्वरलालजी
२५) चौधरी नियादरमलजी
२५) ला० झुन्नुलालजी जौहरी
२१) बाबू नत्थनलालजी
२१) ला. मक्खनलालजीठेकेदार
२१) ला.सरदारीमलजीकागजी
२१) बाबू महावीरप्रसादजी एडवोकेट
२१) ला. महावीरप्रसादजी ठेकेदार
२१) ला.सरदारीमलजी गोटेवाले
१५) ला. तिलोकचंदजी
११) ला. सिद्धोमलजी कागजी
११) ला. लक्ष्मनदासजी मैदा वाले
११) ला. चम्पालालजी घीवाले
११) ला. बनारसीदासजी सूत वाले
११) ला. कंवरसैन नियादरमल जी सर्राफ
११) चौधरी बलदेवसिंहजी
११) ला. बाबूमलजी जौहरी
११) ला. बाबूरामजी छत्ता शाहजी
११) बाबू उमरावसिंहजी मंत्री
११) ला. दलीपसिंहजीकागजी

१) बिजनौर किराया रेल जैन-धर्मप्रकाश वितीर्णनार्थआ

५४१)॥

२४॥≡) स्वागतखर्चडाक्टरहलमथ वानग्लासेनप्प.पी.एच. डी. बर्लिन
३।) तार चार
बा० कामताप्रसादजी बा० अजितप्रसाद, ब्र० शीतलप्रसाद व ईश्वरलालजी सौगाणी को
२॥) छपाई व कागज ५०० हैंड बिल
।=) जूता जोड़ा एक कपड़े का
५) व्याख्यान के नोट शोर्ट हैंडमें लेने वाले को
४॥) हार फूल
३॥=) किराया तांगा
२≡) तेल मोटरके लिये
।=) किराया सामान क्लाक हाउस
।=) अखबार
॥।=) कुली
=) प्लेट फार्म
॥) चाय खर्च रेल पर

२४॥≡)

११) ला. गोरधनदासजीजौहरी
१०) ला. कुँजलालजीओसवाल
१०) पंडित अरहदासजी
पानीपत
९) ला. राजकृष्णजी कोयलेवाले
९) ला. रतनलालजी खजांची
९) पन्नालालजी स्टेशनर
७) ला. विशम्भरदासजी
खजांची
७) भगत इन्दरलालजी
५) ला० श्रीराम कागजी
५) ला. उदमीरामजी आटेवाले
५) ला. सरदारीमलजी गन्दा-
नाला
५) वावू लालचन्दजी सुपुत्र
मुनशी ज्ञानचन्दजी
५) ला. मानकचन्दजी खण्डेल
वाल
५) ला. अनूपसिंहजी कूंचासेठ
५) ला. विश्वम्भरनाथजी कोठी
महबूबसिंह उलफतराय
५) ला. रतनलालजी झझरिये
५) ला.जोतीप्रसादजी आटेवाले
५) मुनीम उमरावसिंहजी
५) ला. शम्भूदयालजी रेलवाले
५) वावू गिरधरलालजी
डाक खाने वाले

१२-)॥। स्वागत खर्च डाक्टर
डब्लू शुब्रिग पी. एच. डी.
हम्बर्ग (जरमनी)
६॥)॥। ताँगा खर्च
१) इनाम चपरासी हिन्दू
कालेज
॥-) अखबार
।) प्लेट फार्म
३॥) छपाईकागज हैंडविल
हिन्दी अंग्रेजी १०००

१२-)॥।

७०) वेतन रामगोपाल चपरासी
१७६=) पोस्टेज तारवैरंग आदि
पर खर्च
१६९॥-) पोस्टज १२मास
६॥-) तार लंदन वैरिष्टर
चम्पतरायजी को
अमेरीका की सभा
का पता भेजा

१७६=)

४५=)॥ स्टेशनरी खर्च
१॥।) पियोन बुक
॥) पाकिट बुक
१२॥।=) लिफाफे
४=) २००० कार्ड

५) बाबू महताबरायजी प्लीडर
५) ला. हजारीलालजी कागजी
५) बाबू रघुनन्दनलाली
५) ला. हरकचन्दजी
५) मास्टर शिवदयालजी
५) ला. छज्जूमलजी सब्जीमंडी
५) ला. जोगीरामजी
५) ला. जोतिप्रसाद नैशनलबैंक
५) ला. कशमीरीलालजी मुनीम
५) ला. सोहनलालजी पहाड़ी
५) ला. प्यारेलालजी बंगलेवाले
५) ला. जैनीलालजी टोपीवाले
५) ला. रामचन्दरजी कोठीवाले
५) ला. हरीभद्रजी सुपरिन्टैंडैन्ट
५) ला. रणवीरसिंह बिजलीवाले
५) ला. राजेन्द्रचंद्रबिजलीवाले
५) ला. जिनेश्वरदासजी प्लीडर
५) ला. रतनलाल जी कटरा हीरालाल
५) ला. रणजीतसिंहजी लायब्रेरीयन
५) ला. जौहरीमलजी सर्राफ
५) ला. मोतीमलजी सादेकार
५) ला. हीरालालचंदजी गोटेवाले
५) ला. जुगलकिशोरजी कागजी
५) ला. मूलचंदजी नन्दी पहाड़

१=) कागजवास्ते रजिस्टर
८॥=) मलटचोट बनवाई खाते के फाइल
३॥) कागज लेटर पेपर
१।) कागज प्रवेश पत्र
२॥) बहियां दो
।≡) कारबन
।–) कागज वास्ते केस महावीर रोड
≡) कागज गवरमिंटी
१–) जिल्द साज
१) कागज हैंड बिल
७।=)॥ खरीज सामान स्टेशनरी निब रोशनाई पैकिंग पेपर डोरा आदि

४५=)॥

२७=)॥ छपाई खर्च
५।) लिफाफे छपाई
२=) छपाई कार्ड
३॥) छपाई लेटर पेपर
३॥) छपाई प्रवेशपत्र व स्वीकार पत्र
२॥) शोक सभा के हैंड बिल जगमन्दरलाल के छपाई

५) ला. रूपचन्दजी गार्गीय
पानीपत
५) बाबू पृथ्वीसिंहजी धर्मपुरा
५) ला. शान्तीचन्द्रजी सतघरा
५) ला. ज्ञानचंदजी गलीपहाड़
५) ला. बिरखूमलजी मुनीम
५) ला. फतहचंदजी ड्राफ्टस्मैन
५) बाबू उमरावसिंहजी टंक
वकील
५) ला. घमंडीलालजी गोयला
५) ला. बाबूरामजी
५) रतनलालजी कागज़ी
५) पंडित महावीरप्रसादजी
वकीलपुरा
४) ला. रणबीरसिंह टोपीवाले
४) ला. उगरसैनजी न्यू दिल्ली
४) बाबू लक्ष्मीचंदजी सर्राफ
गोहाने वाले
४) ला. देवसैनजी पंसारी
४) ला. डिप्टीमलजी जैन बी.ए.
३) ला. बनारसीदासजी औडीटर
३) ला. जोतीलालजी
गली अनार
३) डाक्टर लक्ष्मीचंदजी
३) बाबू बिशनचन्दजी धर्मपुरा
३) बाबू महाबीरप्रसादजी पंजाब नैशनल बैंक

२) हैंडबिल छपाई व्याख्यानब्र० शीतलप्रसादजी
२) छपाई हैंड बिल व्याख्यान पं० ब्रजवासीलालजी
५।)।। छपाई हैंड बिल अमावस के

२७।=)।।

२३।)। पुस्तकें

६।-) डाक्टर फरडैन्डो बैलानी फिलप्पी पीजा (इटली)वालों को भेजी ३ तीन पुस्तकें द्रव्यसंग्रह,जैनाजेम डिक्सनरी, डिक्सनेरी जैनबाइग्राफी
१।) धर्म इतिहास
।-) संसार के सम्वत
२।।।-) भारतवर्प का इतिहास डा० ईश्वरीप्रसादजी कृत
।-) प्राचीन इतिहास
४।।=) २ प्रति आर्य चित्रावली
।-) रद्दे हिंद उर्दू की
३।।।=)।।। २ कापी इतिहास ला. लाजपतराय

२) ला. बनारसीदासजी वकीलपुरा
२) ला. किशनचन्दजी कपड़ेवाले
२) ला. निहालचंदजी कटरा-मशरू
२) बा. अजितप्रशादसदरबाजार
२) ला. फिरोजीलालजी सर्राफ
२) ला. मुन्नालाल चार्टड बैंक
२) ला. अतरसैन पंजाब नै.बैंक
२) ला. विशम्भरसहाय सब्जी मंडी
२) मुनशी श्योनरायनजी
२) ला. जोतीप्रसाद दलाल

६८९)

३=) आमदनी रिपोर्ट जयन्ती प्रकाशनार्थ
२०) ला० महावीरप्रसादजी बिजली वाले
१८) ला० भूमलालजी जैन जौहरी गन्दानाला देहली

३८)

५) उगाही बसूल श्री महावीर जयंती वीरनिर्वाण सं० २४५२
७) ला० नंदकिशोरजी गुलियां

॥) बलिदान चित्रावली
१≡)॥ सत्यार्थ प्रकाश दो कापी
।=) खर्च वैरंग (स्वामी दयानंद और जैनधर्म)
।) किराया २ पुस्तकें महावीर पुस्तकालय वालों को दिया
।-) बाइंडिंग
॥≡) किराया रेल व टांट पुस्तकें बादली गई

२३)॥

२८॥=) फरनीचर
॥) ताला एक
॥≡) कुप्पी बिजली
१४॥) मेज एक
१२॥≡) टांड बनवाई
३॥) तख्ते
१) पेटी
॥=) कीलें
७।-) बढ़ई ३॥ दिन

२८॥=)

५=)॥ टाईप खर्च
३।=) लेख प्रोफेसर स-त्यानन्दमोहन मुख्यो-पाध्याय एम. ए. का

||≡)| ब्याज खाते आय
पीपल बैंक ओफ नादरन
इंडिया लिमिटेड देहली से

२२५४=)||

नोट—प्रेस की असावधानी से
निम्न भूलें रह गई हैं।
पृष्ट ३ की १३वीं लाइन में
"इन" के आगे "कतिपय"
शब्द जोड़लें
पृष्ट ५८ की कविता का हैडिंग है
"जयंती जिनराज की"
पृष्ट ७४ में आमदनी फीस की
रकम ६९९|||=) है
६९९||=) नहीं।
पृष्ट ७५ की १८वीं लाइन में ला०
जानकीदास बी.एस.सी. की
रकम ४) है ४|) नहीं
पृष्ट ८२ में आमदनी दान की
रकम ३२२|||=) है
३२२||=) नहीं

१|||)||| टाईप खरीज

५=)|||

११|=)||| खर्च तांगा, व ट्रेम
३-) यूनीवर्सिटी से कैलंडर लाए ३ वार
वास्ते नियुक्तिजैनकोर्स
||-)| जैन प्रचारक को
तलाश करने छुड़ाने
गये रेल पर
|) सभापति बनाने शोक
सभा जे. एल. जैनी
कशमीरी गेट गए
||) व्याख्यान देने आए
जुगलकिशोरजी मुख्तार
||-) शिवव्रतलाल वर्मन
से मिलने गए
|||) दरियागंज सभापति
बनाने (डा. शुब्रिग के
व्याख्यान) गये
४|=)|| तैयारी रिपोर्ट व
छपाने रिपोर्ट पहाड़ी
व फतहपुरी गए आए
१|) प्रोफेसरान व खारी
बावड़ी सभाके मौकेपर

११|=)|||

३॥-)॥। खरीज खर्च
॥=)॥। अखवार
।=) पानी भरवाई
॥-) हार फूल वास्ते
माईल साहव व प्रो०
घासीरामजी
।-) तेल वत्ती
।) मनीआर्डर फीस तीर्थ
क्षेत्र कमेटी को मनी-
आर्डर भेजा खर्च
खंडित प्रतिमाओं को
जल प्रवाह कराने का
१≡) फोटू खर्च सूरत
भेजना वास्ते दिगंबर
जैन १-)॥
-)॥अलीगंजके
लिये वोट
————
३॥-)॥।

————
१७९१॥=)॥।
४५४≡)॥। श्री रोकड़ा बाकी रहे
५४)॥ कोपाध्यक्ष के पास
४००≡)। पीपल बैंक देहली
से लेना

————
४५४≡)॥।

————
२२५४=)॥।

चिट्ठा जैन मित्रमंडल १ अप्रैल १९२८ से ३१ मार्च १९२९ तक

आय	व्यय
४५४≡)॥। श्री रोकड़ा बाकी	६९७।=) खर्च श्री महावीर जयन्ती व वार्षिकोत्सव १३वाँ
५४)॥ कोषाध्यक्ष के पास	९६३=) ट्रैक्ट प्रकाशनार्थ
४००≡)। पीपल बैंक में	३८२।) खरीज खर्च
४५४≡)॥।	५९६।-)॥।श्रीवर्द्धमानपब्लिकलायब्रेरी
६७६॥=) आमदनी फीस	२६३९-)॥।
१५) बकाया वसूल जयन्ती २४५३	५२२॥-)॥ श्री रोकड़ा बाकी
६२९) आमदनी जयन्ती २४५४	४६९।-)॥। पीपल बैंक में जमा
२६५॥) आमदनी दान	७१।)। कोषाध्यक्ष के पास
६४८।=) सहायता ट्रैक्ट व बिक्री	५४०॥=)
३९५।) सहायता	१८)॥ अमानत देने
२५३=) बिक्री	११॥=) धूमीमल धर्मदास
२७।=)॥ आमदनी ब्याज	६।=)॥रा०नांदमल
४४५।-) आमदनी श्री वर्द्धमान पब्लिक लायब्रेरी	५२२॥-)॥
१२५) आमदनी फीस	
३२०॥) सहायता	
-) कार्ड	
३१६१॥≡)।	३१६१॥≡)।

पहिली अप्रैल सन् १९२८ से लेकर ३१ मार्च सन् १९२९ तक का हिसाब जांचा और बिल्कुल ठीक पाया। जानकीदास जैन १४-४-२९

हिसाब जैन मित्र मण्डल देहली का यकुम अप्रैल १९२८ ई० से ३१ मार्च १९२९ तक जांच किया गया बिल्कुल सही और दुरुस्त है।
बनारसीदास बक़लमखुद १४ अप्रैल १९२९

८५४≈)।।। श्री रोकड़ा बाकी

६७६।।≈) आमदनी फीस

३) लाला अतरसैनजी पं. नै. बैंक
१।।) लाला अतरचंद सदरबाजार
५) लाला अमीरसिंह जी ओवर-
सीअर वकीलपुरा
३) ला. अजितप्रशादजी वकीलपुरा
३) ला. अमीरसिंहजी नायब
तहसीलदार रुड़की
३) ला. अमीरचंदजी सहारनपुर
७।।) ला. अरहदासजी पानीपत
३) ला. इन्दरप्रशादजी गर्ग मुख्तार
सहारनपुर
१०) भगत इन्दरलालजी धर्मपुरा
४।।) लाला इन्दरसैनजी मथुरा
३) ला. इन्दरसैनजी लीडर रोहतक
६) ला. उमरावसिंहजी मंत्री
१) ला. उमरावसिंहजी शर्म्मा
२।।≈) ला. उदमीरामजी आटे वाले
३) ला. उमरावसिंहजी फीरोजपुर-
झिरका
३) ला. उत्तमचंदजी सरधना
१) श्री. ऋषभचरणजी डौंडी
१) ला. उल्फतराय सबपोस्टमास्टर
३) ला. उलफतरायजी असिस्टैंट
इंजनीयर मेरठ
३) ला. कंवरसैनजी सबपोस्टमास्टर

६६७।≈) खर्च श्रीमहावीर जयन्ती
व वार्षिकोत्सव १३वाँ

१२) किराया परेड ग्राउंड
२७।।।) छपाई
२) छपाई सरक्यूलर हिंदी
२) छपाई सरक्यूलर उर्दू
२।।) छपाई सरक्यूलर अंग्रेजी
२।।) छपाई निमंत्रण पत्र
२।।।) छपाई अंग्रेजी हैंडबिल
३) छपाई पोस्टर उर्दू
३) छपाई पोस्टर हिंदी
२) छपाई प्रोग्राम ३१-३-२८
२) छपाई प्रोग्राम १-४-२८
२) छपाई प्रोग्राम २-४-२८
२) छपाई इन्वीटेशन कार्ड
अंग्रेजी
२) छपाई इन्वीटेशन कार्ड
हिंदी

२७।।।)

२५।।≡) कागज
।।≈) उर्दू सरक्यूलर का
१।।≡) निमंत्रण पत्र का
१।।) अंग्रेजी हैंड बिल का
४।≈) प्रोग्राम का
१।–) झंडियों का
२।।≈) पोस्टर उर्दू का

४॥) ला. कुंजलालजी ओसवाल
३) ला. किशनचंदजी कपड़े वाले
२॥) ला. कन्हैयालाल घंटेवालेहलवाई
३) ला. कपूरचंद सु. मन्नूलाल
टोपी वाले
३॥) पंडित कंचनलालजी धर्मपुरा
२॥) ला. कल्याणचन्द दरीबा
२॥) ला. किरोड़ीमल तिजारा
३) बाबू गिरधरलाल गली अनार
३) ला. गूजरमल सदरबाजार
२) मास्टर गिरधारीलाल दूधवाले
३) प्रोफेसर घासीरामजी ग्वालियर
३) ला. चंदूलालजी प्रेमी फिरोजपुर
२) ला. चम्पालालजी घी वाले
३) डाक्टर सी. आर. जयना
३) बाबू चन्दूलाल अख्तर बी. ए.
एल एल. बी.
१) बाबू चतरसैनजी कूंचा सेठ
३) ला. चेतनलालजी सब-ओवर-
सीअर नरवल (कानपुर)
२) ला. छज्जूमल सब्जीमंडी
३) ला. जौहरीमल सर्राफ
३) ला. जानकीप्रशाद कटड़ा मशरू
४) ला. जानकीदास बी.एस.सी.
३॥) ला. जोतीप्रशादजी आटे वाले
१॥) ला. जोतीप्रशाद टाईप वाले
३॥) ला. जोतीलाल गली अनार

३-) पोस्टर हिन्दी के
१०॥) ६०० इन्वीटेशन कार्ड

२५॥=)

३३॥-) पोस्टेज व तार खर्च
२६॥-) पोस्टेज
१॥।) जवाबी तार पं० देव-
कीनंदन जी को
॥।) तार शिवव्रतलाल जीको
३) तार २ सुभद्रादेवीजीको
॥।) तार पं. जुगलकिशोरजी
मुख्तार को
॥।) तार ला० प्रभुरामजी खत्री

३३॥-)

७॥) लिखाई पोस्टर दो
४॥) हिंदी का
३) उर्दू का
५९॥) रोशनी खर्च
५०) बिजली
९॥) हंडे आठ
२२६॥।) पंडाल खर्च
१२०) किराया डेरे ४
६९।=) मजदूरी आदि
३७।=) किराया कुरसी
२४) किराया कुर्सी ३ दिन
३) किराया कुरसी २
सभापति

३॥) ला. जुगलकिशोर कागजी
४॥) ला. जौहरीमल घी वाले
१) ला. जोतीप्रशाद किरांची वाले
३) ला. जियानंद कटड़ा धूलिया
३) ला. जुगलकिशोर बहादरगढ़
१॥) ला. जमनादासजी सुराना
४) ला. जोतीप्रशादजी सोनीपत
३) ला. जोतीप्रशादजी निजामुद्दीन
३) ला. जोतीप्रशादजी शिमला
३) बा. जुगमन्दरदासजी टेहरी
१) ला. झुन्नूलालजी जौहरी
३॥) डी. हडसन.सी.एस.एम.एम. जी लीडम्स (इङ्गलैंड)
३) ला. ठाकुरदास धर्मपुरा
३) ला. डिप्टीमलजी जैन बी०ए०
३) ला. तिलोकचन्दजी
४॥) ला. देवसैनजी पन्सारी
३) ला. दलीपसिंहजी कागजी
३) बाबू दर्शनलालजी
५॥) ला. दौलतरामजी कपड़ेवाले
४) बा. दयाचन्दजी असिस्टैंट एग्जीक्यूटिव इन्जीनियर
१) ला. दयाचन्दजी मंगलौर
१॥) ला. धनपालसिंह गली पहाड़
२॥) ला. नन्दकिशोर
१३) बाबू नत्थनलालजी धर्मपुरा
६) चौधरी नियादरमलजी

१०।=) किराया ठेला कुरसी व कुली
२७।=)

२२६॥)
१०) सुखीमल तबले वाले को
१२१॥।-) मार्ग व्यय विद्वानों का
२५) मिस्टर हरीसत्य भट्टाचार्य एम. ए. बी. एल. हावड़ा
२३॥=) एच.एम. सय्यद लेकचरार युनीवर्सिटी प्रयाग
२॥) पंडित तुलसीरामजी काव्यतीर्थ बड़ौत
२३॥) पं० हंसराजजी शास्त्री विलगा
२१) शिवव्रतलालजी वर्मन
८) ला० प्रभुरामजी खत्री
१६॥) ब्र० प्रेमसागरजी
॥=) मनीआर्डर फीस

१३१॥-)
१८)॥ पानी खर्च
५) पनिहारों को पानीभराई
११॥=) मटके २०२५
॥) मटके पांच

३) ला. निहालचन्दजी कटड़ा मशरू
६) ला. नेमचन्दजी कूंचा सेठ
३) सेठ निर्भयरामजी मारवाड़ी
३) ला. निहालचन्दजी दरीबा
कोठी सोहनलाल निहालचंद
१) ला. नाहरसिंहजी सरसावा
३) ला. प्रकाशचन्दजी नकुड़
४) बा. प्रेमचन्दजी पं. नैशनल बैंक
५) ला. पारसदासजी बिजली वाले
३) ला. प्यारेलाल गंदा नाला
२) बाबू पृथ्वीसिंहजी
१॥) पन्नालाल स्टेशनर
१२) ला. पन्नालाल जैनी ब्रादर्स
२) बा. पुरुषोत्तमदास न्यू देहली
३) बा. पद्मसैन सुपरिन्टैन्डैन्ट
मेलसर्विस बड़ौदा
१) बा. फूलचन्दजी कूंचा
बुलाकीबेगम
५) बा. बिशनचन्दजी सहायक मंत्री
३) ला. बनारसीदास सु. बसन्तराय
३।) बा. बनारसीदासजी औडीटर
४॥) ला. बिरखूमलजी मुनीम
२।) ला. बिशम्भरदास सु.
चिम्मनलालजी
३।=) ला. बाबूराम छत्ता शाहजी
२) चौधरी बलदेवसिंहजी
२) ला. बिहारीलाल अर्जीनवीस भिवानी

॥) गोल २
।=)। छिड़काव करवाई

---

१८)।

४।=) पूजन खर्च
२॥) बादाम २ सेर
॥=) गोले सेर १
॥) लोंग आधी सेर
।) डंडी

४।=)

६९।-) भोजन खर्च
१≡)॥ मसाला
१॥=) दही ५ सेर
१=) दूध ३ सेर
२।-) लकड़ी
४।-) सब्जी
=) बुहारी
१-)॥ गाढ़ा ७ गज
७॥) ब्राह्मण रसोइया ५ दिन
६) ब्राह्मण रसोइया ४ दिन
३॥=) चांवल ९ सेर
२) दाल आठ सेर
६॥) आटा १)१
३=)॥ बूरा
१६) घी
≡)॥ कनस्तर

१) ला. विशम्भरदास पानीपत वाले
२॥) ला. विशम्भरनाथजी मुनीम
६) ला. विशम्भरदास चाहरहट
२) ला. बनारसीदास नहर वाले
१॥।) ला. बाबूमलजी जौहरी
२) ला. बांकेलाल कशमीरीगेट
३) ला. बद्रीदासजी खजांची
२) ला. बाबूराम धर्मपुरा
३) ला. बनवारीलालजी नाई वाड़ा
११) ला. मक्खनलालजी ठेकेदार
३) ला. महावीरप्रशाद [बैंक] मेरठ
३) ला. मीरीमलजी सादेकार
३) पंडित महावीरप्रशाजी
३) ला. मक्खनलाल जैसवाल
२॥) ला. मोहकमलालजी
४) बा. महतावसिंह बी.ए.एलएलबी
१) ला. मामनचंदजी प्रेमी
६) ला. महावीरप्रशाद जी ठेकेदार
४॥)बा. महावीरप्रशादजी एडवोकेट
२॥) बा. मुन्नालाल जी चार्टर्ड बैंक
४) ला. महावीरसहाय बरतनवाले
२॥) बा. महतावराय ओडिर
३) ला. मूलचन्द सर्राफ
४।) ला. मानसिंह ठेकेदार
२॥।) ला. मोनीलाल चावड़ी बाजार
१) बा. महावीरप्रशाद चाहरहट
मु. मौलकरामजी

८) वेतन कहारों को दिया
२।) गिलास दरजन एक
१॥।) कटोरियां अलमोनियम

६९।-)

७०॥।-)॥। खर्च खरीज
१।) गुलदस्ते व हार
३) इनाम चपरासी दो किलेवाले
व धरमसिंह
॥=) सामान लेही
२॥) पोस्टर चिपकवाई
॥।≡) अखबार
॥।=) सुतली
१॥) बांस वास्ते बिजली
४॥) खुराक आदमी बिजलीवाले
३) बढई को दरवाजा खड़ा
कराई
।) कीलें
३॥।) चौकीदार को
।-) महतरानी
१८।-)॥ नांगा खर्च
८॥।≡)॥। मजदूरी खर्च
२०) तनखुवाह नौकरों
॥।-) खरीज

७०॥।-)॥।

३९८।=)

२॥) ला. मक्खनलाल क्लोथमारकेट
४) ला. मोतीसागर वकीलपुरा
१) ला. मेहरचन्द गली अनार
३) श्रीमथुरादासजी गाँधी
६) ला. महावीरप्रशाद अम्बाले वाले
३) मुनशी मोतीलालजी रांका ब्यावर
३) ला. मातादीनजी अहमदावाद
२) ला. मुरारीलालजी विनौली
३) बा. मगंलसैनजी बी.ए. डिप्टी
इंस्पैक्टर ओफस्कूल मुजफ्फरनगर
२॥) ला. रतनलालजी नईसड़क
सु. मुसद्दीलाल
४) ला. रतनलाल कागजी
२) हकीम रणजीतसिंहजी
३।) ला. रतनलालजी झझरिये
२॥) ला. रघुनन्दनलालजी
इस्टाम्प फरोश
२) ला. राजकृष्ण कोल मर्चैंट
६) ला. रघबीरसिंहजी बिजली वाले
२।) ला. रघबीरसिंहजी टोपी वाले
३) ला. रणजीतसिंहजी लायब्रेरीयन
२।) ला. रामस्वरुपजी एटा
५) बा. रणवीरसिंहजी मुजफ्फरनगर
३) ला. रामचन्दजी, कटड़ा मशरू
१) ला. रामगोपाल सदर बाजार
२) ला. रघूमलजी जंगपुरा
३) ला. रामसरनदास रोहतक

९६३=) ट्रैक्ट प्रकाशनार्थ

८७।≡) रिपोर्टजयन्ती ट्रैक्ट नं०५५
१२) लिखाई २ कापी
३०॥) कागज
१२) छपाई उर्दू
२७) छपाई हिंदी २। फार्म
५।) बाइंडिंग
।≡) मजदूरी व ट्रैम खर्च

८७।≡)

२६॥-)॥ २००० ह्याते वीर उर्दू [नज़्म में] लेखक बा. भोलानाथ मुख्तार ट्रैक्ट नं० ५६
४।) लिखाई व बेल
१२।) कागज
८) छपाई
२) बाइंडिंग
-)॥ मजदूरी

२६॥-)॥

२६॥-)॥। लागत २००० ट्रैक्ट नम्बर ५७ अहिंसा धर्म पर बुजदिलीका इल्जाम लेखक बा. शिवलाल मुख्तार
४।) लिखाई व बेल
१२।) कागज

३) ला. राजेलाल कूंचा जहा
१) ला. रामस्वरूपजी कासगंज
५॥) ला. लक्ष्मनदासजी मैदा वाले
१) डा. लक्ष्मीचन्दजी
३) ला. लक्खूमलजी नाज वाले
३॥) ला. विमलप्रशादजी विद्यार्थी
६) ला. सुलतानसिंहजी पहाड़ी
२) ला. मुक्खनलाल किनारीबाजार
३॥) ला. सोहनलाल पहाड़ी धीरज
४) ला. सिद्धोमलजी कागजी
१३) ला. सरदारीमलजी कागजी
३) ला. सुलतानसिंह सर्राफ दरीबा
२॥) ला. मम्मनलाल सावन वाले
२) ला. शुगनचंद जी
।॥) ला. शिवदयालजी न्यूदेहली
२) ला. सत्यनरायणजी गुड़ वाले
२) बाबू समेरचन्दजी अकाउन्टेन्ट पटियाला
२) ला. शिवलाल शेखसराय बुलन्दशहर
३) ला. शंकरदासजी जालंधर
३) बाबू सुखबीर प्रशाद जी वकील
१) ला. मन्नलालजी जौहरी
३) ला. सुमनप्रशाद मुख्तार धामपुर
३) ला. समेरचन्दजी महालकी किसनपुर
२) बाबू ससन्दरलालजी गोयल वकील देहरादून

८) छपाई
२) बाइंडिंग
–)॥। मजदूरी

२६॥–)॥।

२६॥)॥। २००० हकीकते माबूद उर्दू [नज्म] में लेखक बाबू भोलानाथ मुख्तार ट्रैक्ट नं॰५८
४) लिखाई व बेल
१२) कागज
८) छपाई
२) बाइंडिंग
)॥। मजदूरी

२६॥)॥।

६५=)॥।२००० सहरे काजिब उर्दू लेखक बाबू भोलानाथ मुख्तार ट्रैक्ट नम्बर ५९
१०) लिखाई
३०) कागज
२०) छपाई
५) बाइंडिंग
=)॥। मजदूरी

६५=)॥।

३) ला. श्यामलालजी खिलसी
३) ला. सीतरामजी हेड बुकिंग
किलर्क
४) ला. हरीश्चन्दजी सुपरिन्टैन्डैन्ट
३।) ला. हजारीलालजी कागजी
१) ला. हीरालालजी मस्जिद खजूर
३) ला. हरीचन्दजी सु. रंगीलालजी
१) मुनशी ज्ञानचन्दजी

६७६।।≈)

१५) आमदनी चन्दा जयन्ती
वीर सम्वत २४५३ के वाकी थे
१०) पंडित हंसराजजी शास्त्रीसे
[हिसाव पृष्ट ७५ वाले आए]
५) लाला अमीरसिंहजी ओवर
सीयर से

१५

६२६) आमदनी चन्दा जयन्ती
२४५४
३) लाला अतरसैनजी पं.नै.बैं.
५) ला. अजितप्रशादजी
वकीलपुरा
२५) वा. आदीश्वरलालजी
७) भगत इन्दरलालजी
१२) बाबू उमरावसिंहजी मंत्री
मद्धे पूजन १) चंदा ११)
५) ला. कशमीरीलालजी मुनीम

५९।) दी रीयल नेचर ओफ परमा-
त्मा अंग्रेजी लेखक एन. एस.
अगरकर १००० प्रति ट्रैक्ट नं. ६०
१८) छपाई
५) टाइटिल छपाई
४) बाइंडिंग
१५) कागज
५।) टाईटिल का कागज
३) प्रूफ रीडिंग
९) किराया रेल पैकिंग पो-
स्टेज मनीआर्डर फीस
[मद्रास]

५९।)

७८) जल्वये कामिल उर्दू ट्रैक्ट नं० ६१ प्रति १००० लेखक बाबू भोलानाथ मुख्तार
८७) लिखाई छपाई कागज
६ फार्म दर १४।।)
१०) वाइंडिंग
३।।) छपाई टाइटिल
२।।) कागज टाइटिल
१) लिखाई-टाइटल
)।।। मजदूरी

१०४)।।।
२६)।।। अगलेवर्षके हिसाबमें देने

७८)

११) ला. कुंजलालजी ओसवाल
२) ला. किशनचन्दजी कपड़ेवाले
११) ला. कन्नूलसिंह मन्नूलाल
५) ला. कन्हैयालाल घंटेवाले हलवाई
५) ला. घंमडीलालजी गोयला
९) ला. चिम्मनलालदलीपसिंहजी
५) ला. चम्पालाल घी वाले
५) ला. जैनीलाल टोपी वाले
५) ला. जोतीप्रशादजीआटेवाले
३) ला. जोतीप्रशादजी दलाल
३१) ला. झुन्नूलालजी जौहरी
२१) ला. तिलोकचन्दजी
४) ला. देवसैनजी पंसारी
७) ला. धूर्मीमल धरमदासजी
२१) बा. नत्थनलालजी
२१) चौधरी नियादरमलजी
११) ला. न्यादरमल सराफ
११) ला. नत्थूमलजी बरनावा
११) पन्नालाल अग्रवाल
३) बा. बिशनचन्दजी ड्राफ्टस्मैन
५) ला. बनारसीदास आडीटर
५) ला. बिरखूमलजी मुनीम
९) ला. विशम्भरदास मु. ला० चिम्मनलाल
२१) चौधरी बलदेवसिंहजी

१८१॥)॥ लार्ड अरिष्टनेमि अंग्रेजी लेखक मिस्टर हरिसत्यभट्टाचार्य ट्रैक्ट न० ६२ प्रति १०००
७०) छपाई
४) छपाई टाईटल
७॥) बाइंडिंग
१२) प्रूफ रीडरी
५७॥) कागज़
५॥) कागज़ टाईटल का
२५॥)॥ पैकिंग पोस्टेजबीमा किराया रेल [मदरास]

१८१॥)॥

९२≡)॥। जैन धर्म अजली है उर्दू लेखक बा. दीवानचन्दजी ट्रैक्ट न० ६३ प्रति २०००
१४) लिखाई
४३) कागज़
७) बाइंडिंग
२८) छपाई
≡)॥। मजदूरी

९२≡)॥।

२५।-) ख्यालात लतीफ द्वितीय संस्करण २०००आदाबे रियाजत २ हज़ार दरख्शां कुन ट्रैक्ट न०६४
४) लिखाई २ बार आदाब रियाजत

५) ला. विशम्भरनाथजी मुनीम
५) ला. बनारसीदास नहर वाले
५) ला. बाबूरामजी छत्ताशाहजी
११) ला. बाबूमलजी जौहरी
५) ला. बनारसीदासजी सूतवाले
२५) ला. मक्खनलालजी ठेकेदार
३) ला. महावीरप्रशाद पं. नै. बैंक
५) ला. मीरीमलजी सादेकार
३१) ला. महावीरप्रशादजी ठेकेदार
३१) ला. महावीरप्रशादजी एडवोकेट
३) मुनशीलालजी बिजलीवाले
५) बा. महावीरप्रशादजी परस्नल किलर्क
५) प० महावीरप्रशादजी वकीलपुरा
५) ला. रतनलालजी नईसड़क
५) ला. रतनलालजी कटड़ा हीरालाल
५) ला. रामचन्दरजी कोसीवाले
७) ला. रतनलालजी झझरिये
५) ला. रतनलालजी कागजी
५) बाबू रघुनन्दनलालजी इस्टाम्पफरोश
५) ला. राजकृष्ण कोल मर्चेंट
४) ला. रणवीरसिंह टोपी वाले
५) ला. रूपचन्द गार्गीय पानीपत

२) लिखाई ख्यालाते लतीफ
११।-) कागज व मजदूरी
८) छपाई

२५।-)

७६।) २००० मुक्ति और उसका साधन हिन्दी ट्रैक्ट नंबर ६५ लेखक ब्र० शीतलप्रसादजी
२४।।।) कागज सफेद
१३।) कागज रंगीनटाईटिल
३३।।) छपाई
४) बाइंडिंग कराई
।) मजदूरी

७६।)

४०)। ज्ञान सूर्योदय हिंदी लेखक बाबू सूरजभान वकील ट्रैक्ट न. ६६
३६।।।) कागज
५) बाइंडिंग
६।।।) कागज टाईटिल
२।।) छपाई टाईटिल
।≈) मजदूरी
५१।) छपाई पुस्तक

१०२।।)। असल लागत
६२।।) देने रहे आगामी वर्ष के हिसाब में लिखे जावेंगे

५) ला. लक्ष्मनदास मैदा वाले
३) डाक्टर लक्ष्मीचन्दजी
५) ला. सोहनलाल पहाड़ीवाले
११) ला. सिद्धोमलजी कागजी
३१) ला. सरदारीमलजी गोटेवाले
३१) ला. सरदारीमलजी कागजी
५) ला. स्यामीमल प्यारेलाल गंदानाला
५) बाबू शम्भूदयालजी
२) बाबू समेरचन्द जगाधरी वाले
५) ला. हरिश्चन्द्रजी सुपरि०
५) ला. हजारीलालजी कागजी
४) मुनशी ज्ञानचन्दजी
५) ला. ज्ञानचन्दजी गली पहाड़

---

६२९)

२६१॥) आमदनी दान

३०) रायबहादुर लाला नांदमल गवर्नमेंट पैंशनर अजमेर

११२) खुशी आदि में

५) ला० जोती प्रशाद महावीर प्रशाद डाक वालों ने (भाई के बवाह में)

५) ला० पारसदासजी बिजली वालोंने (पुत्री के विवाह में)

२५≡) रिपोर्ट जयन्ती अंग्रेजी सन १९२७ में औरलगे हिसाब पृष्ठ ८१ में देखें

८१।=) रिपोर्ट मंडल हिन्दी ट्रैक्ट नम्बर ५० [हिसाब पृष्ठ ८४ में दिया]

७॥) ख्यालात लतीफ ट्रैक्ट न. ५१ हिसाब पृष्ठ ८४ में दिया

६६॥≡) जैनधर्म उर्दू ट्रैक्ट नम्बर५२ [हिसाब पृष्ठ ८४ में दिया]

५) लार्डपार्श्व अंग्रेजी ट्रैक्ट नं.५३ में लगते रहे [हिसाब पृष्ठ ८५ में देखो]

१॥) ३ स्वामी दयानंद और जैन धर्म खरीदे

१॥) मोहरट्रैक्ट कमेटी की बुलंद शहर बनवाकर भेजी

१७४≡)

१२—) लार्ड महावीर एण्ड सम अदर्सटीचर ट्रैक्ट नं० ४८ वाले आये [हिसाब पृष्ठ ८० में देखो]

१३६—)

५) ला. अमीरसिंहजी ओवसी-
अर ने (पुत्र के विवाह में)
४) बाबू मुरारी लाल जी जैन
वकील मुरादाबाद ने
(रामचन्द्र के विवाह में)
५) ला. वलवंतराय जैन कालका
५) ला० रूपचन्द जी गार्गीय
अग्रवाल जैन पानीपत ने
(पुत्र जन्म की खुशि में)
२) ला. अनूपसिंह जैन रईस
पोईस वाले ने
(पुत्र विवाह में)
१५) ला. अजितप्रसाद ओवर-
सीअर बुलन्दशहर वालों
ने (पुत्र के विवाह में)
११) ला० जट्टामल मुसद्दीलाल
वकीलपुरा देहली ने (पुत्री
के विवाह में)
७) ला. नरायणदास राधेश्याम
ने (विवाह समय)
२) ला. दलेलसिंहजी सुरानाने
(पुत्र विवाह में)
५) ला. चुन्नीलाल सन्तलाल
आगोन ने (पुत्र विवाह में)
५) ला. जोतीप्रशाद आटे वाले
ने (पुत्र के विद्या आरम्भ में)

:८२।) खर्च मुत्तफर्रिक

२९॥) वेतन
७) रामगोपाल चपरासी
२२॥) शिवदत्तजी शर्मा
३-)॥ स्वागत खर्च भारतीय सा-
हित्य विशारदा श्रीसुभद्रा देवी
(जरमनमहिला) तार हार फूलादि
७॥) स्वागत खर्च डाक्टर हैनरी
ए. एटकिंसनमहामंत्री यूनीवर-
सल रिलीजस पीस कान्फ्रेन्स
[अमेरीका] हार फूल व तसवीरें
सिद्धक्षेत्रोंकीकिराया तांगा आदि
१२॥=) पंडित फूलचंदजी शास्त्रीको
गुरुकुल कांगड़ी के सर्व धर्म
सम्मेलनमें भेजा [किराया रेल
आदि]
५) ब्र० कुँवर दिग्विजयसिंहजी को
बुलाया (वास्ते आर्यसमाज सार्व
धर्म सम्मेलन)
॥।) तार
४।) मार्ग व्यय
४) ५ तसवीरें भगत गंगाराम से
खरीद कर महर्षि शिवव्रतलाल
जी को दी
४।=) जड़वाई तसवीरें
७॥=)॥। टाइप कराई महावीर ज-
यन्ती यूनीवरसिटी व दीगरकाम

५) बाबू उमरावसिंहजी मंत्री ने
(पिता के स्वास्थलाभ
होने में)
२०) बाबू अजित प्रसाद जैन
एम.ए.एल.एल.बी. जज
हाई कोर्ट बीकानेर
१०) ला. उग्रसैन सरदारसिंह
रईस हांसी वालोंने (गुला
बसिंहके स्वर्गवास होनेमें)

१११)

१०) मंडल की अपील भेजने पर
बाहर से प्राप्त
१०) मूलचन्दजी जैन मंत्री
दिगम्बर जैनसभा बीना
(सागर)
१) पूनमचन्द हरसोरी लाल
गहरी पुरा न्यूरोड बरोडा
(फतहपुर)
५) दिगम्बरजैन श्रीसमाजब्यारा
१) नथूलाल मंत्री दिगम्बर
जैन पंच रिखबदेवजी
५) मोतिलशाह चिंतामण शाह
मलकापुर [बराड]
५) दिगम्बरजैन पंचान बदनेरा
२०) दिगम्बरजैनपंचान गोदनक

५।≡) महावीर रोड सम्बन्धी खर्च
३।।≈) तार एक जयपुर ज-
बाबी सेठ चमनलालजी पारख
को
१।।−) टाइमटेबिल, प्लेटफार्म,
टाईप कागज, टाईप कराई
२।।≡) मरम्मतकराई स्थानआफिस
[सफेदी व मिस्तरी को]
२।।−)।। होल्डर व डोरी बिजली
६।।।−)।। किराया तांगा व ट्रेम
।।−) प्लेट फार्म
।।) धुलाई चांदनी
१।।≈) चटाई
१।।।)।। कपड़ा नकशे का वास्ते बनाने
नकशा मन्दिरों का
२५।) पुस्तकें व किराया खर्च
१) चरचा शतक प्रयाग महिला
विद्यापीठ को भेजा
८।।।) उत्तरपुराण हरिसत्यभट्टा
चार्य जी को कलकत्ते
भेजा
१२।) सर आसुतोष मैमोरियल
नं० १, २ खरीदा [बाबू
कामताप्रशादजीके पत्र पर]
≈) किराया दयानन्द तिमिर
भास्कर का महावीर पुस्त
कालय को

४) ला० कन्हैया लाल जैन मंत्री जैन सभा जूरेरा
५) जयन्ती बाई धर्म पत्नि दानवीर बाबू प्रभूलाल जी रामपुर स्टेट
१०) ला०गुरुचरनदासजी पी० डब्लू०डी० करना प्रयाग जिला पुरी
२) ला० जङ्गीमल जैन रईस कोहनदार पोस्ट मेजा जिला प्रयाग
५) दिगम्बरजैन पचांयत अम्बाला छावनी
५) दिगम्बरजैन पचं बड़वानी
१२) ला० रूड़ामल मेघराजजी सुसारी होल्कर स्टेट

---

९०)

३४॥) देहली में भादों शुदी १४ को रसीदों द्वारा
१) पडिंत सागरचन्दजी
१) ला० मुनशीलाल पद्मावती-पुरवाल
१) ला०मोतीरामजीअजमेरवाले
१) ला० महावीरप्रशादजी चार्टड बैंक वाले
१) ला० छज्जूमलजी घीवाले

१॥) डिवनीटि इन जैनेजम व कम्पैरेटिव स्टेडी नामक २ पुस्तकें अमेरिका रोवर्ट ई ह्यूम साहव को भेजीं
१॥=) पुस्तकें शास्त्रार्थ मेरठ के लिये भिजवाई

२५।)

१।) बालटी १
२≡) नकशे बनवाई ठीक कराई फीता छल्ले आदि के भगत जी दरजी को
१९१॥-) पोस्टेज खर्च
१५) मारफत भोलानाथ जी मुख्तार बुलन्दशहर
१७६॥-) १२ माह का

१९१॥-)

६५॥≡)। स्टेशनरी, छपाई खर्च आदि
५) स्टेशनरी लाला भोलानाथ मुख्तार, जयन्ती उत्सव व रिपोर्ट आदिमें खर्च
३॥) एलान छपाई लिखाई व कागज़ विधवा विवाह से मंडल का कोई ताल्लुक नहीं है
२॥)। डोरा

१) ला० महावीरप्रशाद टोपी वाले
१) ला० भौंदूमलजी जौहरी
१) ला० वजीरीमल मुलम्मेसाज
१) ला० जम्बूप्रशादजी धर्मपुरा
१) ला० नत्थमल मनोहरलाल
१) ला० जोतीप्रशादजी टोपीवाले
१) ला० मूलचन्द
१) ला० बंशीलाल मीरीमल
१) ला० सन्तलाल मुसद्दीलाल जी कसेरे
१) ला० सन्तलाल हलवाई
१) ला० महबूबसिंह उलफतराय
१) ला० वजीरीमल हलवाई
१) ला० खिड्डूमलजी दरीबा
१) ला० मुकन्दलाल
१) ला० बनारसीदास बरतन वाले
१) ला० मनोहरलालजी जौहरी
१) ला० कन्हैयालाल चन्दूलाल
१) ला० बेनीप्रशाद कूंचा सेठ
१) लालचन्दजी फोटूग्राफर
१) बीबी द्रौपदीदेवी
१) बीबी रत्तीदेवी
१) धर्म पत्नि जोतीप्रशादजी किरांची वाले
॥) ला० शेरसिंह अत्तार
॥) ला० मुकन्दराय
॥) ला० प्यारेलाल पनेवाले

।=) रूलएक बुलन्दशहर भेजा
८।) रसीद ३००० छपवाई बाइंडिंग परफोरेटिंग
११।=) छपवाई व कागज हैंडबिल व्याख्यान पंडित पन्नालाल उपदेशक भा० दि० जैनमहासभा
१।) पैकिंग पेपर, टाईप पेपर [जून]
१=)॥ जौलाई माह
।=) पाकिटबुक
।) कागज पियोनबुन
॥)॥ जिल्द रजिस्टर व पियोनबुक बनवाई
१८॥) छपाई ४००० अपील व कागज
१०॥) कागज
८) छपाई
२।) खर्च अखबारों में अपील वितीर्णार्थ भेजी
१) किराया रेल बिजनौर
।=) जैनजगत अजमेर
।=) बिलटी कराई ३
।=) टाट व सुतली
=) मजदूरी प्रेस से

२।)

॥) ला० भीरीमल धर्मपुरा
॥) मूलचन्द हवेली हैदरकुली
॥) सेठ धर्मदास नियादरमल
॥) जिनेश्वरदास दरोगामल
॥) महावीरप्रशाद धर्मपुरा
॥) मांगीलाल सीताराम
॥) लालचन्द सदर बाजार
॥) सुलतानसिंह काग़ज़ी
॥) भोलानाथ रेलवेस्टेशन
॥) भगतराम मुनीम

३४॥)

२६५॥)

६५८।≈) सहायता ट्रैक्ट व बिक्री ट्रैक्ट

१६५।) सहायता ट्रैक्ट निम्न है

१००) बाबू ऋषभदासजी वकील मेरठ वालों ने अपनी बहिन चमेलीबाई की ओर से मुक्ति और उसके साधन नामक ट्रैक्ट के छपाने को

१००) रायबहादुर लाला पारसदास जैन रईस देहली ने जल्वये कामिल ट्रैक्ट को प्रकाशनार्थ

५५) लाला बिहारीलालजी अर्जी-

१) किरायारेल व डिमार्च पुस्तकें ग्वालियरसे वापिस आई

।=) टाईप काग़ज़ वास्ते सहवास कमेटी

१) स्टेशनरी [अक्तूबर]

४।=) लिखाई छपाई काग़ज़
१) २) १।=)
५०० पोस्टर अमावसके

१) स्टेशनरी [जनवरी]

=) बिलटी कराई ट्रैक्टों की अम्बाले

२≡) कार्ड १०००

=) डिमारच मेरठ कुंवर दिग्विजयसिंहजी से पुस्तकें वापिस

=) मुलतान बिलटी कराई ट्रैक्टों की

१) पैकिंग पेपर [फरवरी]

।) मनीआर्डर फीस दान का रुपया भेजा

२) कागज छपाई हैंडबिल शोक [ज्योतिषरत्न जीयालाल]

१॥) छपाई कार्ड

१॥) छपाई लिफाफे

२।) लिफाफे

१) स्टेशरी [मार्च]

-) बुहारी

)॥ मजदूरी

नवीस भिवानी वालों ने हयाते वीर, हकीकते मावूद व आदाव रियाजत के छपाने को

७५) बा० महावीरप्रशादजी एडवोकेट ने लार्ड अरिष्टनेमि की सहायतार्थ

१२॥) ला० शेरामल शुगनचन्द व उग्रसैन वैसाखीलाल से [जैन धर्म प्रवेशिका के वाकी आए]

३) ला० तुलसीराम प्यारेलाल जौहरी पटियाला

१) ला० हुक्मचन्दजी सरधना

२८॥) चौधरी वलदेवसिंहजी सर्राफ (जैनधर्म नामक ट्रैक्ट के वाकी आये)

३०५॥)

२५३=) बिक्री ट्रैक्ट निम्न प्रकार

२३॥=)। रोहतक
३३॥-) ॥ लाहौर
६३॥) ॥ अम्बाला
१३॥-)॥ अजमेर
१२।-)॥ गुजरानवाला
१६॥)॥ मुलतान
१॥-) जयन्ती पर
॥-) ब्रा० ब्र० नेमसागरजी

॥।=) तार १ मुबारिकबादी अजितप्रशादजी जज को।

६५॥=)।

---

३८२)

५६६।-)॥ श्री वर्द्धमान पब्लिक लायब्रेरी खाते व्यय

७=)। तेल मिट्टी चिमनी आदि
६=)॥ तेल
॥=) चिमनीयां वास्ते लालटैन व लम्प
।) तेल खेंचने की
)॥ दियासलाई

७=)।

३१॥)। रोशनी बिजली खर्च
५॥=) अक्तूबर
५-)। नवम्बर
२१) जनवरी
१४-)॥ २ माह के
६॥=)॥ पेशगी

३१॥)।

|||-)|| रामपुर
२≡) अलवर
३|≡) जयपुर
१|) हंसकला
१) इटावा
१||≡)|| धार स्टेट
१) व्यावर
३|=) रावलपिंडी
२=) सूरत
३||) पन्ना स्टेट
३||-)|| वम्बई
२=)|| हांसी
१-)|| देववंद
१||≡) मेरठ
३) अमरोहा
१|||) भाड़सा
|) अमृतसर
|) कलकत्ते
|-) ऊना
|) सहारनपुर
२||≡) फीरोजपुर
|-)|| ललितपुर
१||-)|| मुजफ्फरनगर
|||-)|| वावली
१|||) कसूर
||-) शिवपुरी
=)| वरसत

८१|||-)||| फिटिंग सर्विस डिपोजिट
विजली
२५) ट्रेम्वे कम्पनीको डिपाजिट
३३||-)| अक्तूबर
२९|=) सर्विस के
कम्पनी को
४=)| कुप्पी ५
२३)||| नवम्बर में
फिटिंग कराई देहली
एलक्ट्रिक हाउस को

८१|||-)|||

६६|||≡)||| फरनीचर खर्च
१२) पटरे तीन
१२|≡) थान चांदनी
१) सिलाई चांदनी
|||≡) पायदान
)||| छल्ला तालियों का
३|-) लिखाई साईनवोर्ड व
लैटरवक्स व कुंडा
११||) अलमारी ठीक कराई
शीशे लगाई आदि
[बिरखूमल]
११) अलमारी ठीक कराई
महावीरप्रशाद बिजलीवालों
७|) बढई
३) शीशे १०
||) कीलें

३≡)॥ बालापुर
२॥≡) नगीना
२) गुना
१॥=)॥ मुंजेश्वर
≡) संगरूर
॥=)। मालेरकोटला
॥।-) चिनौली
१≡)॥ चिलसी
४) बामनौली
१।=) पूना
१४॥-)॥ रुड़की
१६।-)॥ बिक्री खरीज देहली
१-) पेटी से बिक्री

२५३=)

३४८।=)

२७।=)॥ आमदनी ब्याज
पीपलबैंक ओफ नादरन इंडिया लिमिटेड देहली

४४५॥-) आमदनीश्रीवर्द्धमान पब्लिक लायब्रेरी

१२५) आमदनी फीसनिम्नप्रकार
२) लाला मूलचन्द सर्राफ देहली
२) ला० मुनशीलाल जी बिजलीवाले

५॥।) सलीपर ८ फुटा
१॥-) चिराई ५ सूत
।) मजदूरी
)॥ धरमादा
।=)॥ छपकेकुंडे
३।) ताले नग ७
३।) मेज छोटी १

६६॥≡)॥

९५॥)। बाइंडिंग खर्च
३२=)॥ जौलाई में
१५॥) अगस्त में
४।≡) नवम्बर में
१०॥-)॥ जनवरी में
३२॥-)। मार्च में

९५॥)।

१०५॥।) पुस्तकें खरीदी व किराया रेल आदि
२६≡) जौलाई में
२१॥) पुस्तकें
४।≡) किराया बाहर से भेंट
॥=) सूरत
२=) बम्बई
१।≡) आरा

२६≡)

२) बाबूलालचन्दजी देहली
२) ला० श्रीचन्दजी मुनीम देहली
२) चौधरी बलदेवसिंहजी सराफ
२) सेठ निर्भयरामजी मारवाड़ी
२) पं०जगदम्बाप्रशादजी देहली
२) ला० रणवीरसिंह टोपी वाले
४) भगत इन्द्रलालजी देहली
२) ला. जानकीदास बी. एस. सी.
२) ला. दौलतरामजी कपड़ेवाले
२) बा.वंशीलालजी स्टूडेंट बी.एस.सी
२) ला. वजीरसिंह हलवाई देहली
२) ला. डिप्टीमलजी जैन बी. ए.
२) ला. देवसैनजी पंसारी देहली
२) ला. बुलाकीदास सराफ देहली
२) बा. महावीरप्रशादजी धर्मपुरा
२) ला. मक्खनलाल जैसवाल जैन
२) ला. बनारसीदासजी नाईवाड़ा
६) ला. बाबूमलजी जौहरी देहली
१२) ला. महावीरप्रशादजी ठेकेदार
१) पं० कंचनलालजी देहली
२) ला. वजीरसिंह वकीलपुरा
२) ला. मीरीमलजी सादेकार
२) ला. दलीपसिंहजी कागजी
२) ला. रतनलालजी झझरिये देहली
३) ला. अतरचन्दजी सदर बाजार
२) ला. अजितप्रशाद कंवरसैन
२) ला. जम्बूप्रशादजी धर्मपुरा

१४॥=) अगस्त में
३) सितम्बर मास में
११-)। अक्तूबर मास में
॥-) नवम्बर मास में
३=)॥। दिसम्बर मास में
४७=) जनवरी मास में

१०५॥।)

१३८)॥ वेतन लायब्रेरीयन

१६) जून
२॥) बलवन्तसिंह ५ दिन
१३॥) शिवदत्तशर्मा २७ दिन
८) अगस्त [शिवदत्तशर्मा]
१५) सितम्बर [शिवदत्तशर्मा]
१८॥।) अक्तूबर
१८) शिवदत्तशर्मा को
॥।) १॥ दिन कैलाशचन्द
१८) नवम्बर [शिवदत्त शर्मा]
१८) दिसम्बर [शिवदत्त को]
१८) जनवरी [शिवदत्त को]
१८) फरवरी [शिवदत्त को]
८)॥ मार्च
१॥।)॥ शिवदत्त ३ दिन
६॥) बखतावरमल १३ दिन

------

१३८)॥

२) ला. प्रभुदयालजी कूचा सेठ
२) ला. जैनीलालजी वकीलपुरा
२) ला. ज्योतीप्रशादजी आटेवाले
२) ला. चम्पालालजी घीवाले
२) मास्टर चन्दूलालजी टोंग्यो हिन्दी साहित्यभूषण
२) पन्नालाल अग्रवाल जैन
२) पं. महावीरप्रशादजी वकीलपुरा
२) ला. निहालचन्दजी कम्पाउंडर
१२) ला. पन्नालाल मालिक फर्म जैनी आदर्श कूचा नटवां
२) मास्टर गिरधारीलाल दूधवाले
२) ला. सीतारामजी हेड किलर्क बुकिंग आफिस
२) ला. फतहचन्दजी धर्मपुरा
२) ला. सांवरामजी मुनीम देहली
२) ला. मुंशीलालजी टोपीवाले
१) ला. महावीरप्रशाद मु. मौलक रामजी
२) ला. सुखवीरप्रशादजी वकील
२) ला. श्यामलालजी कागजी
२) ला. उमरावसिंहजी अकाउन्टेंट
२) ला. लखमीचन्दजी वैदवाड़ा
२) ला. शिवदयाल न्यू देहली
२) ला. जिनेश्वरदासजी मुनीम

---

१२०)

४३)॥ अखबार

।=) मई
९=)॥ जून
४॥=) विशालभारत
४॥)॥ हिन्दुस्तानटाईम्स आदि
४≡)। जौलाई हिन्दुस्तानटाईम्स हिन्दुसंसार तेज अर्जुन
१०॥≡)॥ अगस्त
६॥) मोडरनरिव्यू
४।≡)॥ लोकल अखबार
४=)। सितम्बर
३।≡)। लोकलपत्र
॥≡) टाइमटेबिल
८॥≡)॥ अक्तूबर
६) एक वर्ष अर्जुन अखबार
१॥-)॥ लोकलतेजहिन्दुसंसार
१) सुधा का विशेषांक
=) अखबार
२-) नवम्बर टाइमटेबिल -)
२) माधुरी विशेषांक
।) दिसम्बर अखबार
≡) जनवरी अंग्रेजी अखबार
१॥-) फरवरी
॥) मनोरमा
१-) मोडरनरिव्यू का पर्चा [जो जरमनी चला गया था वह मंगाया]

३२८॥) आमदनी दान

४॥=) ला. बाबूरामजी छत्ता शाहजी [विशाल भारत पत्रके लिये]

२००) ला. सुलतानसिंह मालिक फर्म नैनसुखदास विश्वम्भरनाथ कागजी चावड़ी बाजार देहली ने (बिजली आदि के लिये),

४२) ला. सिद्धोमल एंड संस कागजी चावड़ी बाजार देहली [सहायता पुस्तकें आदि को]

२५) बीबी रत्तीदेवी धर्मपत्नी स्वर्गीय ला. रिक्खूमलजी कसेरे चावड़ी बाजार देहली (अलमारीकेवास्ते)

२३॥=) जैन लायब्रेरी की जो रकम ला. जौहरीमल सर्राफ के पास थी उनसे प्राप्त

१५) ला. मुसद्दीलाल रतनलाल नई सड़क देहली ने (सहायता पुस्तकों के लिये)

३२०॥)

-) कार्ड बेचा

४४५॥-)

३१६१॥=)॥

॥=) मार्च

॥) मनोरमा

-) भारत साप्ताहिक

-) टाइमटेबिल

४३)॥

१६=) स्टेशनरी व छपाई कागज

४=) जून

१॥=) पुस्तकालय के उद्घाटन का हैंडबिल छपाईवकागज

२॥) छपाई व कागज प्रवेशपत्र

९।=) अगस्त

।) स्टाम्पपैड

२) मोहर बनवाई

।-) अर्द्धी वास्ते हस्ताक्षर

४-) ७ रजिस्टर २ दस्ते के

।) १ रजिस्टर १ दस्ते का

१) छहफाईल अखबार रखनेके

।) २ दर्जन फाईल के फीते

॥) औजार छेक करने का

=) रोशनाई पैड की

॥-) चाकू

९।=)

५॥=) सितम्बर

२) छपाई रसीद

२॥) छपाई नियमावली

१=) कार्ड २५० छपाई

७=)॥। खरीज खर्च
।) मोरी साफ़ कराई
१)॥ गाढ़ा
=) मटका
१॥) धुलाई चांदनी
२) पानी भरवाई
१॥) इनामधरमसिंह घनश्यामको
॥।)। मजदूरीकिताबें व अलमारी

७=)॥।

५९६।-)॥।

२६३९-)॥।

५२२॥-)॥ श्रीरोकड़ा बाकी
७१)। कोषाध्यक्ष के पास
४६९।-)॥। पीपलबैंक में जमा

५४०॥=)

१८)॥ अमानत देना
११॥=) घूमीमल धरमदास
३।=)॥ रा० नांदमल अजमेर

१८)॥

५२२॥-)॥

३१६१॥≡)।

नोट—

प्रेस की असावधानी से निम्न भूलें रहगई हैं

पृ० ९४ की १९ वीं लाइन मेला० उदमीरामजी घाटे वालों की रकम २॥≡) है २॥=) नहीं

पृ० ९६ की १२ वीं लाइन में टी० हडसन सी० एस० एम० एस० लीडस (इङ्गलैंड) की रकम ३।-) है ३) नहीं

पृष्ठ १०२ की १७ वीं लाइन में ला. रतनलालजी नईसड़क वालोंकी रकम ९) है ५) नहीं

पृष्ठ १०२ में व्ययकी २१ वीं लाइन में मजदूरी की रकम ।)। है ।=) नहीं

نور آنکھوں میں تو دل میں طاقتوں کا ہے ظہور
آپکی توصیف کا ہر لفظ پُر انوار ہے
رنگِ معنی ہے نمایاں ہو گیا راز صفا

آپکی خاک قدم نسخہ بنا اکسیر کا
اور عالم ہو گیا ہے خوب بے تقریر کا
سجدہ گاہِ خلق آئینہ بنا تصویر کا

ہر طرف ہے سلے مدرن گلزار جنت کا سماں
کیا مسرت خیز ہے جشن ولادت بیر کا

(۰ ۞ ۰)

جین مترمنڈل کے مطبوعہ ٹریکٹ

(۱) جین دہرم - از مہرشی سیا ورت لعل صاحب - قیمت ۴/
(۲) جین دہرم ازلی ہے - از لالہ دیوان چند صاحب قیمت ۲/
(۳) سحر کاذب - از لالہ بھولا ناتھ صاحب درخشاں - بلندشہری قیمت ۱/
(۴) جلوہ کامل - ” ” ۳/
(۵) گیان سورج اودے حصہ دوم - از بابو سورج بھان جی وکیل ” ۱/
(۶) جین کرم فلاسفی - بابو رکھب داس جی - ” ۱/
(۷) حقیقت دنیا - از درخشاں صاحب - ” ۱/
(۸) حقیقت معبود - ” ” ۰/
(۹) اہنسا دہرم پر بزدلی کا الزام - از بابو شب لال ” ۰/
(۱۰) بھگوان مہاویر اور اُن کا وعظ -
از بابو شب لعل صاحب ” ۰/

آگیا کیا دن وہی جسکے تھے ہم سب منتظر — جسکی آمد کے لئے خوش ہو رہا ہے ہر بشر

ہے کرشمہ سب جہاں میں یہ اُسی اک ویر کا
کیا مسرت خیز ہے جشن ولادت ویر کا

گیان کی برشا ہوئی تھی آپ جبکے دن یہاں — گو ہیں بھارت کے کھلا تھا وا کہ شیر جواں
غلغلہ کچھ مچ گیا تھا از زمیں تا آسماں — الغرض خوش ہو گیا آپدیش سے سارا جہاں

ہو گیا دل خوش زمانے میں ہر اک دلگیر کا
کیا مسرت خیز ہے جشن ولادت ویر کا

آئے تھے دنیا میں وہ کلفت مٹانے کے لئے — اور طریقہ رستگاری کا بتانے کے لئے
جیو رکھشا گیان ہم سب کو جتانے کے لئے — کرم کے بندھن سے جیووں کو چھڑانے کیلئے

کام دیتا تھا ہر اک آپدیش گویا تیر کا
کیا مسرت خیز ہے جشن ولادت ویر کا

جو زباں سے لفظ نکلا امن کا پیغام تھا — رکھشا کرنا جیو کی بس یہ ہی اُنکا کام تھا
رات دن اس فکر میں رہتا وہ بے آرام تھا — دکھ نہ پائے جیو کوئی غم یہ صبح و شام تھا

کیا بیاں ہو سکے آپکی شان عالمگیر کا
کیا مسرت خیز ہے جشن ولادت ویر کا

الغرض وہ ہند میں اک مہربان پیدا ہوا — ایک عالم جسکی سچائی کا پھر شیدا ہوا
گمرہوں کیواسطے اک رہنما پیدا ہوا — جو زمانے کے بزرگوں سے بہت اچھا ہوا

ہے خلاصہ بس یہی عاجز میری تقریر کا
کیا مسرت خیز ہے جشن ولادت ویر کا

ہر طرف عشرت فزا جلسوں سے ہے زینت فزوں
منظر دنیا نہیں عالم ہے اک تصویر کا

ہو گیا وہ رو زباں قبضہ دلوں پر کر لیا
نام اقدس ہیں نہاں وہ جوہر بے تیغ کا

لفظ و معنی سے پرے تقدیس دیکھی آپ کی
ناطقہ ہے بند اب تقریر کا تحریر کا

سینے نگاہوں کے لئے ہر سمت جادو اک نیا
نور ہے چھپا ہوا وہ آپ کی تنویر کا

مٹ گئے جنگ و جدل سب آپ کے اپدیش سے
نام الفت ہو گیا ہے قبضہ شمشیر کا

ہے ترقی انس شیریں کی وہ انسانوں میں آج
ہر طرف عالم نظر آتا ہے جوئے شیر کا

ترک دنیا ترک عقبیٰ سے ہو آزادی نصیب
وصف اک شہ کا جہاں میں ہے یہی اک پیر کا

شاد - لالہ لکھمی پرشاد صاحب - رامپور اسٹیٹ - یوپی

دل شگفتہ ہے خوشی سے ہر جوان و پیر کا
کیا مسرت خیز ہے جشن ولادت پیر کا

اسقدر جلوہ فگن ہے حسن سوامی جی کا
ذرہ ذرہ میں ہے عالم مہر کی تنویر کا

جسکو درشن ہو گئے اس آخری اوتار کے
فرط حیرت سے گماں اس پر ہوا تصویر کا

دھوم دھام اسکی ولادت کی جہاں میں آج تک
با ہوش آرام جاں ہے جوہر اک تکبیر کا

ڈیر سوامی کا زمانہ میں ہے فیض عام یہ
ہے زبانوں پر فقط اب نام تیغ و تیر کا

دھن میں لوگ پکارتے ہیں جو دیا ہو [illegible]
پوچھنا کیا اسکی قدر و عزت و توقیر کا

شاد واہ سوامی کا کیا پرچار جب سے خلق میں
توڑنا آساں ہے اسکا خوف کی زنجیر کا

عاجز - بابو جینر بہاری لال صاحب کمپونڈر ڈاکٹر [illegible] - بہرائچ

کونسا غنچہ کھلا ہے کیا صبا لائی خبر
شاد ہے [illegible]

اس طرح سے جب بہتر سال گزرے آپکے ۔ آپ نے رستہ لیا بیکنٹھ کی جاگیر کا
جب ہمارے سامنے موجود ہے ایسی مثال ۔ کیوں نہ ہم پیرو ہوں اُس انعام گر اُس ویر کا

اہلِ عالم سے یہی پرکاش کی ہے التجا
دھیان کچھ ہمکو بھی ہو پرلوک کی تدبیر کا

درخشاں ۔ ویر قوم لالہ کھولا ناتھ صاحب بلند شہری

طالعِ قسمت نہ ہو کیوں آشنا ہے بیر کا ۔ ہے سخن مشہور "یک در گیر محکم گیر" کا
دید اگر حاصل ہوئی اسکی یہ ہاں تصویر کا ۔ آنکھ کے رستے گذر ہو جائے دل میں بیر کا
کیا کہوں کیا سحر چھایا بیر کی تقریر کا ۔ فقرہ فقرہ میں اثر تھا آیتِ تسخیر کا
لختِ دل سدھارتھ کا اور ترشلا کا نورِ عین ۔ بن گیا مرجع ضمیرِ ہر جوان و پیر کا
فیض پابوسی سے اُسکی آجتک موجود ہے ۔ خاکِ کنڈل پور کے ذروں میں اثر اکسیر کا
تھا ہمہ دان و ہمہ بیں رہنمائے ملک و دیں ۔ راز اُس نے وا کیا تدبیر اور تقدیر کا
قم باذنی کو عبث سمجھے تھے اعجازِ مسیح ۔ تھا وہ اک شعبہ بیانِ بیر کی تاثیر کا
ہوم ہوتے تھے یہاں یگیوں میں زندہ جانور ۔ "اوم سواہا" ہم نوا تھا نعرۂ تکبیر کا
رحم کا چشمہ تھا وہ سرچشمۂ مہر و کرم ۔ جس نے ناقوس آ کے پھونکا حبِ عالمگیر کا
رہنمائی بیر نے کی منزلِ مقصود کی ۔ ہو گیا تھا دیں میں جب شاملِ عمل تزویر کا

اے درخشاں ہر طرف سے آ رہی ہے یہ صدا
"کیا مسرت خیز ہے جشنِ ولادت بیر کا"

شیدا ۔ بابو چندی پرشاد صاحب دہلوی

شادماں آیا نظر رخ ہر جوان و پیر کا ۔ کیا مسرت خیز ہے جشنِ ولادت بیر کا

مشاعرہ ویر جینتی سنہ ۱۹۲۹

آسمان - محمد حسن صاحب احمدی اسسٹنٹ سکرٹری انجمن احمدیہ دہلی

دل کھلا جاتا ہے سب کا کیا جواں کیا پیر کا
کیا محبت ریز ہے اپدیش پیارے ویر کا
جبکہ بھارت دیش تھا ظلموں کے پھندوں کا اسیر
رحم اول، رحم آخر جین مت تو رحم ہے
پاپ سے نفرت ہو پاپی سے نہ ہو کچھ دشمنی
ہاں لگیگا تیغ براں سے بھی بڑھکر تیرا
ہائے قاتل کسکو مارا ہے ذرا تو غور کر
ہیں بھگت احمد کا ہوں سنتے ہو بھارت باسیو
سارے ہادی ویر ہوں یا کرشن جی ہوں یا رام ہوں

کیا مسرت خیز ہے جشن ولادت ویر کا
رحم سے قبضہ چکا دو تیر کا شمشیر کا
فلسفہ ہے کیا بتایا رحم عالمگیر کا
اس کا مقصد خاتمہ ہو ظلم کا تعزیر کا
رحم سے ہو جائیگا وہ ہدف تقصیر کا
وار دیکھیگا کبھی جب آہ کی تاثیر کا
وہ بھی اک حلقہ تھا تیری ہی طرح زنجیر کا
اسکی یہ تعلیم ہے پہلو نہ لو تحقیر کا
ہو ثناخواں تو بھی انکی عظمت و توقیر کا

ہے دعا آسماں کی ہندو مسلماں ایک ہوں
درد ہو دل میں ہمارے نالہ دلگیر کا

مشاعرہ

مصرع طرح

کیا مسرت خیز ہے جشنِ ولادت ویر کا

بموقعہ

ویر جینتی سنہ ۱۹۲۹ء

شعرائے شیریں زباں سحر و بیان نے طرح مشتہرہ مندرجہ بالا پر
جو شعری جواہر ریزے گہر افشانیاں کی ہیں اُن کو ناظرین کی انبساط
دلی کے لیے بترتیب حروف تہجی درج کیا جاتا ہے

مطبوعہ دلی پرنٹنگ ورکس دہلی

हमारे कार्यों के बारे में कुछ सम्मतियां

ला० नानकसिंह संपादक जैन प्रचारक सरसावा—

मुझे मंडल और उसके कार्यों से दिली प्रेम है। मैं इस संस्था को जैन समाज के वास्ते एक निहायत मुफीद और कार आमद ख्याल करता हूं और मेरी दिली ख्वाहिश है कि मैं मंडल के योग्य सेवा करसकूं मंडल की दिन दुगनी तरक्की हो यही मेरी भावना है।

ब्र० कुंवर दिग्विजयसिंह जी—

देहली में जैन मित्रमंडल एक जीती जागती संस्था है और वह राजधानी में ही नहीं बल्कि भारतवर्ष और विदेश में जैनधर्म प्रचार का कार्य करती है, जहां कहीं धर्मप्रभावना का कोई अवसर उसे मिलता है उसमें वह अपनी शक्ति अनुसार बराबर प्रयत्न करती रहती है।

सिंघई मास्टर मोतीलाल जैन जयपुर—

सचमुच आपका कार्य प्रशंसनीय है।

ला० मदनलाल जैन मंत्री नवयुवक मंडल सभा रिवाड़ी—

जैन मित्र मंडल ने जो कुछ कार्य किया है वह हर एक को प्रशंसनीय है। आपको जितनी धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है।

श्री डाह्याभाई शाह गिरीडी—

मंडल के कार्य की जितनी प्रशंसा कीजाय थोड़ी है। ऐसी संस्थाओं की आजकल विशेष आवश्यकता है।

निम्न महानुभावों से इस पुस्तक के

सहायता प्राप्त हुई उनको शतशः धन्यवाद ।

१०) राय बहादुर बा० नांदमलजी जैन अजमेर

५०) राय बहादुर साहू जगमन्दरदासजी जैन

२५) श्री० गुलाबसिंह बजीरीमलजी जैन सादेकार

कल्याण प्रेस, ब्रांच मारवाड़ जंक्शन में छपा ।